राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, रविवार,20 अप्रैल 2025
वर्ष 06, अंक 201, पृष्ट 12, मूल्य: 03 रुपया
www.swatantraprabhat.com

गाजियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

सुप्रीम कोर्ट के दो फैसले से सरकार बौखलाई। उपराष्ट्रपति सारी मर्यादाएं तोड़ कर टिप्पणी कर रहे है...08

पीएम मोदी के सऊदी अरब दौरे में क्या हज कोटा, रणनीतिक साझेदार, होंगे मुख्य बिंदु......12

सरकारी बोर्डिंग स्कूल में छात्राओं को दी जाती प्रेग्नेंसी किट; चेक होता सेनेटरी नैपकिन

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। मिर्जापुर के एक सरकारी आवासीय विद्यालय में छात्राओं के साथ हो रहे अमानवीय बर्ताव को लेकर शर्मसार करने वाले खुलासे हुए हैं। जांच कमेटी के सामने खुद स्कूल की छात्राओं ने अपना दर्द बयां किया है. छात्राओं ने जांच अधिकारियों को बताया है कि शिक्षिकाएं हिटलर जैसे व्यवहार करती हैं। बड़े बाबू सिगरेट पीकर धुंआ छात्राओं के ऊपर उड़ाता है. विद्यालय की कुछ छात्राएं प्रेग्नेंट भी हो चुकी है, स्कूल में प्रेगनेंसी किट भी वितरण किया गया है। छात्राओं का सेनेटरी पैड चेक किया जाता है. पूरे घटनाक्रम की जांच के बाद जिला प्रोबेशन अधिकारी ने छात्राओं के चौंकाने वाले आरोपों की रिपोर्ट शासन को भेज दी है। मामला मिर्जापुर जिले की मड़ियान तहसील के जयप्रकाश नारायण सर्वोदय आश्रम पद्धति बालिका स्कूल से जुड़ा है। दरअसल, उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य नीलम प्रभात ने हाल ही में विद्यालय का निरीक्षण किया था. जिसमें अनियमिताओं अव्यवस्थाओं की जांच के लिए जिला अधिकारी प्रियंका निरंजन को निर्देश दिया था. जिलाधिकारी ने 6 फरवरी को तीन सदस्यीय टीम गठन कर जांच करने का आदेश दिया था. इसके बाद एसडीएम मड़िहान, जिला प्रोबेशन अधिकारी और बीडीओ जमालपुर ने अपनी जांच रिपोर्ट सौंपी. उस रिपोर्ट में ये खुलासे हुए हैं।

स्कूल में जाकर कमेटी ने छात्राओं से बात की तो उन्होंने स्कूल में अव्यवस्थाओं और उनके साथ होने वाले शोषण की पोल खोल दी।

छात्राओं ने कमेटी को बताया कि मेन्यू के अनुसार नाश्ता, खाना नहीं दिया जाता है. सप्ताह में एक बार फल तो दिया जाता है, दूध कभी मिलता ही नहीं. शिक्षिकाएं हिटलर के तरह व्यवहार करती हैं। कुछ भी कहने पर मारती-पीटती, डांटती हैं। विद्यालय के बड़े बाबू का लड़कियों के प्रति नीयत ठीक नहीं रहती है। वह बाहर से पान मसाला, गुटखा खाकर आता है. सिगरेट के धुएं लड़कियों के ऊपर उड़ाता है। छात्राओं को समय से सामग्री वितरण नहीं करता है। साल भर में एक बार टूथब्रश और स्लीपर दिया जाता है. इतना ही नहीं, तौलिया 2 साल से नहीं बांटा गया. छात्राएं फटी ड्रेस पहनने को मजबूर हैं। साथ ही छात्राओं ने जांच कमेटी को बताया कि कुछ स्टूडेंट प्रेग्नेंट भी हो चुकी हैं. स्कूल में प्रेगनेंसी किट भी वितरण किया गया है. छात्राओं का सेनेटरी पैड चेक किया जाता है।

विद्यालय की टीचर एसी वाले स्मार्ट क्लास में बैठकर ड्रिंक करती हैं और सोती हैं. क्लास अटेंड न करने पर जब छात्राएं उन्हें बुलाने जाती हैं तो डांटकर भगा दिया जाता है. एक शिक्षिका तो गाली देकर बात करती हैं. विद्यालय में विज्ञान और कम्प्यूटर की टीचर नहीं हैं. छात्राओं को पढ़ने के लिए पूरी किताबें नहीं दी जाती. जो किताबें मिलती हैं, उसके पन्ने फटे होते हैं. छात्राओं को विषय चयन का अवसर नहीं दिया जाता है. साइंस व आर्ट की छात्राओं में काफी भेद-भाव किया जाता है. मर्जी के विरुद्ध विषय चयन करने के लिए विवश किया जाता है. कॉपी, पेन, स्पाइरल व आवश्यकतानुसार सामग्री नहीं दी जाती। पैसों के बल पर छात्राओं को प्रैक्टिकल में नंबर दिए जाते हैं।

॥

छात्राओं ने बताया कि आवश्यकतानुसार ड्रेस व जूते नहीं दिए जाते. एक्सपायर डेट का साबुन मिलता है. इसके साथ ही न तो किसी प्रकार का खेल-कूद कराया जाता है न ही स्पोर्ट्स का सामान दिया जाता है. विद्यालय में अभिभावक के बैठने और टायलेट की व्यवस्था नहीं है. उन्हें अपने अभिभावकों से मिलने से रोका जाता है।

जिला प्रोबेशन अधिकारी शक्ति त्रिपाठी ने बताया कि उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य नीलम प्रभात ने आश्रम पद्धति विद्यालय का निरीक्षण किया था. शिकायत और कमियां मिलने पर उन्होंने जिला अधिकारी को जांच का निर्देश दिया था. इसके बाद जिला अधिकारी ने तीन सदस्यीय टीम का गठन कर जांच कराया है, इसमें यह खुलासा हुआ है. जांच कमेटी के सामने छात्राओं ने अपनी पहचान को गुप्त रखने की बात कहते हुए बयान दिया है. जांच रिपोर्ट से यह पता चलता है कि विद्यालय में दो गुट है. इन दोनों गुटों के बीच हो रहे टकराव के कारण विद्यालय की व्यवस्था बिगड़ी है. अब मड़िहान उप जिला अधिकारी को स्कूल की व्यवस्था में अमूल चूल बदलाव व कठोर नियंत्रण के लिए कहा गया है।

समाज कल्याण विभाग के कल्याण सारथी पोर्टल के अनुसार, वर्तमान में उत्तर प्रदेश में 58 जिलों में 102 जय प्रकाश नारायण सर्वोदय आश्रम पद्धति विद्यालय हैं. जिनमें से वर्तमान में 29 स्कूल केवल लड़कियों के लिए हैं। इनमें से 45 सीबीएसई और 49 माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध हैं. लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग स्कूल हैं. इन स्कूलों में गरीब बच्चों को निन्शुल्क उच्च शिक्षा के साथ रहने की व्यवस्था दी जाती है. सभी विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की व्यवस्था है।

अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति,विमुक्त जाति के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के निर्धन एवं प्रतिभावान छात्रों को उत्कृष्ठ आवासीय शिक्षा निःशुल्क प्रदान करने के उद्देश्य से समाज कल्याण विभाग द्वारा राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन स्कूलों में शिक्षा के साथ-साथ निःशुल्क छात्रावास, पाठ्य पुस्तकें, यूनीफार्म एवं खेलकूद आदि की व्यवस्था राज्य सरकार करती है। इन विद्यालयों में 60 प्रतिशत अनुसूचित जाति/जनजाति, 25 पिछड़ा वर्ग और 15 प्रतिशत सामान्य वर्ग के छात्रों को प्रवेश दिए जाने की व्यवस्था है।

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्ती चेलमेश्वर ने पूछा, अदालतें राष्ट्रपति को निर्देश क्यों नहीं दे सकतीं?

उन्होंने कहा कि यदि न्यायालय संसद द्वारा बनाए गए कानून को असंवैधानिक घोषित कर सकते हैं, तो वे किसी सार्वजनिक पदधारी को सार्वजनिक कार्य करने के निर्देश भी दे सकते हैं।

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्ती चेलमेश्वर ने शनिवार (19 अप्रैल, 2025) को चेन्नई में कहा जब सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों को संसद या राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित कानूनों को असंवैधानिक घोषित करने का अधिकार है, तो उनके पास राष्ट्रपति और राज्यपालों जैसे संवैधानिक प्राधिकारियों को सार्वजनिक कार्य करने के लिए निर्देश जारी करने की शक्ति भी होगी। वह राकेश लॉ फाउंडेशन (आरएलएफ) द्वारा रोजा मुथैया रिसर्च लाइब्रेरी (आरएमआरएल) के सहयोग से वरिष्ठ अधिवक्ता और डीएमके के राज्यसभा सदस्य एनआर एलंगो के पुत्र राकेश रंगनाथन की 24वीं जयंती के अवसर पर आयोजित 'भारत के संविधान की 75 वर्षीय यात्रा' विषय पर व्याख्यान देने के बाद मद्रास उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश सीटी सेल्वम द्वारा पूछे गए एक सवाल का जवाब दे रहे थे।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ द्वारा हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के खिलाफ की गई तीखी प्रतिक्रिया का जिक्र करते हुए, जिसमें न्यायालय ने राष्ट्रपति को राज्यपालों द्वारा भेजे गए विधेयकों पर कार्रवाई करने के लिए तीन महीने का समय दिया है, उन्होंने कहाः ÷यदि आप और मैं, न्यायाधीश के रूप में, संसद द्वारा बनाए गए कानून को असंवैधानिक घोषित कर सकते हैं, तो यह मानना कि उनके पास किसी सार्वजनिक पदधारी को सार्वजनिक कार्य करने के लिए निर्देश देने की कोई शक्ति नहीं है, मेरे विचार से, संवैधानिक रूप से संदिग्ध होगा, क्योंकि मैं उस सिद्धांत को स्वीकार नहीं करूंगा।"

इससे पहले अपने व्याख्यान में श्री चेलमेश्वर ने कहा कि देश में संविधान लागू होने के 75 साल पूरे होने को जश्न मनाने के बजाय आत्मनिरीक्षण के अवसर के रूप में लिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पिछले 75 सालों में संविधान में किए गए 100 से ज़्यादा संशोधन, चुनाव जीतने के लिए उम्मीदवारों द्वारा खर्च की जाने वाली ÷बेहद ज़्यादा धनराशि÷ और न्यायपालिका के लिए अपर्याप्त बजटीय आवंटन के कारण बढ़ते बकाए सभी चिंता के विषय हैं। इस कार्यक्रम में मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति जी.आर. स्वामीनाथन, कस्तूरी एंड संस के निदेशक

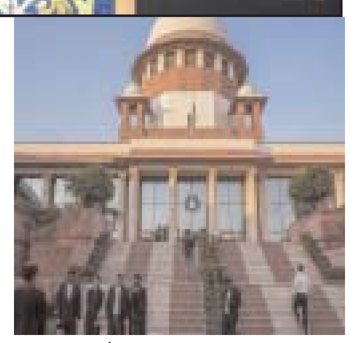

एन. रवि और तमिलनाडु के हिंदू धार्मिक एवं धर्मार्थ बंदोबस्ती मंत्री पी.के. सेकरबाबू ने भाग लिया। मद्रास उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश जी.एम. अकबर अली ने इस संवाद का संचालन किया। आरएमआरएल के निदेशक जी. सुंदर, आरएलएफ की उपाध्यक्ष रागवी एलंगो, कोषाध्यक्ष स्टालिन अभिमन्यु और सहायक कोषाध्यक्ष एम. रंजीत ने भी अपने विचार रखे।

संक्षिप्त ख़बरें

एडीएम के नेतृत्व में प्राइवेट आढ़तियों के यहां छापेमारी,

5000 कुंटल गेहूं सरकारी क्रय केंद्रों पर भिजवाया गया

2700 कुंटल गेहूं पर 2.75 लाख जुर्माना ठोंका गया

शाहजहांपुर जिले के निगोही कस्बे में अपर जिलाधिकारी विश्/राश अरविंद कुमार के साथ, जिला खाद्य विपणन अधिकारी राकेश मोहन पांडेय, मंडी सचिव और जिला प्रबंधक के साथ संयुक्त रूप से निगोही क्षेत्र में 6 आढ़त व्यापारियों जिनमें रामकुमार गुप्ता, मिश्रा ट्रेडिंग कंपनी, साई राम ट्रेडिंग कंपनी, गणेश ट्रेडिंग, मुन्ना सिंह एंड कम्पनी, देव ट्रेड कंपनी आदि से लगभग 5000 कुंटल गेहूं सरकारी खरीद PCF, RFC,UPSS के सरकारी क्रय केंद्रों पर भिजवाया गया ।वहीं ग्राम पचदेवरा तहसील तिलहर में औचक निरीक्षण में द्वारिका प्रसाद के घर अवैध तरीके एकत्रित 2720 कुंटल गेहूं भंडारित पाया गया.जिसका निर्धारित वैध प्रपत्र जैसे मंडी रजिस्ट्रेशन, 6-R, 9-क्रआदि प्रपत्र नहीं मिला जिसके कारण उस पर लगभग 2 लाख 75 हजार रुपए का जुर्माना ठोंका गया।

बच्चों की संख्या की सूचना उपलब्ध कराए

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार कस्बा में स्थित सीएचसी के समस्त एएनएम अपने उपकेंद्र के अन्तर्गत आने वाले स्कूल (सरकारी,प्राइवेट) जिसमें कक्षा 5 तथा कक्षा 10 के बच्चे अध्ययनरत हैं , उस स्कूल की सूची, हेड मास्टर का नाम तथा मोबाइल नंबर ,बच्चों की संख्या की सूचना उपलब्ध कराए। यह जानकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ एसके पटेल ने दी है। उन्होंने कहा की विश्व टीकाकरण सप्ताह जो 24 अप्रैल से 10 मई तक चलेगा जिसमें समस्त लक्षित बच्चों को टीडी 10 वर्ष तथा टीडी 16 वर्ष का टीका लगाया जाएगा, इसके लिए माइक्रो प्लान अविलंब बनाना है।

भयंकर बेरोजगारी, पूरा आर्थिक तंत्र फेल, यही है आज देश की सच्चाई- राहुल गांधी

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कहा है कि सच्चाई के लिए खड़े होना गांधी-नेहरू की परंपरा रही है तथा वह खुद को नेता के रूप में नहीं देखते बल्कि सत्य का साधक (सीकर ऑफ ट्रुथ) मानते हैं। उन्होंने पूर्व सांसद और कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित के साथ एक पॉडकास्ट में नेहरू की राजनीति, आदर्श, विचार और योगदान के बारे बात की। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने इस संवाद के दौरान अमेरिकी शुल्क से जुड़े विषय का भी उल्लेख किया और दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झुक गए, जबकि नेहरू और इंदिरा ऐसी परिस्थिति में कभी नहीं झुकते।

राहुल गांधी ने इस संवाद के दौरान अमेरिकी शुल्क से जुड़े विषय का भी उल्लेख किया और दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी झुक गए, जबकि नेहरू और इंदिरा ऐसी परिस्थिति में कभी नहीं झुकते। उन्होंने अपने परिवार के राजनीतिक दर्शन का जिक्र करते हुए कहा कि राजनीति वास्तव में सत्य के लिए होती है। राहुल गांधी का कहना था, "नेहरू जी ने हमें राजनीति नहीं सिखाई, उन्होंने हमें डर का सामना करना और सच्चाई के लिए खड़ा होना सिखाया। उन्होंने भारतीय नागरिकों को उत्पीड़न का विरोध करने और अंततः स्वतंत्रता का उदघोष करने का साहस दिया। उनकी सबसे बड़ी विरासत सत्य की उनकी निरंतर खोज में निहित है।

एक ऐसा सिद्धांत है जिसने उन सभी चीज़ों को आकार दिया जिनके लिए वे खड़े थे।" उनके अनुसार, जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी ने कभी खुद को नेता के रूप में नहीं देखा और उनके परिवार का हमेश यही मानना रहा कि राजनीति सच्चाई के लिए होनी चाहिए। उन्होंने कहा, ÷मैं भी खुद को नेता के रूप में नहीं देखता, बल्कि सत्य का साधक हूं।" कांग्रेस नेता ने कहा कि भारत को उन स्थितियों का सामना करने की हिम्मत करनी पड़ेगी जो आज उसके सामने है। उन्होंने दावा किया, "आज

भयंकर बेरोजगारी है, पूरा आर्थिक तंत्र विफल हो चुका है, देश में सद्भाव का अभाव है, यह सच्चाई है, इसे आपको स्वीकार करना पड़ेगा।" राहुल गांधी का कहना था कि इस स्थिति से भारत के भविष्य को नुकसान हो रहा है। उन्होंने कहा कि गांधी, नेहरू, आंबेडकर, पटेल और बोस ने वास्तव में यही सिखाया कि डर से दोस्ती कैसे करें।

राहुल गांधी ने कहा, "महात्मा गांधी एक साम्राज्य के सामने खड़े हुए और उनके पास सच्चाई के अलावा कुछ नहीं था। उन्होंने कहा, "चाहे मैं बिल गेट्स से बात करूं या रामचेत मोची से, मैं उनसे समान जिज्ञासा के साथ मिलता हूं।÷ राहुल गांधी ने जोर देकर कहा, "आज के भारत में, जहां सत्य असुविधाजनक है - मैंने सत्य को अपनी पसंद बना लिया है। मैं इसके लिए खड़ा रहूंगा, चाहे इसकी कोई भी कीमत हो।"

ईंट भट्टे में खड़े ट्रक की बाड़ी से लटकता मिला किशोर शव

स्वतंत्र प्रभात

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के अंबारा पश्चिम गांव में शुक्रवार की शाम तब अफरा-तफरी मच गई जब एक पुराने ट्रक की बॉडी से 17 वर्षीय किशोर अभय नाई का शव गमछे के फंदे से झूलता मिला। घटनास्थल कोई सुनसान जंगल नहीं, बल्कि गांव के पास का एक ईंट भट्ठा था जहां झाड़ियों और ईंट के चट्टों के बीच ये खौफनाक मंजर छिपा हुआ था। गांव के ही गडरियन का पुरवा मजरे में रहने वाला अभय बृहस्पतिवार की शाम को मड़ाई में जाने की बात कहकर घर से निकला था, लेकिन वह देर तक लौटकर नहीं आया। शव की हालत देख परिजनों का गुस्सा फूट पड़ा। उन्होंने साफ कहा कि यह आत्महत्या नहीं, सोची-समझी साजिश है। उनका आरोप है कि अभय को मारकर लटकाया गया है।

पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। साक्ष्य इकट्ठा किए और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। वहीं, मृतक के पिता का दावा है कि गांव के ही एक व्यक्ति से उनकी पुरानी रंजिश चल रही है और कई बार उन्हें धमकियां भी मिल चुकी थीं। इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह ने बताया कि शव का पंचायतनामा कर पोस्टमार्टम के लिए भेज गया था पोस्टमार्टम रिपोर्ट में लटकने से मौत की पुष्टि हुई है। बताया कि मृतक के पिता ने मामले को लेकर तहरीर दी है। हर एंगल पर जांच की जा रही है।

ममता बनर्जी की पश्चिम बंगाल सरकार हिन्दू विरोधी- अवधेश

जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंप राष्ट्रपति शासन लगाए जाने की मांग

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। पश्चिम बंगाल में हिंसा सरकार प्रायोजित है जिस तरह से हिन्दुओं का उत्पीड़न हो रहा है और राज्य की सरकार मुख्य दर्शक बनी हुई है यह इस बात को दिखाता है कि कैसे सरकार हिन्दुओं को कत्ल कराकर उन्हें पश्चिम बंगाल से खत्म करना चाहती है। हिंदू सरकार को तत्काल मामले को संज्ञान लेते हुए पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगा देना चाहिए उक्त बातें विश्व हिन्दू परिषद के जिलाध्यक्ष अवधेश नारायण शुक्ला ने शनिवार को जिला मुख्यालय में ज्ञापन सौंपते हुए कही।

इस मौके पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि बंगाल में हिन्दुओं के उत्पीड़न से पूरा भारत नहीं अपित पूरे विश्व का हिन्दू दुखी है। और जिस तरीके से पुलिसिया संरक्षण में हिन्दुओं की हत्या हो रही है वहां पर हिन्दुओं के बहन बेटियों की इज्जत की साथ खेला जा रहा है,

वह बर्दाश्त से बाहर है। बोलते हुए संगठन के जिला सह मंत्री वेद प्रकाश सत्यार्थी ने कहा कि आज जरूरत हो गई है कि पूरे पूरे विश्व का हिन्दू पश्चिम बंगाल में हो रहे अन्याय के खिलाफ खड़ा हो। इस मौके पर सभी मौजूद लोगों ने एक स्वर में पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाए जाने की मांग की। इस मौके पर प्रमुख रूप से रुपेन्द्र शर्मा, शिवम पांडे, दीपक मौर्य, पुष्पेंद्र पाण्डेय, नीलमणि, सर्वेश पटेल, पंकज पटेल, शिवा, हनुमान, दीपक वर्मा सहित दर्जन से ज्यादा लोग मौजूद रहे।

मनरेगा योजना में भारी भ्रष्टाचार के आरोप

जेसीबी से तालाब की सफाई एवं रीपर से सड़क मरमत कार्य कर कर फर्जी हाजिरी और फोटो अपलोड कर निकल गई मजदूरी धनराशि

● गरगटिया नहर पुल से रायपुर की हद तक नहर पट्टी पूरब बंधा मरम्मत कार्य को निर्माण कार्य दिखा किया गया खेला

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी भले ही ग्राम पंचायत में किया जा रहे सरकारी धन के दुरुपयोग को लेकर सुबे के मुखिया का सख्त आदेश आया हो कि प्रधानों की मनमानी पर चलेगा हंटर जैसे सख्त आदेश जारी किए जा रहे हैं पर मुख्यमंत्री के आदेशों का असर विकासखंड बेहजम के जिम्मेदार और बनिका ग्राम प्रधान पर पड़ता नजर नहीं आ रहा है इसका जीता जागता उदाहरण ग्राम पंचायत बनिका में देखी जा सकती है जहां दर्जनों महिलाओं की फर्जी हाजिरी भरकर भुगतान निकाले जाने का मामला सामने आया है सूत्र बताते हैं भुगतान सूची में अंकित महिलाओं में से अधिकांश महिलाएं कभी काम करने नहीं जाती हैं लेकिन उनके नाम लाखों का भुगतान निकाला गया बानगी बतौर अलका दीक्षित का नाम चर्चा का विषय बना है इतना ही नहीं ब्लॉक बेहजम की काफी चर्चित ग्राम पंचायत बनिका में माइनर नहर के किनारे पटरी कार्य कहीं दिखाई नहीं पड़ रहा है लेकिन धनराशि खर्च हो चुकी है उक्त पटरी पर बंधा निर्माण कार्य पर जानकारी लेने के साथ-साथ जमीनी पड़ताल में लोगों ने बताया बंधा निर्माण नहीं कराया गया बल्कि मरम्मत कर जहां-तहा करवाया गया है बंधा निर्माण कार्य तो पूर्व प्रधान ने कराया था उक्त जानकारी पूर्व प्रधान सहित दर्जनों अन्य लोगों ने द्वारा दी गई है कागजों पर बंधा निर्माण कार्य दिखाकर सरकारी धन का निजी हित में दुरुपयोग किए जाने के आरोप लगाए जा रहे हैं

बड़ा तालाब की सफाई मरम्मत में चली जेसीबी ग्रामीण

उक्त बड़ा तालाब की खुदाई सफाई की जमीनी पड़ताल को गए हमारे संवाददाता को बनिका तीर्थ पर बैठे दर्जनों लोगों ने नाम का खुलासा न करने की शर्त पर बताया कि उक्त बड़े तालाब की सफाई जेसीबी से एक दिन में कर दिया गया खुदाई कराई नहीं गई

केवल तालाब के चारों ओर बनी मेड की मरम्मत कराई गई है जब कार्य जेसीबी से हुआ लेबरों ने आखिर काम कहां किया जिनका भुगतान किया गया है इतना ही नहीं तीर्थ तालाब अमृत सरोवर के पास से बड़ा तालाब को जाने वाले रास्ता का पटान कार्य कराया गया उसमें रिपर चलवा कर रास्ते का पटान कराए जाने की बात चर्चा का विषय बनी है सूत्रों की मानें तो प्रधान और पंचायत सचिव की मिली भगत से कई चौपहिया धारक साधन संपन्न लोगों के नाम मनरेगा योजना में हाजिरी भरकर भुगतान निकल गया ऐसा आरोप पंचायत बनिका में ग्राम निधि से कराए गए कार्यों की कर दी जाए स्थलीय जांच तो भारी भ्रष्टाचार का होगा खुलासा मामला नल रिबोर का हो या फिर स्ट्रीट लाइट का रहा हो साफ सफाई एवं दवा छिड़काव के नाम पर खेल होने के आरोप लगाए जा रहे हैं सूत्रों द्वारा मिली जानकारी के अनुसार खबर की संज्ञान ग्रहण करते हुए खंड विकास अधिकारी बेहजम ने की थी इंटरलॉकिंग की जांच सड़क टूटी मिलने पर पुनः रिपेयरिंग करवाने के आदेश दिए थे इस संबंध में खंड विकास अधिकारी नीरज दुबे ने बताया मामला मेरे संज्ञान में आया है शीघ्र ही मामले की जांच कर कर दोषी के विरुद्ध कार्रवाई की जाए गी।

संक्षिप्त खबरें

द हंस फाउंडेशन की टीम ने प्राथमिक विद्यालय में स्वास्थ्य की दी जानकारी

पचपेड़वा बलरामपुर/ स्थानीय ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम भूसहर पुरई के प्राथमिक विद्यालय में द हंस फाउंडेशन की टीम ने स्वास्थ्य कैंप करने के साथ इंटरएक्टिव लर्निंग कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें स्कूल के बच्चों को अच्छे व्यवहार, अच्छी आदतें और शिक्षा के महत्व के बारे में जानकारियां दी गई। टीम की एसपीओ रिया स्कूल के शिक्षकों के सहयोग से प्राथमिक विद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किया। टीम ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में शिक्षा का महत्व और अच्छे संस्कारों को बढ़ावा देना है इसी के साथ छात्रों को अच्छे व्यवहार, स्वस्थ आदतें और शिक्षा के महत्व के बारे में सिखाया गया। इसके अलावा हाथ को किस प्रकार से धुलना चाहिए जिसे कोई संक्रमण न हो, जिसने बच्चों में विशेष रुचि जगाई गई और बताया गया कि शिक्षा ही आपका भविष्य उज्जवल कर सकती है, इसलिए सभी को शिक्षा के महत्व के बारे मे जानकारी होनी चाहिये।

हिन्दू जागृत मंच के कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपति संबंधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी को दिया

बलरामपुर,तुलसीपुर- पश्चिम बंगाल को बांग्लादेश होने से बचाने को लेकर हिंदू जागृत मंच द्वारा एक जुलूस हनुमानगढी चौराहे से लेकर तहसील तुलसीपुर तक भ्रमण करते हुए राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन उपजिलाधिकारी को दिया। सनातन जागृत मंच के संयोजक भाजपा के वरिष्ठ नेता दिलीप गुप्ता के नेतृत्व में हिंदू एकता जिंदाबाद सहित नारे लगाए गए तथा सैकड़ो की संख्या में लोग शामिल हुए। इस मौके पर अमित कसौधन, मीना किन्नर देवीपाटन वार्ड सभासद, प्रदीप गुप्ता, बृज गोपाल पांडे संतोष जायसवाल, हृदय रोशन राजू अग्रहरि, ऋतिक चौरसिया मिथिलेश गिरी, के जी यादव सहीत सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

सरसंघचालक जी ने किया स्वयंसेवकों से संवाद

अलीगढ़। आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भागवत जी पांच दिन के प्रवास पर हैं। सुबह और शाम को शाखाओं का निरीक्षण कर वह स्वयंसेवकों से बातचीत कर दिशा-निर्देश दे रहे हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी शहर के हीरालाल बारहसैनी इंटर कॉलेज में लगने वाली सनातन शाखा में शामिल हुए। एक घंटे की शाखा में शारीरिक और बौद्धिक कार्यक्रम हुए। इसके बाद सरसंघचालक ने क्षेत्र के वरिष्ठ स्वयंसेवकों के साथ आधा घंटे वार्ता की। सरसंघचालक पांच दिन के प्रवास पर अलीगढ़ आए हुए हैं। उन्होंने जिला और विभाग प्रचारकों के साथ बैठक की थी। सुबह सनातन शाखा में शामिल हुए। सर संघचालक शाम को पंच नगरी क्षेत्र में लगने वाली भगत सिंह शाखा में भी शामिल हुये।

समाधान दिवस में डीएम के समक्ष किसान नेता ने उड़ेला पैट्रोल

अलीगढ़। इगलास तहसील में संपूर्ण समाधान दिवस में उस समय अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया जब अचानक किसान नेता ने अपने ऊपर पेट्रोल उड़ेलकर आत्मदाह का प्रयास करते हुये चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था कि मेरी जमीन बंजर पड़ी हुई है, मुझे न्याय नहीं मिल रहा है। संपूर्ण समाधान दिवस में डीएम संजीव रंजन जनता से शिकायतों को सुनने में लगे थे। तभी किसान नेता भगवान सिंह ने हरे रंग की प्लास्टिक की बोतल निकाली और उसे खोलकर पेट्रोल को अपने ऊपर उड़ेलने लगा। यह देखकर वहां मौजूद पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया। पुलिसकर्मी किसान नेता को पकड़ कर वहां से बाहर ले गए और उन्हें समझाया। पुलिस कर्मियों ने इसको पकड़ लिया और अधिकारियों के निर्देश पर कोतवाली ले गए। पूरे घटनाक्रम के सम्बंध में एसडीएम से बात करके स्थिति स्पष्ट होगी। ग्राम नगला जुझार निवासी भगवान सिंह का अपने भाइयों के साथ जमीन को लेकर विवाद चल रहा है। जमीन विवाद के चलते बंजर पड़ी हुई है। सम्पूर्ण समाधान दिवस में आकर वह चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था कि मेरी जमीन बंजर पड़ी हुई है, मुझे न्याय नहीं मिल रहा है।

बहुचर्चित छात्रा रागिनी हत्याकांड का खुलासा करना नवागत थानाध्यक्ष के लिए किसी चुनौती से कम नही

● निलंबित शिक्षक अरुणेन्द्र सिंह के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय बचाने में जुटी है कप्तानगंज पुलिस - सूत्र मुख्यमंत्री समेत अन्य उच्च अधिकारियों से शिकायत के बाद भी पीड़ित परिवार को नही मिला न्याय

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले केबहुचर्चित छात्रा रागिनी के मौत मामले का खुलासा करना नवागत थानाध्यक्ष कप्तानगंज सुनील कुमार गौड़ के लिए किसी चुनौती से कम नही है हत्या के 02 माह से अधिक का समय बीतने के बाद भी कप्तानगंज पुलिस छात्रा रागिनी के हत्या मामले का खुलासा नही कर पाई है और न ही हत्या के तह तक पहुंच पाई है । पीड़ित परिवार न्याय के लिए दर - दर भटक रहा है । पीड़ित परिवार छात्रा रागिनी के हत्या का खुलासा करके हत्या आरोपियों को कठोर सजा दिये जाने की मांग किया है । पीड़ित परिवार ने मुख्यमंत्री पोर्टल , डीआईजी बस्ती , पुलिस अधीक्षक बस्ती अभिनंदन समेत अन्य उच्च अधिकारियों को शिकायती पत्र दे कर न्याय की गुहार लगाई थी । पीड़ित परिवार ने कप्तानगंज पुलिस पर भी गंभीर आरोप लगाते हुए तत्काल छात्रा रागिनी के हत्याकांड मामले का खुलासा करने की भी मांग किया था । पीड़ित परिवार ने पुलिस अधीक्षक को दिये शिकायती पत्र में लिखा था कि कप्तानगंज पुलिस विकासखण्ड कप्तानगंज के अन्तर्गत कंपोजिट विद्यालय खपड़ही पर तैनात शिक्षक अरुणेंद्र सिंह के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय लगातार पीड़ित परिवार के सदस्यों का उत्पीड़न करने में जुटी थी जिससे पीड़ित परिवार का घर पर रहना मुश्किल हो गया था लेकिन उच्च अधिकारियों के संज्ञान में आने के बाद कप्तानगंज पुलिस ने पीड़ित परिवार को परेशान करना बंद कर दिया है ।

विकास खण्ड कप्तानगंज के अर्न्तगत

कम्पोजिट विद्यालय खपड़ही में छात्रा रागिनी की मौत बीते 10 फरवरी 2025 को संदिग्ध परिस्थितियों में हुई थी जिसमें 10 दिन बाद मृतका के पिता शिव प्रसाद के तहरीर पर 01 अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया था लेकिन अब बड़ी बात यह है कि 02 माह बीतने के बाद भी छात्रा रागिनी के हत्या का खुलासा न करना पुलिस प्रशासन बड़ा सवाल खड़ा करता है । पीड़ित परिवार ने यह स्पष्ट कहा कि कम्पोजिट विद्यालय खपड़ही पर तैनात शिक्षक अरुणेंद्र सिंह व गांव वासियों के झांसा में न पड़ता तो आज हमें न्याय के लिए दर दर भटकना नही पड़ता और हत्या आरोपी जेल में होते लेकिन शिक्षक समेत अन्य ग्रामीणों के झांसे में पड़ने के कारण न्याय नही मिल पा रहा है ।जिले के समस्त जिम्मेदार अधिकारियों को पता है कि छात्रा रागिनी की मौत कंपोजिट विद्यालय खपड़ही में हुई थी विद्यालय परिसर में छात्रा की मौत होने की कारण सारी जिम्मेदारी विद्यालय के शिक्षक की थी लेकिन कप्तानगंज पुलिस शिक्षक अरुणेन्द्र सिंह से कोई पूछताछ नहीं कर रही है ।

अब देखना कि नवागत थानाध्यक्ष सुनील कुमार गौड़ द्वारा कब तक बहुचर्चित रागिनी हत्या मामले का खुलासा किया जायेगा जिसको लेकर जिले में तरह - तरह की चर्चाएं चल रही है । पीड़ित परिवार को नवागत थानाध्यक्ष सुनील कुमार गौड़ पर उम्मीद जगी है कि नवागत थानाध्यक्ष सुनील कुमार गौड़ रागिनी हत्याकाण्ड को गंभीरता से लेते हुए निष्पक्ष जांच कर मामले का खुलासा करेगें । उक्त प्रकरण में पुलिस अधीक्षक अभिनन्दन ने कहा कि छात्रा रागिनी हत्या मामले में प्रत्येक बिन्दुओं पर जांच पड़ताल चल रही है । हत्या से सम्बंधित साक्ष्य एकत्रित किये जा रहे है । जल्द ही छात्रा रागिनी के मौत मामले का अनावरण होगा ।

डीएम की अध्यक्षता में तहसील बलरामपुर सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस सम्पन्न

● संपूर्ण समाधान दिवस में डीएम ने फरियादियों की सुनी शिकायतें , गुणवत्तापूर्ण ढंग से शिकायतों के निस्तारण का दिया निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर- जनमानस की शिकायतों एवं समस्याओं के प्रभावी निराकरण हेतु डीएम श्री पवन अग्रवाल एवं पुलिस अधीक्षक श्री विकास कुमार की अध्यक्षता में तहसील बलरामपुर सदर में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। इस दौरान डीएम द्वारा जनमानस की शिकायतों एवं समस्याओं को सुना गया एवं कतिपय शिकायतों का मौके पर ही निस्तारण कराया गया। उन्होंने सम्पूर्ण समाधान दिवस में आई शिकायतों के गुणवत्तापूर्ण निस्तारण निर्धारित समयावधि के भीतर किए जाने का निर्देश संबंधित को दिया।भूमि विवाद एवं लॉ एंड ऑर्डर से जुड़े मामलों में राजस्व विभाग एवं पुलिस विभाग के संयुक्त टीम द्वारा मौके पर जाकर निस्तारण किए जाने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि शिकायतें के निस्तारण में गलत रिपोर्टिंग पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने संपूर्ण समाधान दिवस में अनुपस्थित अधिशाषी अभियंता विद्युत का एक दिन का वेतन रोके जाने का निर्देश दिया इस दौरान एसडीएम बलरामपुर सदर, सीओ बलरामपुर, जिला विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, परियोजना अधिकारी ग्राम्य विकास विभाग, तहसीलदार व अन्य संबंधित अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

ई रिक्शा चालकोका उत्पीड़न बंद हो पुलिस की कार्रवाई से खफा है ई रिक्शा चालक एसपी से लगाई न्याय की गुहार

कागजातों की जांच कराने को कहना पड़ा भारी, हुई पिटायी

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले मे आटोरिक्शा जन कल्याण समिति जिलाध्यक्ष मो. हारून को शुक्रवार को दिन में लगभग 7 बजे 25 आटो रिक्शा चलवाने वाले मोईज पुत्र मुस्लिम निवासी मिल्लतनगर थाना कोतवाली ने अज्ञात लोगों के साथ पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के इण्डियन कानवेन्ट स्कूल के पीछे घर में घुसकर मारा पीटा और जान से मारने की धमकी दिया। इससे आक्रोशित आटो चालकों ने संरक्षक महेन्द्र श्रीवास्तव के साथ पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। मांग किया कि पूरे मामले की जांच कराकर दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई के साथ ही मो. हारून और उनके परिजनों के जान माल की सुरक्षा करायी जाय।प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से समिति के संरक्षक महेन्द्र श्रीवास्तव और उपाध्यक्ष मो. इम्तियाज ने संयुक्त रूप से बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिशा निर्देश के अनुरूप जनपद में टेम्पो और ई-रिक्शा चालकों की सघन जांच चल रही है।

इस पर समिति ने जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर आग्रह किया कि शिविर लगाकर टेम्पो, ई-रिक्शा कागजातों की जांच पूरी करा लिया जाय और टेम्पो चालकों का उत्पीड़न न हो। ए.आर.टी.ओ. ने समिति के आग्रह पर शिविर लगवाया किन्तु मोईज ने इसके विरोध किया। मो. हारून ने मोईज से आग्रह किया था कि अपने टेम्पों के कागजातों की जांच करवा लो, इसी बात को लेकर मोईज ने मो. हारून पर हमला करा दिया। इससे टेम्पो चालकों में रोष है।एसपी को ज्ञापन देने वालों में हयात मोहम्मद उर्फ 'टी.टी', अकबर अली, गोपाल जी गुप्ता, सोनू कुमार राठौर, वारिस अली आदि शामिल रहे।

ट्रक ने बाइक सवार माँ-बेटी और भाई को रौंदा

अलीगढ़। थाना जवाँ क्षेत्र में एक ट्रक ने बस को ओवरटेक करते वक्त, बाइक सवार मां-बेटी और भाई तीन लोगों को रौंद दिया। इस घटना में करीब 20 वर्षीय आफरीन बहन की मौत हो गई। जबकि मां के दोनों पैर ट्रक के नीचे आकर कुचल गए और भाई भी गंभीर रूप से घायल हो गया। मृतक आफरीन के भाई अशरफ ने बताया है कि वह क्वार्सी इलाके के मैरिज रोड क्षेत्र में रहते हैं। उसका भाई, मां और बहन जवाँ थाना इलाके के खानपुर में एक शादी समारोह में शामिल होकर वापस बाइक द्वारा लौट रहे थे। इसी दौरान जवाँ थाना इलाके में ही एक ट्रक ने बस को ओवरटेक करते समय रौंद दिया। बताया गया है कि आगे चलकर पुलिस ने बैरिकेड कर हादसा करने वाले ट्रक और उसके चालक को पकड़ लिया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को जेएन मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया है। वहीं मृतका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम प्रक्रिया कराई जा रही है। वहीं मृतका के भाई ने बताया है कि आफरीन की शादी तय हो गई थी, आगामी समय में उनकी शादी होने वाली थी, लेकिन हादसे में उसकी मौत हो गई। परिवार में घटना के बाद मातम छाया हुआ है।

न्याय की राह पर सजग प्रहरी भानु प्रताप सिंह की अगुवाई में परसरामपुर पुलिस ने दिलाई पीड़िता को इंसाफ

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में परशुरामपुर नए थाना अध्यक्ष भानु प्रताप सिंह अपराधियों पर अपराधियों पर अंकुश लगाकर गिरफ्तार करने में कामयाब थाना अध्यक्ष है जनता इनकी प्रशंसा कर रही है की कमान संभालते ही सक्रिय हो करके अपराधियों को गिरफ्तार कर लिया स्वाटटीम की मदद से आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जानकारी के अनुसार पुलिस ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि कानून के रखवाले जब संकल्प लेकर निकलते हैं, तो अपराध कहीं छिप नहीं सकता। 19 अप्रैल 2025 को थाना परसरामपुर पुलिस और स्वाट टीम बस्ती की संयुक्त कार्यवाही में एक नाबालिग के साथ दुष्कर्म जैसे घिनौने अपराध को अंजाम देने वाले दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। यह कार्यवाही उस समय और भी महत्वपूर्ण बन जाती है जब इसकी कमान थाना परसरामपुर के कर्मठ, निष्पक्ष और तेजतर्रार थानाध्यक्ष भानु प्रताप सिंह के हाथों

में हो। ग्राम कुश्मौरघाट से गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपी – अभिषेक सिंह (उम्र 23 वर्ष) और विशाल दुबे (उम्र 20 वर्ष) – के विरुद्ध थाना परसरामपुर में मु0अ0सं0 111/2025 धारा 70(2), 115(2), 137(2), 87, 351(2), 352 BNS व 5/6 पाक्सो एक्ट के अंतर्गत गंभीर धाराएं दर्ज थीं। पीड़िता को न्याय दिलाने के इस मिशन में भानु प्रताप सिंह ने न केवल नेतृत्व किया, बल्कि एक-एक बिंदु पर पैनी नजर रखकर यह सुनिश्चित किया कि अपराधी किसी भी सूरत में बच न सकें।इस कार्रवाई में उनके साथ स्वाट टीम प्रभारी उ0नि0 संतोष कुमार, उ0नि0 राहुल गुप्ता, का0 रोहित कुमार, का0 आनंद यादव, का0 शिव यादव, हे0का0 रमेश कुमार, हे0का0 अवनीश सिंह, हे0का0 पवन तिवारी व का0 किशन सिंह जैसे समर्पित पुलिसकर्मी भी शामिल रहे, जिन्होंने दिन-रात की मेहनत से इस सफलता को संभव बनाया।भानु प्रताप सिंह की कार्यशैली का सबसे प्रभावशाली पहलू यह है कि वे अपराध के हर पहलू को संवेदनशीलता और कठोरता के संतुलन के साथ देखते हैं। उनकी निगरानी में न केवल अपराधियों की धरपकड़ होती है, बल्कि पीड़ितों को न्याय का भरोसा भी मिलता है। जनपद बस्ती में उनकी छवि एक सख्त लेकिन न्यायप्रिय पुलिस अधिकारी की बनी है, जिनकी मौजूदगी अपराधियों के लिए भय और आम जनता के लिए विश्वास का प्रतीक है।

इस पूरे घटनाक्रम ने यह साबित कर दिया कि यदि पुलिस बल में नेतृत्वकर्ता सतर्क, संवेदनशील और निडर हो, तो समाज को भयमुक्त और न्यायसंगत बनाया जा सकता है।

सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसियेशन का धरना प्रदर्शन 22 अप्रैल को

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में सेवानिवृत्त कर्मचारी एवं पेंशनर्स एसोसियेशन द्वारा 22 अप्रैल को कलेक्ट्रेट मुख्यालय पर प्रस्तावित विशाल धरना प्रदर्शन को सफल बनाने को लेकर पेंशनर्स कक्ष में बैठक हुई। अध्यक्षता करते हुये जिलाध्यक्ष नरेन्द्र बहादुर उपाध्याय ने कहा कि बार बार आग्रह करने के बावजूद स्थानीय स्तर पर व शासन से जुड़ी पेंशनर्स की समस्याओं का निराकरण नही हुआ। जिला प्रशासन और शासन की उदासीनता के चलते सेवानिवृत्त पेंशनर्स को धरना प्रदर्शन का निर्णय लेना पड़ा।

इससे पहले सेवानिवृत्त पेंशनर्स ने फाइनेंसियल बिल लाकर सरकार द्वारा पेंशनर्स को आठवें वेतन आयोग से बाहर करने का आरोप लगाते हुये सरकार का विरोध दर्ज कराया गया लेकिन इस पर सरकार मौन रही। आज भी बिल को लेकर पेंशनर्स में संशय बरकरार है। इतना ही नही कोषागार कर्मी भूपेश विश्वकर्मा के कार्य व्यवहार को लेकर पेंशनर्स में उपजे असंतोष का भी समाधान जिलाधिकारी ने द्वारा नही सुनिश्चित किया गया और न ही उसके कार्य व्यवहार में कोई बदलाव हुआ। अपनी रसूख का इस्तेमाल कर

भूपेश अपने पटल पर बने हुये हैं जो पेंशनर्स के साथ भद्दा मजाक बनकर रह गया है।

इन सभी बातों को लेकर 22 अप्रैल को विशाल धरना प्रदर्शन का आयोजन कर जिला प्रशासन व शासन सत्ता का ध्यान समस्याओं की ओर आकृष्ट कराया जायेगा। जिलाध्यक्ष ने उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील किया है। जिलाध्यक्ष नरेन्द्र बहादुर उपाध्याय ने कहा कि धरना प्रदर्शन के उपरान्त मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री व स्थानीय स्तर पर जिलाधिकारी को सम्बोधित मांग पत्र सौंपा जायेगा।

22 अप्रैल को प्रस्तावित धरना प्रदर्शन को माध्यमिक शिक्षक संघ, जनपद शाखा बस्ती, राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद, विकास भवन कर्मचारी संघ, ग्राम पंचायत अधिकारी संघ, ग्राम विकास अधिकारी संघ, सफाई कर्मचारी संघ पंचायती राज विभाग, कलेक्ट्रेट मिनिस्ट्रियल एसोसियेशन, डिप्लोमा फार्मासिस्ट एसोसियेशन, आयुर्वेद फार्मासिस्ट एसोसियेशन, राजकीय वाहन चालक संघ, शिक्षक महासंघ, प्राथमिक शिक्षक संघ, सेवानिवृत्त प्राथमिक शिक्षक संघ आदि अनेक कार्यरत एवं सेवानिवृत्त संगठनों ने अपना समर्थन दिया है।

उपरोक्त सभी के नेतृत्वकर्ताओं ने अपने अपने संगठनों के पदाधिकारियों व सदस्यों से धरना प्रदर्शन को सफल बनाने की अपील किया है। बैठक में जिला मंत्री उदय प्रताप पाल, चन्द्रप्रकाश पाण्डेय, सुरेशधर दूबे, छोटेलाल यादव, एलके पाण्डेय, सुरेन्द्रनाथ उपाध्याय, श्रीगोपाल तिवारी, नरेन्द्रदेव मिश्र, ब्रह्मानंद यादव, कृष्णकुमार श्रीवास्तव, ओमप्रकाश मिश्र, जंगबहादुर, सुखराम, रंजीत सिंह, राधेश्याम तिवारी आदि मौजूद रहे।

भाजपा ने सम्मान सभा में लिए बाबा साहब द्वारा किए गए कार्यों पर की चर्चा

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट – भारतीय जनता पार्टी ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर की जयंती पखवाड़े के तहत शनिवार को चित्रकूट इंटर कॉलिज के सभागार में डॉ भीमराव अम्बेडकर सम्मान सभा का आयोजन किया। जिसमें समाज के लिए बाबा साहब के योगदान पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में पूर्व केंद्रीय मंत्री भानू प्रताप वर्मा ने कहा कि बाबा साहब सामाजिक न्याय के पुरोधा थे। गरीबो को उनका हक दिलाकर उन्होंने सामाजिक न्याय सुनिश्चित किया। बाबा साहब के जीवन से जुड़े पांच महत्वपूर्ण स्थलों का विकास भाजपा की मोदी सरकार ने किया है। भाजपा ने बाबा साहब के पंच तीर्थ बनाकर उनको सम्मान दिया है। बाबा साहब चाहते थे कि भारत के हर नागरिक को विकास का अवसर मिले, जिसे भाजपा की सरकार ने पूरा करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी है। कानपुर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के क्षेत्रीय महामंत्री रामकिशोर

शाहू ने कहा कि डॉ भीमराव रामजी आम्बेडकर समत्व ममत्व बन्धुत्व को ही सामाजिक व्यवस्था का आधार मानते थे। भाजपा सरकार भी डॉ अम्बेडकर के विचार पर ही सभी वर्गों को साथ लेकर काम कर रही है। जिलाध्यक्ष महेन्द्र कोटार्य ने कहा कि बाबा साहब अम्बेडकर ने समाज में समानता की अलख जगाकर अनुसूचित जाति के लोगों का सम्मान बढाया है। आज सामाजिक राजनीतिक और प्रशासनिक जगहों पर अनुसूचित वर्ग को जो जगह मिल रही है, वह बाबा साहब की ही देन है। पूर्व सांसद भैरों प्रसाद मिश्र ने कहा कि बाबा साहब ने समाज को संगठित एवं शिक्षित करने पर जोर दिया। बाबा साहब छुआछूत और जातिवाद के विरोधी थे। पूर्व मंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि बाबा साहब का जीवन प्रेरणास्पद है। कार्यक्रम का संचालक जिला महामंत्री राजेश जायसवाल ने किया।

इस मौके पर नगर पालिका अध्यक्ष नरेन्द्र गुप्ता, पूर्व जिलाध्यक्ष चन्दप्रकाश खरे, दिनेश तिवारी, जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय, मीडिया प्रभारी भागवत त्रिपाठी, संयोजक जिला मंत्री प्रेमलाल बाल्मीकि, सुरेश अनुरागी, पवन बद्री, रामचन्द्र बर्मा, राकेश कोल, आशीष कोल, प्रेमकरण बाल्मीकि, राजेश बाल्मीकि, बाबूलाल बर्मा, सुनीता श्रीवास, मोतीलाल बौरिया, मनीष बाल्मीकि, उर्मिला बाल्मीकि, नारायण अहिरवार, लवकुश श्रीवास, अंकित बर्मा, प्रदीप बर्मा, कामता कोटार्य, अखिलेश रैकवार, दशरथ प्रजापति, राघवेन्द्र सिंह, मुन्ना करवरिया, बृजेश पांडेय, हीरो मिश्रा, मनोज तिवारी, राजेश्वरी द्विवेदी, जगदीश गौतम, रामसागर चतुर्वेदी, शशि मिश्रा, गोलू गर्ग रवि गुप्ता, प्रमेन्द्र प्रताप सिंह, दिव्या त्रिपाठी, राखी चौबे आदि मौजूद रहे।

कार्यालय ग्राम पंचायत सुमही विकासखंड गौर बस्ती

अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत सुमही विकासखंड गौर बस्ती में मनरेगा, राज्य वित्त / पन्द्रहवां वित्त, बी. आर. जी. एफ. एक अन्य योजना के अर्न्तगत वर्ष 2025/2026 कराये जाने वाले कार्यो पर सामग्री आपूर्ति हेतु मुहरबंद निविदाएं इच्छुक आपूर्तिकर्ताओ से दिनोंक 20/04/2025 से दिनाँक 27/04/2025 को 2:00 बजे तक आमांत्रित की जाती है। मुहरबंद निविदाएं ग्राम प्रधान सुमही ग्राम पंचायत सचिवकी उपस्थित में निविदाताओं/अधिकृत प्रतिनिधियो के समक्ष उसी दिन उपराहन 2:00 बजे निविदा खोली जायेगी। किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय से नियमानुसार निविदा मूल्य प्राप्त की जा सकती है। निविदा दाता नियतानुसार 1-टिन नं0 2-पेन नं0 की मूल प्रतियों प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

शर्ते-1. अनुबंध गठन के समय धरोहर धनराशि 6 प्रतिशत एन.एस.सी/एफ.डी. आर. अथवा नियमानुसार अनुमान्य ग्राम पंचायत पक्ष में बंधक होगी, मूल रूप में जो ग्राम सुमही के पक्ष में बंधक होगी, मूल रूप में जमा करना होगा।
2. न्यूनतम दर वाले निविदादाता/आपूर्तिकर्ता आदेश उपरान्त 7 दिनो के अन्दर सामग्री की आपूर्ति करनी होगी।
3. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की सीमा क्षेत्र के किसी भी स्थल पर हो सकती है। अधोमानक सामग्री क्षेत्र के आपूर्ति होने पर आपूर्ति आदेश निरस्त कर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी।
4. नियमानुसार देय आयकर, व्यापारकर, रायल्टी, स्टैम्प ड्यूटी आदिर देना आवश्यक होगा 1
5. सशर्त निविदाएं स्वीकार नही की जायेगी। निविदा प्रपत्र का मूल्य किसी भी दशा में वापस नहीं होगा।
6. प्राप्त सभी निविदा प्रपत्रो में पहले यह परीक्षण किया जायेगा कि निविदादाता ने समस्त वाच्छित प्रमाणपत्र को संलग्न किया है। या नहीं इनमें किसी प्रकार की कमी पाये जाने पर निविदादाता द्वारा दी गयी दरें तुलनात्मक विवरण में अंकित नही की जायेगी।
7. निविदा को विना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम सुमही के पास सुरक्षित अधिकार होगा।

सूरज पांडेय
ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्राम पंचायत सुमही
विकास खंड गौर जनपद बस्ती

तारा देवी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत सुमही
विकासखण्ड गौर जनपद बस्ती

कार्यालय ग्राम पंचायत भौखरी विकासखंड गौर बस्ती

अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत भौखरी विकासखंड गौर बस्ती में मनरेगा, राज्य वित्त / पन्द्रहवां वित्त, बी. आर. जी. एफ. एक अन्य योजना के अर्न्तगत वर्ष 2025/2026 कराये जाने वाले कार्यो पर सामग्री आपूर्ति हेतु मुहरबंद निविदाएं इच्छुक आपूर्तिकर्ताओ से दिनोंक 20/04/2025 से दिनाँक 27/04/2025 को 2:00 बजे तक आमांत्रित की जाती है। मुहरबंद निविदाएं ग्राम प्रधान भौखरी ग्राम पंचायत सचिवकी उपस्थित में निविदाताओं/अधिकृत प्रतिनिधियो के समक्ष उसी दिन उपराहन 2:00 बजे निविदा खोली जायेगी। किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय से नियमानुसार निविदा मूल्य प्राप्त की जा सकती है। निविदा दाता नियतानुसार 1-टिन नं0 2-पेन नं0 की मूल प्रतियों प्रस्तुत करना अनिवार्य है।

शर्ते- 1. अनुबंध गठन के समय धरोहर धनराशि 6 प्रतिशत एन.एस.सी/एफ.डी. आर. अथवा नियमानुसार अनुमान्य ग्राम पंचायत पक्ष में बंधक होगी
, मूल रूप में जो ग्राम भौखरी के पक्ष में बंधक होगी, मूल रूप में जमा करना होगा।
2. न्यूनतम दर वाले निविदादाता/आपूर्तिकर्ता आदेश उपरान्त 7 दिनो के अन्दर सामग्री की आपूर्ति करनी होगी।
3. सामग्री की आपूर्ति ग्राम पंचायत की सीमा क्षेत्र के किसी भी स्थल पर हो सकती है। अधोमानक सामग्री क्षेत्र के आपूर्ति होने पर आपूर्ति आदेश निरस्त कर धरोहर धनराशि जब्त कर ली जायेगी।
4. नियमानुसार देय आयकर, व्यापारकर, रायल्टी, स्टैम्प ड्यूटी आदिर देना आवश्यक होगा 1
5. सशर्त निविदाएं स्वीकार नही की जायेगी। निविदा प्रपत्र का मूल्य किसी भी दशा में वापस नहीं होगा।
6. प्राप्त सभी निविदा प्रपत्रो में पहले यह परीक्षण किया जायेगा कि निविदादाता ने समस्त वाच्छित प्रमाणपत्र को संलग्न किया है। या नहीं इनमें किसी प्रकार की कमी पाये जाने पर निविदादाता द्वारा दी गयी दरें तुलनात्मक विवरण में अंकित नही की जायेगी।
7. निविदा को विना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम भौखरी के पास सुरक्षित अधिकार होगा।

सूरज पांडेय
ग्राम पंचायत अधिकारी
ग्राम पंचायत भौखरी
विकास खंड गौर जनपद बस्ती

दिलीप सिंह
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत भौखरी
विकासखण्ड गौर जनपद बस्ती

संक्षिप्त खबरें

घर में घुसकर मारपीट का लगाया आरोप, समाधान दिवस में की शिकायत

मलिहाबाद, लखनऊ। धर्मनगरी गांव में रहने वाली एक महिला ने तीन लोगों पर घर में घुसकर मारपीट करने का आरोप लगाया है।महिला ने तहसील समाधान दिवस में शिकायत दर्ज करवाई है। ज्ञात हो कि धर्मनगरी गांव निवासिनी सविता ने शिकायत करते हुए बताया है कि वह अपने पति के साथ शुक्रवार को शादी समारोह में शामिल होने गई हुई थी।घर में घर पे बच्चे मौजूद थे। उन्होंने आरोप लगाया है कि घर पर बच्चों को अकेला पाकर गांव के ही रामेश्वर,राजेंद्र व नया खेड़ा निवासी सुनील यादव ने घर पर चढ़ाई करके बच्चों के साथ मार पीट कर भाग निकले।उक्त लोग पुनः लगभग ग्यारह बजे बांका,लोहे की रॉड व शस्त्र लेकर पीड़िता ने आरोप लगाया कि उक्त लोग उसके पति प्रेम को मारने के फिराक में आए थे। पीड़ित ने तहसील समाधान दिवस मे प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

विश्व हिंदू परिषद संडीला के कार्यकर्ताओं ने निकाली आक्रोश यात्रा

संडीला, हरदोई। वक्फ बोर्ड कानून के बहाने पश्चिम बंगाल में हिंदुओं के उत्पीड़न के विरोध में संडीला विश्व हिंदू परिषद् के कार्यकर्ताओं ने संतों की अगुवाई में एक आक्रोश यात्रा निकाली और राष्ट्रपति महोदया को संबोधित एक आक्रोश पत्र पश्चिम बंगाल सरकार के खिलाफ उपजिलाधिकारी संडीला को सौंपा, आक्रोश यात्रा में हिंदू युवाओं संग प्रमुख रूप से योगी सतेंद्र नाथ, जिलाध्यक्ष विहिप रामगोपाल, बजरंग दल जिला संयोजक विनीत वर्मा, जिला उपाध्यक्ष बृजेश, बिजेंद्र,नगर अध्यक्ष राहुल, नगर मंत्री अजय, संजय, सुखदेव, राजेश, धर्मेंद्र, अमरेश, मंगेश, मेड़ीलाल, वीरेंद्र आदि लोग सम्मिलित हुए।

ग्रामीण पेयजल आपूर्ति योजना के प्रतिभागियों को दिया प्रशिक्षण

सुरसा। ब्लॉक के श्रीशचन्द्र अग्रवाल सभागार में एक दिवसीय ग्रामीण पेयजल आपूर्ति योजना के विभिन्न घटकों की जानकारी दिए जाने हेतु पंचायती राज विभाग ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम में खण्ड विकास अधिकारी कविता अवस्थी व एडीओ पंचायत विकास चतुर्वेदी ने दीप प्रज्जवलित कर प्रशिक्षण का शुभारंभ किया। एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 100 से अधिक प्रतिभागियों को ट्रेनरों के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है। जिसमें राज्य प्रशिक्षक पुष्पेन्द्र सिंह ने प्रशिक्षण पेयजल संबंधित प्रतिभागियों को विशेष जानकारियां दी। जबकि अरुण दीक्षित ने जल जीवन मिशन के तहत क्रियान्वित की जा रही जलापूर्ति परियोजनाओं की मूलभूत जानकारियां दी गई। जल आपूर्ति प्रबंधन प्रणाली का परिचय एवं हैंडओवर से पहले और बाद में रखरखाव की जानकारी भी दी गई। वहीं इस मौके पर विशाल चौहान सहित आशीष मिश्रा के द्वारा पेयजल के संरक्षण सदुपयोग एवं नागरिकों से सुविधा संग्रहण आदि की प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। वहीं इस मौके पर ज्ञानेन्द्र दीक्षित मलिहामऊ सहित तमाम कर्मचारियों का पूरा सहयोग रहा।

घर के बाहर खड़ी बाइक चोरी

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के पूरे देवकली का पुरवा मजरे पिलखा गांव में शुक्रवार की देर रात को दरवाजे खड़ी बाइक अज्ञात चोर उठा ले गए। पीड़ित वाहन स्वामी ने पुलिस को तहरीर दी है। गांव निवासी दिलीप ने पुलिस को शिकायती पत्र देकर बताया कि रोज की तरह उसकी बाइक दरवाजे खड़ी थी। तभी रात करीब दो बजे अज्ञात चोर उठा ले गए। बताया कि काफी खोजबीन की गई लेकिन बाइक कहीं ढूंढे नहीं मिली। पीड़ित ने प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करने की गुहार लगाई है। प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार सिंह ने बताया कि मामला संज्ञान में नहीं है। तहरीर मिलने पर कार्रवाई की जाएगी।

नामांकन के लिए निकली प्रभातफेरी

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार कस्बा के किसान इंटर कालेज उसका बाजार द्वारा शनिवार को विशेष नामांकन, टीडी टीकाकरण अभियान के अंतर्गत प्रभातफेरी और रैली निकाली गई। बच्चों द्वारा प्रभातफेरी स्कूल परिसर से निकाल कर नामांकन जागरूकता संबंधी नारे लगाते हुए विभिन्न स्थनों पर होते हुए पुनः विद्यालय परिसर में पहुंची। इस दौरान प्रधानाचार्य संजय कुमार गुप्ता ने कहा की सभी बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करें और अपने आसपास के बच्चों को नामांकन के लिए जागरूक करें। इस मौके पर विरेंदे पाण्डेय, डा सतेंद्र मिश्र, अशोक , अनिल मिश्र , राघवेंद्र सिंह, हृदय नारायण मिश्र आदि रहे।

भाषा के प्रति नफरत अनुचित, गुड गवर्नेंस वही जो संविधान के अनुसार चले- मायावती

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने आजकल चल रहे भाषा विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि भाषा के प्रति नफरत अनुचित है। बसपा मुखिया मायावती ने शनिवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा कि पश्चिम के महाराष्ट्र, गुजरात तथा दक्षिण भारत के कर्नाटक, तमिलनाडु व केरल में बीएसपी संगठन के गठन की तैयारी व मजबूती एवं पार्टी के जनाधार को बढ़ाने आदि पर दिल्ली में हुई बैठक में गहन समीक्षा और आगे पूरे तन, मन, धन से पार्टी के कार्यों को दिशा-निर्देशानुसार बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

उन्होंने आगे लिखा कि जनगणना व उसके आधार पर लोकसभा सीटों का पुनः आवंटन, नई शिक्षा नीति व भाषा थोपने आदि के चलते इन राज्यों व केंद्र के बीच राजनीतिक स्वार्थ के लिए विवाद से जन व देशहित का प्रभावित होना स्वाभाविक है। गुड गवर्नेंस वही है जो पूरे देश को संविधान के हिसाब से साथ लेकर चले। मायावती ने कहा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले खासकर शोषित-उपेक्षित गरीबों, दलितों, आदिवासियों व पिछड़े वर्ग आदि के बच्चे-बच्चियां अंग्रेजी का ज्ञान अर्जित किए बिना आगे चलकर आईटी व स्किल्ड क्षेत्र में कैसे आगे बढ़ सकते हैं, सरकार इस बात का जरूर ध्यान रखे। भाषा के प्रति नफरत अनुचित है। इसके पहले उन्होंने अपने पोस्ट में लिखा कि विदित है कि अन्य पार्टियों की तरह आए दिन सपा द्वारा भी पार्टी के ख़ासकर दलित लोगों को आगे करके तनाव व हिंसा का माहौल पैदा करने वाले अति विवादित बयानबाजी, आरोप-प्रत्यारोप व कार्यक्रम आदि का जो दौर चल रहा है, यह इनकी घोर संकीर्ण स्वार्थ की राजनीति ही प्रतीत होती है। उन्होंने आगे लिखा कि सपा भी दलितों के वोटों के स्वार्थ की खातिर यहां किसी भी हद तक जा सकती है। अतः दलितों के साथ-साथ अन्य पिछड़ों व मुस्लिम समाज आदि को भी इनके किसी भी बहकावे में नहीं आकर इन्हें इस पार्टी के राजनीतिक हथकंडों का शिकार होने से जरूर बचना चाहिए। ऐसी पार्टियों से जुड़े अवसरवादी दलितों को दूसरों के इतिहास पर टीका-टिप्पणी करने की बजाय यदि वे अपने समाज के संतों, गुरुओं व महापुरुषों की अच्छाइयों एवं उनके संघर्ष के बारे में बताएं तो यह उचित होगा, जिनके कारण ये लोग किसी लायक बने हैं।

तहसील स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक सम्पन्न

सिद्धार्थनगर। एसडीएम की अध्यक्षता में शनिवार को तहसील शोहरतगढ़ में तहसील स्तरीय टास्क फोर्स की बैठक हुई। एसडीएम राहुल सिंह ने नियमित टीकाकरण, टीडी अभियान, संचारी, दस्तक अभियान, मॉनीटरिंग, डाटा सर्विलांस, इनकार करने वाले परिवारों का टीकाकरण आदि बिंदुओं की समीक्षा किया। एसडीएम ने कहा कि टीकाकरण सहित अभियान के अन्य कार्यक्रम काफी महत्वपूर्ण हैं। जिस पर सभी विभागों द्वारा जागरूकता से कार्य करने की आवश्यकता है। एसडीएम ने स्वास्थ्य, शिक्षा, विकास विभाग, नगर पंचायत, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी लोग जिम्मेदारी पूर्वक अभियान को सफल बनाने में योगदान दे। इस दौरान बीइओ रामू प्रसाद, सुरेंद्र पाल, अशोक विश्वकर्मा, गौरीशंकर यादव, मनोज यादव आदि लोग मौजूद रहे।

वाहन चेकिंग 25 दोपहिया वाहनों से 33500 हजार रूपए का ई-चालान

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। कस्बा आर्य नगर बाजार में पुलिस वाहन चेकिंग अभियान चलाया गया जहां पर 25 दोपहिया वाहनों से 33500 हजार रूपए का ई-चालान काटा गया तथा आवश्यक दिशानिर्देश दिए गए साथ ही कस्बे में पैदल गश्त कर सुरक्षा बढ़ाई ।कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने और यातायात नियमों के पालन को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उप निरीक्षक अवनीश शुक्ला के नेतृत्व में एक विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान में हेड कांस्टेबल विनोद कुमार पांडे, हेड कांस्टेबल राकेश कुमार गौतम, कांस्टेबल सत्येंद्र यादव तथा कांस्टेबल पुनीत सिंह ने सक्रिय भूमिका निभाई। टीम द्वारा आर्य नगर बाजार में पैदल गश्त कर किया तथा बाजार क्षेत्र में पुलिस की उपस्थिति का सकारात्मक प्रभाव डाला। इस दौरान यातायात नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करते हुए 25दोपहिया वाहनों से बिना हेल्मेट , तीन सवारी,तथा ड्राइविंग लाइसेंस ना होने पर?355,00का ई-चालान किया गया।यह कार्रवाई न केवल नियमों के पालन को लेकर गंभीरता को दर्शाती है, बल्कि आम जनता में सुरक्षा की भावना को भी मजबूत करती है।स्थानीय नागरिकों ने भी पुलिस की इस तत्परता की सराहना की है।

ग्राम पंचायत अटसलिया के मगरा में प्रबुद्ध जन सम्मेलन का आयोजन हुआ सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई। संडीला तहसील क्षेत्र के अंतर्गत आज 19 अप्रैल को ग्राम पंचायत अटसलिया के मगरा में प्रबुद्ध जन सम्मेलन का आयोजन किया गया स्थान उपेंद्र सिंह प्रधान समाज सेवक मगरा के आवास पर जिसमें मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी की 161 विधानसभा संडीला विधायक अलका सिंह अर्कवंशी मौजूद रही और साथ मे मंडल अध्यक्ष मल्हेरा सर्वेश राठौर ग्रामीण मंडल अध्यक्ष संडीला संजीव त्रिपाठी पूर्व मंडल अध्यक्ष मल्हेरा पंकज अवस्थी कार्यक्रम संयोजक जिला उपाध्यक्ष सिद्ध प्रताप मौर्य मंडल उपाध्यक्ष मगरा प्रधान उपेंद्र सिंह प्रशांत गुप्ता पूर्व ब्लाक प्रमुख कुंवर वीरेंद्र सिंह राजा मल्हेरा समाजसेवी डॉ वेदप्रकाश मिश्राप्रबुद्ध जन सम्मेलन एक ऐसा आयोजन है जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्ध लोग एकत्रित होते हैं और विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करते हैं। इसका उद्देश्य समाज में जागरूकता बढ़ाना, विचारों का आदान-प्रदान करना और समस्याओं का समाधान खोजना होता है।

प्रबुद्ध जन सम्मेलन में अक्सर निम्नलिखित विषयों पर चर्चा होती है-

1. सामाजिक सुधार
2. शिक्षा और जागरूकता
3. आर्थिक विकास
4. सांस्कृतिक विरासत
5. पर्यावरण संरक्षण

इन सम्मेलनों में विशेषज्ञ, विद्वान, कलाकार, नेता और अन्य प्रभावशाली लोग भाग लेते हैं और अपने विचार साझा करते हैं। इससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में मदद मिलती है।

विश्व हिन्दू परिषद ने बंगाल की हिंसा को लेकर दिया महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई के सिनेमा चौराहे पर किया प्रदर्शन विहिप जिलामंत्री गौरव ने बताया बंगाल में हिन्दुओं के ऊपर हो रही हिंसा बेहद चिंता जनक है वक्फ कानून की आड़ में संपूर्ण बंगाल को जिस प्रकार हिंसा की आग में जलाया जा रहा है हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा है राष्ट्र विरोधी और हिंदू विरोधी तत्वों को निर्वाध रूप से उनके षडयंत्रो को क्रियान्वयित करने की खुली छूट दी जा रही है उससे यह स्पष्ट है कि बंगाल की स्थिति बड़ी ही चिंताजनक है शासकीय तंत्र दंगाइयों के सामने केवल निष्क्रीय ही नहीं अपितु कई स्थानों पर सहायक या प्रेरक बन गया हैइससे पहले की स्थिति नियंत्रित से बाहर हो जाये केंद्र सरकार को प्रशासन का नियंत्रण व संचालन अपने हाथों में लेना चाहिए तथा राष्ट्र विरोधी व हिंदू विरोधी तत्वों को उनके कर्मों के लिए कठोरतम सजा दिलवानी चाहिए और बंगाल में तत्काल प्रभाव से राष्ट्रपति शासन लगया जाना चाहिए।

मुस्लिम भीड़ द्वारा 11 अप्रैल, 2015 को वक्फ कानून के विरोध के नाम पर किया गया हिंसक प्रदर्शन कानून बनाने वाली सरकार के विरोध में नहीं अपितु हिंदुओं पर हिंसक आक्रमण के रूप में था जबकि हिंदू समाज का इस कानून के निर्माण में कोई भूमिका नहीं थी और यह एक शुद्ध संवैधानिक प्रक्रिया थी। इसका स्पष्ट अर्थ है कि वक्फ तो केवल बहाना था, असली उद्देश्य मुर्शिदाबाद को हिंदू शून्य बनाना था। इस उन्मादी जिहादी भीड़ ने हिंदुओं के 200 से अधिक घरों और व्यावसायिक दुकानों को लूटकर जलाया, सैकड़ो हिंदुओं को बुरी तरह घायल किया व तीन नागरिकों की निर्मम हत्या की गई। दर्जनों महिलाओं के शीलभंग भी किए गए। परिणाम स्वरूप 500 से अधिक हिंदू परिवारों को मुर्शिदाबाद से पलायन करना पड़ा ।

उनके पास जाकर उनकी चिंता एवं सहायता करने की अपेक्षा सुश्री ममता बनर्जी दंगा भड़काने वाले इमामो से मिल रही है जिनमें से एक इमाम ने एक दिन पहले ही धमकी दी थी कि ÷अगर ममता बनर्जी ने उनका साथ नहीं दिया तो वह उसकी औकात बता देंगे।÷ अब ये सारे तथ्य सामने आने पर यह समाचार मिल रहा है कि ममता जी अब शरणार्थियों को सुविधा देने की जगह उनको वापस जेहादियों के सामने जबरन परोसने का षड्यंत्र कर रही है। आज की बंगाल की स्थिति से यह स्पष्ट है कि ममता सरकार भारत के संघीय ढांचे को बंगाल में ध्वस्त कर अपनी सरकार और वोट बैंक को सुरक्षित रखने के लिए किसी भी सीमा तक जा सकती है। बंगाल में राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे में आ चुकी है ।बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों को निर्बाध रूप से आने दिया जा रहा है। उनके आधार कार्ड बनाए जा रहे हैं। पाकिस्तानी तथा बांग्लादेशी आतंकी संगठनों की सक्रियता बढ़ती जा रही है।

हिंदुओं के प्रति हिंसा बढ़ती जा रही है और न्यायालय के आदेश पर ही हिंदू त्योहारों को अनुमति मिल पाती है। उनको सुरक्षा देने वाले अर्धसैनिक बलों को निशाना बनाया जाता है।

हिंदू का अस्तित्व खतरे में पड़ चुका है। कानून व्यवस्था पूर्ण रूप से नष्ट हो चुकी है।तृणमूल के असामाजिक तत्व व जिहादी गुंडो के नियंत्रण व निर्देश पर ही प्रशासन काम करने के लिए विवश है। आज यह हिंसा मुर्शिदाबाद से निकलकर संपूर्ण बंगाल में फैलती जा रही है। अब यह बंगाल तक भी सीमित नहीं रहेगी। इसलिए देश की जनता मांग करती है कि- बंगाल में अविलंब राष्ट्रपति शासन लगाया जाए। बंगाल की हिंसा की जांच NIA के द्वारा करवाई जाए और दोषियों को अविलंब दंडित किया जाए। बंगाल की कानून व्यवस्था का संचालन केंद्रीय सुरक्षा बलों के हाथों में दिया जाए।

बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों की पहचान कर उनको निष्कासित किया जाए। बंगाल व बांग्लादेश की 450 किलोमीटर की सीमा पर तार लगाने का काम अविलंब प्रारंभ किया जाए जिसे ममता बनर्जी ने रोका हुआ था। हमें विश्वास है की राष्ट्र की सर्वभौमिक्ता और साम्प्रदायिक सदभाव बनाये रखने के लिए आप अविलम्ब और त्वरित कार्यवाही करेंगी। उक्त कार्यक्रम में मुख्य रूप से जिला कार्याध्यक्ष मोहित मिश्रा, जिला संयोजक बजरंग दल ऋषभ अग्निहोत्री जिला सह मंत्री राहुल नागेंद्र रवि, मनु, सीतू व हिंदू जनमानस उपस्थित रहे।

2036 के ओलंपिक खेलों का आयोजन गुजरात में कराने के प्रयास- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित ऐतिहासिक केडी. सिंह बाबू स्टेडियम में शनिवार को आयोजित 'सांसद खेल महाकुंभ' में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कई बातों का जिक्र किया। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार की खेलों और खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने की पहल का स्वागत किया। वहीं, इसे भारत के लिए मील का पत्थर भी करार दिया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा से भारत के कई सांसदों ने अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में खेल प्रतियोगिताएं आयोजित करके समाज के विकास के लिए एक नई राह तैयार की है। आज लखनऊ का नाम भी उस कड़ी में जुड़ गया है। किसी भी समाज के विकास के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि समाज में खेल और खिलाड़ियों के न केवल महत्व को समझा जाए, बल्कि उन्हें फलने-फूलने का पूरा अवसर भी दिया जाए। आज पूरा देश, नेशन फर्स्ट को पहले रखकर खिलाड़ियों की तरह सोच रहा है। उन्होंने कहा, "हमारे प्रधानमंत्री मोदी ने साल 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य रखा है। भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने में हर प्रदेश और देश के हर जिले के प्रत्येक नागरिक की भूमिका है। विकसित भारत के साथ विकसित उत्तर प्रदेश और विकसित लखनऊ का विचार भी सीधा जुड़ा हुआ है। इसलिए, भारत के हर नागरिक को एक लक्ष्य और एक संकल्प के साथ आगे बढ़ना होगा।"

रक्षा मंत्री ने कहा कि लखनऊ शहर अपनी स्पोर्टिंग कल्चर के लिए केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं, बल्कि देश-विदेश में जाना जाता था। जिन महान हॉकी खिलाड़ी केडी सिंह बाबू के नाम से यह स्टेडियम जाना जाता है, उन्होंने यहां काफी लंबा समय बिताया। हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले ध्यानचंद ने भी लखनऊ की खेल संस्कृति को संवारा है। उनके बेटे अशोक कुमार और विख्यात ओलंपियन जमन लाल शर्मा की यह कर्म भूमि रही है। भारत का पहला एस्ट्रो टर्फ भी इसी लखनऊ के स्पोर्ट्स कॉलेज में अस्सी के दशक में लगाया गया। लखनऊ में आजकल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मुकाबले हो रहे हैं, मगर एक समय था, जब इसी केडी सिंह बाबू स्टेडियम में शीशमहल ट्रॉफी नाम से एक क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन होता था और टीम इंडिया के बड़े खिलाड़ी लखनऊ में खेलते नजर आते थे। उन्होंने कहा कि लखनऊ अपनी स्पोर्टिंग कल्चर के लिए कितना विख्यात रहा है, यह इसी बात से समझा जा सकता है कि आजादी के बाद जब पहली बार नेशनल गेम्स का आयोजन किया गया तो हमारे-आपके इसी शहर में किया गया। उसके बाद भी समय-समय पर यहां नेशनल और इंटरनेशनल स्पोर्टिंग इवेंट्स आयोजित होते रहे हैं और आज यह सांसद खेल महाकुंभ भी लखनऊ के स्पोर्टिंग कैलेंडर में जुड़ गया है। एक समय था जब लोग खेल के महत्व को समझे बिना कहा करते थे कि खेलोगे कूदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब। आज वह सोच बदल चुकी है और खेलों और खिलाड़ियों के प्रति समाज की धारणा बदली है। आज माता-पिता अपने बच्चों को लिएंडर पेस, सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली, रोहित शर्मा, पीवी सिंधु, डी गुकेश और नीरज चोपड़ा जैसे खिलाड़ी और एथलीट के रूप में देखना चाहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि जब खिलाड़ी मैदान में उतरते हैं तो उनका एक ही लक्ष्य होता है, खुद को और टीम को विजयी बनाना। एक खिलाड़ी हमेशा टीम को इंडिविजुअल से ऊपर रखना जानता है। यही भावना आगे चल कर नेशन फर्स्ट के रूप में सामने आती है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश में एक नई स्पोर्टिंग कल्चर विकसित हुई है। पहले भारत के खिलाड़ी जीतने से अधिक पार्टिसिपेट करने पर ही संतुष्ट हो जाते थे। आज भारत के खिलाड़ी पूरी दुनिया में जहां कहीं भी जाते हैं, उन्हें गंभीरता से लिया जाता है। इस बदलाव के पीछे एक बड़ी वजह केंद्र और हमारी उत्तर प्रदेश सरकार की स्पोर्ट्स फ्रेंडली नीतियां भी हैं। आज 'खेलो इंडिया' के तहत तीन हजार से अधिक खिलाड़ियों को प्रति माह 50 हजार रुपए की सहायता दी जा रही है, जो उन्हें प्रशिक्षण,

आहार, कोचिंग, किट, आवश्यक उपकरण और अन्य जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है।

अपने संबोधन में रक्षा मंत्री ने कहा कि जमीनी स्तर पर लगभग 1,000 खेलो इंडिया केंद्रों में हजारों खिलाड़ी प्रशिक्षण ले रहे हैं। आज के बदलते भारत में छोटे शहरों की प्रतिभाओं को खुलकर आगे आने का मौका मिल रहा है। आज जो खेल महाकुंभ यहां आयोजित किया जा रहा है, उसके परिणाम आने वाले वर्षों में साफ दिखाई देंगे, जब लखनऊ के युवा खिलाड़ी बड़ी संख्या में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतेंगे। खेलों को हम लोग बहुत गंभीरता से लेते हैं। आज हमारी सरकार 2036 में होने वाले ओलंपिक खेलों का आयोजन गुजरात में करने के लिए पूरा प्रयास कर रही है। वहीं, अन्य विश्व स्तरीय खेलों का भी आयोजन भारत में हो इसका भी प्रयास चल रहा है।

जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने समाधान दिवस में सुनी लोगों की समस्याएं

गाँव में विवाद होने की स्थिति में पुलिस टीम तत्काल मौके पर जाये-नीरज कुमार जादौन

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई संडीला तहसील सभागार में आयोजित तहसील समाधान दिवस में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह व पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने आमजन की समस्याओं को सुना। लोगों की शिकायत सुनते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि चकरोड मार्ग से अवैध कब्जे हटाए जाएं। पैमाइश के प्रकरणों को अनावश्यक रुप से लंबित न रखा जाये। अविवादित वरासत के प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किया जाये। म्यूटेशन के वादों को अनावश्यक रुप से ख़ारिज न किया जाये। सरकारी जमीन पर अवैध कब्जे के मामले में त्वरित कार्रवाई की जाये। कृषि भूमि पर किसी विवाद के मामले में राजस्व टीम पुलिस टीम के साथ मौके पर जाये। आय प्रमाण पत्र जारी करने से पूर्व अच्छी तरह से सत्यापन कर लिया जाये। फत्तेपुर ग्राम के गलत आय प्रमाणपत्र जारी करने के एक प्रकरण में लेखपाल राहुल रस्तोगी को निलंबित करने के निर्देश दिए। झरोइया ग्राम में गलत अंश निर्धारण को दुरुस्त करने में देरी पर कानून गो व लेखपाल को प्रतिकूल

प्रविष्टि देने के निर्देश दिए। संडीला विकास खण्ड के ग्राम सिकरोरी के मजरा नटपुरवा की रन्नो ने शिकायत की कि उनको एक वर्ष से अधिक समय से मनरेगा मजदूरी नहीं मिली है। जिलाधिकारी ने नाराजगी जताते हुए तत्काल उपायुक्त मनरेगा व बीडीओ को 10 दिन में मजदूरी दिलाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कार्रवाई न होने पर सम्बंधित की जवाबदेही तय की जाएगी। उन्होंने कहा कि शिकायत निस्तारण में गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाये। पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने कहा कि गाँव में किसी विवाद की स्थिति में पुलिस टीम तत्काल मौके पर जाये। गरीब व्यक्ति को न्याय दिलाने के लिए त्वरित कार्रवाई की जाये। इस अवसर पर पीडी पीपी त्रिपाठी, उप जिलाधिकारी संडीला अरुणिमा श्रीवास्तव, जिला सूचना अधिकारी संतोषक कुमार व पुलिस क्षेत्राधिकारी सत्येंद्र सिंह व अन्य सम्बंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

नवागंतुक खंड शिक्षा अधिकारी ने की परिचय बैठक

स्वतंत्र प्रभात

हरदोई हरियावाँ विकास खण्ड के ब्लाक सभागार मे खंड शिक्षा अधिकारी अनिल कुमार झा ने खंड स्तर से आये प्राइमरी जूनियर के प्रधान अध्यापकों की मीटिंग आहूत की। जिसमे खंड शिक्षा अधिकारी ने आये सभी अध्यापकों का क्रम वार परिचय प्राप्त किया व टीम भावना के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित किया। स्कूल पुस्तकालय व खेल कूद की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये प्रेरित किया । शिक्षण कार्य समदर्शिकाओ को ध्यान मे रखकर पाठ्य योजना बनाकर पढ़ाने के लिए प्रेरित किया। पढ़ाते समय टी एल एम का उपयोग प्रिंट रिच मटेरियल का उपयोग करके किया जाये । सभी विद्यालयो मे रगाई पुताई करायी जाये ऑपरेशन काया कल्प के अंतर्गत आने वाले विकास कार्यो को प्रधानो से सामंजस्य स्थापित करके शीघ्र पूर्ण कराया जाय। नये शैक्षिक सत्र मे

किताबो का वितरण शत प्रतिशत सुनिश्चित किया जाय। और ये भी कहा जो प्रधाना अध्यापक अच्छा कार्य करेगे उन्हें सम्मानित किया जायेगा। शिक्षक अभय? सिंह, आशीष दीक्षित, के के कोहली, शशिकांत पाण्डेय, अश्वनी सिंह, मानवेंद्र मिश्र, प्रशांत शुक्ल, पी टी आई कैलाश नाथ मिश्र, विवेक मिश्र शिक्षक संघ ब्लॉक अध्यक्ष हरियावाँ आदि सम्मानित शिक्षक शिक्षिकाये मौजूद रहे।

निजी अस्पताल के आईसीयू में एयर होस्टेस से यौन उत्पीड़न का आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

गुरुग्राम। हरियाणा के गुरुग्राम में एक निजी अस्पताल के आईसीयू में एयर होस्टेस से यौन उत्पीड़न के मामले में पुलिस ने शुक्रवार को आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। अस्पताल के अंदर और बाहर लगे कम से कम 800 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का विश्लेषण करने के बाद आरोपी को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान बिहार के मुजफ्फरपुर निवासी 25 वर्षीय दीपक के रूप में हुई है। वह पिछले पांच महीने से अस्पताल के आईसीयू में ट्रीटमेंट मशीन टेक्नीशियन के तौर पर काम कर रहा था।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि आरोपी को शनिवार को अदालत में पेश किया जाएगा और पुलिस आगे की जांच के लिए उसकी हिरासत की मांग करेगी। मामले से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को सदर थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किए गए आरोपी ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

डीसीपी (मुख्यालय) अर्पित जैन ने बताया, "घटना की जांच करते हुए पुलिस की आठ टीमों ने अस्पताल में लगे 800 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली और डॉक्टरों समेत करीब 50 अस्पताल कर्मचारियों से घटना के बारे में पूछताछ की। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीमों ने हर पहलू से जांच की और घटना से जुड़ी कई जानकारियां जुटाई, जिसके चलते पुलिस को वारदात को अंजाम देने वाले आरोपी की पहचान करने में बड़ी सफलता मिली।" इससे पहले, गुरुवार को गुरुग्राम पुलिस कमिश्नर विकास कुमार अरोड़ा ने आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी के लिए एसआईटी गठित की थी। डीसीपी जैन की अध्यक्षता में गठित एसआईटी में आठ अलग-अलग पुलिस टीमें शामिल थीं, जिन्हें घटना से संबंधित जानकारी और सबूत इकट्ठा करने के लिए विशेष निर्देश दिए गए थे।

एसीपी सदर यशवंत, एसीपी सीएडब्ल्यू कविता, सदर एसएचओ इंस्पेक्टर सुनील कुमार, महिला पुलिस पश्चिम एसएचओ इंस्पेक्टर गीता, सीआईए प्रभारी सेक्टर 40

इंस्पेक्टर अमित कुमार और जांच अधिकारी सहायक उपनिरीक्षक सोनिका की अगुवाई वाली आठ अलग-अलग टीमों ने मामले से संबंधित विभिन्न जानकारी एकत्र की। 46 वर्षीय एयर होस्टेस ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया था कि 6 अप्रैल को गुरुग्राम के एक प्रसिद्ध निजी अस्पताल की गहन चिकित्सा इकाई (आईसीयू) में वेंटिलेटर सपोर्ट पर रहने के दौरान उसके साथ यौन उत्पीड़न किया गया था। यह मामला 13 अप्रैल को तब सामने आया, जब उसने अपने पति को यौन उत्पीड़न के बारे में बताया, जिसने पुलिस को सूचित किया और शिकायत दर्ज कराई।

पूर्ण समर्पण से ही मिलती है सफलता- पं. झिलमिल महाराज

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के ऐहार गांव स्थित बाल्हेश्वर मंदिर के निकट ऋषि आश्रम में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के छठवें दिन कथा व्यास पं. झिलमिल महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी कार्य में अति समर्पण ही सफलता का मूल मंत्र होता है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए स्पष्ट किया कि बिना समर्पण और निस्वार्थ भाव के जीवन में किसी लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। कथा के दौरान पं. झिलमिल महाराज ने द्रौपदी चीर हरण प्रसंग का मार्मिक वर्णन करते हुए बताया कि संकट की घड़ी में द्रौपदी ने भगवान श्रीकृष्ण को पूर्ण समर्पण भाव से पुकारा और प्रभु ने उनकी लाज की रक्षा की। यह प्रसंग इस बात का उदाहरण है कि जब भक्त पूरी श्रद्धा से भगवान को याद करता है तो भगवान स्वयं उसकी सहायता के लिए प्रकट हो जाते हैं। इसके अलावा रुक्मणी विवाह, कंस वध, कुब्जा उद्धार, अक्रूर मिलन जैसे अन्य प्रसंगों का भी बेहद मार्मिक वर्णन किया गया।

महाराष्ट्र को तमिलनाडु मत बनाओ राज !

भाषाई विवाद से दक्षिण अभी तक मुक्त नहीं हुआ है और एक बार फिर महाराष्ट्र भाषाई विवाद में उलझता दिखाई दे रहा है। महाराष्ट्र सरकार ने राज्य के सभी विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक हिंदी को तीसरी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाये जाने का फैसला किया तो महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के प्रमुख राज ठाकरे इसके विरोध में आ गए। अब एकनाथ शिंदे गुट ने उन पर निशाना साधा है। जाहिर है कि महाराष्ट्र में भाजपा के नेतृत्व वाली भाजपा की सरकार है सो उसका हिंदी के खिलाफ जाना नामुमकिन है। भारत में भाषा को लेकर विवाद नया नहीं है। आजादी के 77 साल बाद भी ये विवाद न सिर्फ ज़िंदा है बल्कि लगातार जारी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में तीन भाषाओं को पढ़ाने का प्रावधान आने के बाद, दक्षिण में केंद्र सरकार और तमिलनाडु सरकार के बीच हिंदी-तमिल विवाद ने और जोर पकड़ा है। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने हिंदी को मातृभाषाओं का 'हत्यारा' तक कह डाला। उनका आरोप है कि केंद्र सरकार हिंदी थोपकर भाषाई अस्मिता को कमजोर कर रही है। डीएमके नेता कनिमोझी ने भी इस मुद्दे पर कहा कि उनकी आपत्ति हिंदी को थोपे जाने से है, न कि भाषा को लेकर।

सवाल ये है कि क्या किसी एक देश की एक भाषा होना चाहिए या नहीं ? सवाल ये भी है की क्या अहिन्दी भाषी राज्य एक स्वतंत्र राष्ट्र हैं जो वे अपनी मातृभाषा को ही अपनी राजभाषा बनाये रखना चाहते हैं। सवाल ये भी है कि क्या नई शिक्षा नीति में सचमुच हिंदी अहिन्दी भाषियों पर थोपी जा रही है ? हर भाषा- भाषी को अपनी मातृभाषा पर गर्व होता है ,होना भी चाहिए किन्तु क्या केवल क्षेत्रीय भाषाओँ के बूते कोई एक राष्ट्रआगे बढ़ सकता है ? इन सवालों का जबाब खोजने के बजाय दक्षिण के राज्य हिंदी के अंध विरोध में संघर्षरत हैं। हिंदी के विरोध से किसी को क्या नफ़ा-नुक्सान होता है इसके बारे में कोई कुछ नहीं बोलता। महाराष्ट्र सरकार के इस फैसले का महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) अध्यक्ष राज ठाकरे ने विरोध किया है। ठाकरे ने एक बयान में कहा है कि मैं स्पष्ट शब्दों में कहता हूं कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना इस अनिवार्यता को बर्दाश्त नहीं करेगी। राज ठाकरे ने इसमें लिखा है 'हम हिंदू हैं, लेकिन हिंदी नहीं! अगर आप महाराष्ट्र को हिंदी के रंग में रंगने की कोशिश करेंगे, तो महाराष्ट्र में संघर्ष होना तय है।'ठाकरे ने लिखा है अगर आप यह सब देखेंगे, तो आपको लगेगा कि सरकार जानबूझकर यह संघर्ष पैदा कर रही है। क्या यह सब आने वाले चुनावों में मराठी और गैर-मराठी के बीच संघर्ष पैदा करने और उसका फायदा उठाने की कोशिश है?

राज ठाकरे महाराष्ट्र के स्टालिन नहीं हैं हालाँकि उनका अपना रूतबा है ,अपनी ताकत है। वे स्टालिन की तर्ज पर हिंदी का विरोध कर महाराष्ट्र का और मराठी भाषा का भला शायद नहीं कर पाएंगे। क्योंकि महाराष्ट्र देश की आर्थिक राजधानी है और वहां पूरा देश ही नहीं बल्कि दुनिया एकाकार होती है। महाराष्ट्र में रहने वालों को जितनी मराठी की जरूरत है उतनी ही हिंदी की भी। मैं राज ठाकरे का निजी तौर पर प्रशसंक हूँ किन्तु उन्हें मश्विरा देना चाहूंगा कि वे हिंदी का विरोध छोड़ दें। हिंदी न तो मुगलों की भाषा है और न अंग्रेजों की । हिंदी न तमिल के खिलाफ है और न मराठी के खिलाफ। भाषाओं का वजूद उनके इस्तेमाल से बनता-बिगड़ता है। कोई भाषा किसी भाषा का नुक्सान तब तक नहीं कर सकती जब तक की उसके बोलने वाले ऐसा न चाहें। दुनिया में भारत की तरह बहुत से देश बहु भाषा भाषी हैं। दुनिया के बहु भाषाभाषी देश ऐसे हैं जो बहुभाषाभाषी होते हुए भी एक राष्ट्रीय भाषा के पक्षधर हैं। हमारे पड़ौस चीन में 306 भाषाएँ हैं और हमारे यहां 453 भाषाएँ लेकिन क्या हम भाषाओं की वजह से दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ व्यवस्था बन पाए ? बहरहाल भाषा किसी कोहिंदू,मुसलमान,सिख या ईसाई नहीं बनाती। आप हिंदी बोलकर मराठी होने का गौरव नहीं खो देते। तमिल वाले ऐसा सोचते हैं लेकिन दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा होने के बाद तमिल को कुल 120 मिलियन लोग बोलते हैं जबकि अंग्रेजी को । 268 बिलियन और चीनीदुसरे और हिंदी इस मामले में तीसरे नंबर पर है । हिंदी बोलने वालों की संख्या 637 मिलियन ही है।

राज भाई साहब को समझना चाहिए कि हिंदी सीखकर कोई मुसलमान या ईसाई नहीं हो सकता वो जो है वो ही रहेगा । मराठी है तो मराठी रहेगा ,इसलिए उन्हें अपना हिंदी विरोध छोड़ देना चाहिए। मुझे पता है कि राज ठाकरे की शिवसेना में एक से बढ़कर एक हिंदी भाषी दिग्गज हैं। उन्होंने मराठी भी सीख ली है ,लेकिन किसी के कहने पर नहीं बल्कि अपनी जरूरत के हिसाब से। इसी तरह हिंदी सीखकर किसी की मराठी अस्मिता समाप्त हो जाएगी ,ये धारणा बनाना ही गलत है। राजनीति के लिए भाषा के अलावा और दूसरे तमाम मुद्दे है। भाषायी आधार पर राजनीति करने से न तमिलनाडु की कोई राजनितिक पार्टी आजतक राष्ट्रीय पार्टी बन पायी हौर न महाराष्ट्र की किसी राजनितिक पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा मिल पाया। राज ठाकरे का तर्क है कि देश के तमाम राष्ट्रों का गठन भाषायी आधार पार किया गया था,सही है लेकिन भाषायी आधार पर राज्य के गठन का ये अर्थ ये तो नहींहै कि वे किसी एक भाषा के जरिये सम्पर्क सूत्र में नहीं बन सकते। अतीत में जब मनसे नहीं थी तब भी भाषायी आधार पर गैर मराठियों के साथ आंदोलन भी हुए और गैर मराठियों कोमहारष्ट्र से खदेड़ने की कोशिशें भी। लेकिन क्या महाराष्ट्र गैर मराठियों से रिक्त या मुक्त हो गया ? राज भाई साहब को समझना चाहिए कि वे जिस दौर की दुनिया में है वहां न रंग के आधार पर , न जाति के आधार पार और न भाषा के आधार पर किसी से भेद नहीं किया जा सकता। भाषायी अस्पृश्यता भी उतनी ही खराब है जितनी कि जातीय अस्पृश्यता। इसलिए हिंदी का विरोध करने से फायदा कम नुकसान जयदा होगा।

मुमकिन है कि कल को हिंदी के मुद्दे को लेकर राज ठाकरे की नमस्ते एकनाथ शिंदे की शिवसेना के साथ हाथ मिला ले लेकिन इससे न राज्य की सरकार अस्थिर होगी और न उसे ब्लैकमेल किया जा सकेगा। हिंदी के विरोध के किसी भी आंदोलन से महाराष्ट्र का महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था और संस्कृति का नुक्सान होगा। दक्षिण वाले हिंदी का विरोध कर अपने सूबे की सियासत में तो टिके हैं लेकिन वे राष्ट्रीय राजनीति का हिस्सा नहीं बन पाए हैं। हम चाहते हैं कि राज ठाकरे जैसे प्रतिभाशाली युवा राष्ट्रिय राजनीति का हिस्सा बनें ,किन्तु इसके लिए राज ठाकरे को अपनी भाषायी प्रतिबद्धता का त्याग करना पड़ेगा। क्योंकि हिंदी के साथ खड़े होने का अर्थ मराठी या मराठियों का विरोध या उनके हितों का अतिक्रमण नहीं है।

राकेश अचल

संपादकीय

स्वास्थ्य और शिक्षा अब सेवा नहीं बड़ा व्यवसाय है

शिक्षा और स्वास्थ्य दो ऐसे मुद्दे हैं जो आम आदमी को वर्षों से कचोट रहे हैं लेकिन अब तक इन पर कोई नकेल नहीं कसी जा सकी है। अच्छी शिक्षा और अच्छे स्वास्थ्य की परिकल्पना हर कोई करता है लेकिन यही दो चीजें आम आदमी की पहुंच से दूर होती जा रहीं हैं। सरकारी स्कूलों और सरकारी चिकित्सालयों की दशा किसी से छिपी नहीं है। और प्राइवेट में जो लूट मची हुई है उससे हर कोई परेशान है। ऐसा कौन सा कारण है जो दवाओं के आसमान छूते दाम और स्कूलों की मनमानी फीस और तथा किताबों के बेतहाशा बढ़े दामों पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। एक समय था जब शिक्षा और स्वास्थ्य को एक सेवा के रुप में जाना जाता था लेकिन अब यही सबसे बड़ा व्यापार बन चुका है। तमाम ऐसे बड़े प्राइवेट अस्पताल और लैबोरेटरी हैं जो शेयर बाजार तक में लिस्टिड हैं। ऐसा भी नहीं है कि सरकार को इस विषय में जानकारी नहीं है। लेकिन इनके आगे सरकारें क्यों मजबूर हैं इसकी जानकारी किसी को नहीं है। पहले हम स्वास्थ्य की बात कर लेते हैं। यह सच है कि सरकार ने स्वास्थ्य को लेकर तमाम सरकारी सेवाएं शुरू की हैं। सरकारी अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ी हैं। महंगी दवाओं का विकल्प भी सरकार ने प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र के रुप में दिया है लेकिन यह न काफी है। एक मिडिल क्लास व्यक्ति सीधे प्राइवेट अस्पताल की तरफ भागता है वहां न तो सस्ते अस्पताल हैं और न ही सस्ती दवाइयां। अस्पतालों की लूट की कहानी हर किसी को पता है लेकिन सरकार के नियंत्रण से बाहर है। एक प्राइवेट डाक्टर यदि दवा लिखता है तो वह केवल निर्धारित मेडिकल स्टोर पर ही मिलेगी। उनमें इस तरह की सैटिंग होती है की 40 से 50 फीसदी तक मार्जिन होता है। जिसका कुछ भाग डाक्टरों के पास भी जाता है। इसी तरह मेडीकल जांचों में भी बहुत बड़ा खेल होता है। निर्धारित पैथॉलाजी या स्कैन सेंटर पर ही जांच के लिए भेजा जाता है। जिसमें सीधे तौर पर 20 से 30 फीसदी तक डाक्टर का कमीशन होता है। अन्य पैथालॉजी की जांच डाक्टर अमान्य कर देते हैं।

प्राइवेट अस्पतालों का बैड चार्ज, नर्सिंग चार्ज, महंगी दवाइयां आम आदमी की कमर तोड़ देती हैं वहीं यदि आईसीयू की नौबत आ जाए तब तो मरीज का घर मकान सब बिकने की नौबत आ जाती है। इसके लिए कोई नियम कायदे कानून नहीं हैं। बताया जाता है कि बड़े अस्पतालों की बड़ी सैटिंग रहती है इसलिए जनपद के सीएमओ और जिलाधिकारी भी हाथ नहीं डालते हैं और वहां की लूट निरंतर जारी रहती है। कानपुर में अभी हाल ही में एक सत्ता पक्ष के विधायक ने एक बड़े अस्पताल को सोशल मीडिया पर खूब खरी-खोटी सुनाई थी। लोगों से रिव्यू लिए थे। यहां तक कि यह बोल दिया था कि यह कानपुर का सबसे लुटेरा अस्पताल है। काफी दिन तक यह मामला सोशल मीडिया पर छाया रहा उसके बाद सब कुछ शांत हो गया। हो सकता है कि विधायक जी कुछ समझौता हो गया हो। बहरहाल चिकित्सा क्षेत्र में लूट बदस्तूर जारी है और हाल फिलहाल इसका कोई हल निकलता नहीं दिखाई दे रहा है। सेवा क्षेत्र का दूसरा नाम है शिक्षा जो आजकल काफी फल-फूल रहा है। स्कूल मालिक एक के दो और दो के चार स्कूल बनाते चले जा रहे हैं। क्यों कि आप एक बार बच्चे का एडमिशन करा दें फिर तो पूरी साल उन स्कूलों को चढ़ौती चढ़ानी ही है। यदि शिक्षा के स्तर की बात करें तो आप यदि बच्चों को घर पर नहीं पढ़ाते हैं और कोचिंग नहीं कराते हैं तो स्कूली शिक्षा से कुछ नहीं होने वाला है। एक फर्स्ट क्लास के बच्चे की बुक 4000 क़ीमत की आ रहीं हैं और वो भी उनकी निर्धारित दुकानों पर ही मिलेंगी। शिक्षा सत्र शुरू होने पर अधिकारी कुछ नकेल कसते हैं लेकिन बाद में हालात फिर पहले जैसे ही हो जाते हैं। और शिक्षा का यह व्यापार पूरे साल चलता रहता है। फीस की भी इतनी कैटागिरी हैं कि समझ नहीं आता कि हम बच्चे को पढ़ा रहे हैं या बिल्डिंग मेंटीनेंस देकर हम स्कूलों की बिल्डिंग तैयार करवा रहे हैं।

देश में शिक्षा एक समान होनी चाहिए। एक कक्षा की किताब एक होनी चाहिए। जिससे यह लूट खसोट को बंद किया जा सके। अभी कुछ समय पहले मध्यप्रदेश के भिंड जिले के जिलाधिकारी का एक सर्कुलर देखने को मिला था जिसमें उन्होंने सभी कक्षाओं की किताबों के दाम फिक्स कर दिए थे। ऐसा पूरे देश में क्यों नहीं हो सकता। आखिर एनसीईआरटी की किताबों में क्या कमी है। एनसीईआरटी की बुक्स का अध्ययन करके बच्चे देश की सर्वाधिक कठिन परीक्षा यूपीएससी की तैयारी करते हैं। फिर ये स्कूल एनसीईआरटी बुक्स चलाने में क्यों बचते हैं, क्यों महंगी किताबें लगाते हैं। इन सभी बातों को देश के शिक्षा मंत्री और प्रदेश के शिक्षा मंत्री को समझना चाहिए। नहीं तो यह शिक्षा ऐसे ही बर्बाद होती रहेगी। शिक्षा केंद्र के नाम पर जो लूट खसोट मची है इस पर यदि जल्द निर्णय नहीं लिया गया तो आगे हालात और भी खराब हो सकते हैं।

- जितेन्द्र सिंह पत्रकार

चोरी और सीनाजोरी की नई कवायद करती न्यायपालिका

एक ओर हाइकोर्ट के एक जज के आवास मे बोरों में रखे धू धू कर जल रहे करोड़ों की करेंसी नोट न्यायिक व्यवस्था में झोल और भ्रष्टाचार का पर्दाफाश कर रहे हैं दूसरी ओर मीलार्ड महामहिम राष्ट्रपति को समयबद्ध काम करने का निर्देश जारी कर अपनी सीमाओं को लांघ रहे हैं। अपने देश में न्यायपालिका और विधायिका में टकराव कोई नई बात नहीं है और एक बार फिर से यह टकराव खुलकर सामने आ गया है। तमिलनाडु में राज्य सरकार बनाम राज्यपाल विवाद अब सुप्रीम कोर्ट और राष्ट्रपति की शक्तियों तक आ पहुंचा है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट द्वारा विधेयकों को पास करने की समय सीमा निर्धारित करने के बाद देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने नाराजगी जतायी है। देश की न्यायपालिका के खिलाफ कड़े शब्दों का इस्तेमाल करते हुए कहा है कि हम ऐसी स्थिति नहीं बना सकते, जहां अदालतें राष्ट्रपति को निर्देश दें। संविधन के अनुच्छेद 142 के तहत कोर्ट को मिले विशेष अधिकार लोकतांत्रिक शक्तियों के खिलाफ न्यूक्लियर मिसाइल बन गए हैं। दरअसल तमिलनाडु में राज्यपाल द्वारा विधेयकों को लंबे समय से लंबित रखने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में कहा था कि अगर कोई विधेयक राष्ट्रपति के पास विचार के लिए भेजा जाता है, तो राष्ट्रपति को इस पर तीन महीने के अंदर कार्रवाई करनी होगी। सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले के बाद विधेयकों को लंबित रखने के मामले में समयसीमा निर्धारित कर दी है और इससे पहले विधेयकों को लॉथत रखने की कोई समयसीमा निर्धारित नहीं थी। सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा है कि यदि राज्य कैबिनेट या मंत्रिमंडल की सलाह पर राज्यपाल विधेयक को रोकते हैं या फिर राष्ट्रपति के पास भेजते हैं, तो राज्यपाल को उस पर एक महीने के भीतर कार्रवाई करनी होगी। अगर राज्य मंत्रिमंडल की सलाह के उलट राज्यपाल विधेयक को मंजूरी नहीं देते हैं या राष्ट्रपति के पास विधेयक को विचार के लिए भेजते हैं, तो उन्हें यह कार्रवाई तीन महीने के अंदर करनी होगी। राष्ट्रपति के पास कोई विधेयक पहुंचता है, तो उनके पास भी इस पर फैसला लेने का तीन महीने का वक्त होगा। यदि राज्य विधानसभा किसी विधेयक को फिर से पारित कर देती है और उसे राज्यपाल के पास दोबारा मंजूरी के लिए भेजा जाता है तो राज्यपाल को एक महीने के भीतर मंजूरी देनी होगी। सुप्रीम कोर्ट के इसी निर्देश पर उपराष्ट्रपति ने न्यायपालिका की भूमिका और पारदर्शिता की कमी की घटनाओं को लेकर चिंता जताई है। न्यायपालिका द्वारा कार्यपालिका और विधायिका के क्षेत्र में हस्तक्षेप को लेकर तीखे सवाल उठाए। हाल ही में एक जज के आवास पर हुई घटना, उन पर एफआईआर दर्ज न होने और राष्ट्रपति को सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मद्देनजर ये सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि देश ने ऐसे लोकतंत्र की कल्पना नहीं की थी, जहां जज कानून बनाएंगे, कार्यपालिका का काम भी काम खुद ही करेंगे और सुपर संसद की तरह काम करेंगे। राष्ट्रपति के अनुसार संविधान के अनुच्छेद 145(3) के तहत सुप्रीम कोर्ट का प्रमुख कार्य संविधान की व्याख्या करना है और यह कार्य कम से कम पांच न्यायाधीशों की पीठ द्वारा ही किया जाना चाहिए। संविधान में कहीं यह प्रावधान नहीं है कि न्यायपालिका राष्ट्रपति को आदेश दे सकती है। संविधान राष्ट्रपति को देश की सेना का सर्वोच्च कमांडर और संविधान की रक्षा, संरक्षण और पालन का उत्तरदायी बनाता है। ऐसे में न्यायपालिका द्वारा राष्ट्रपति को निर्देश देना संविधान की भावना के विपरीत है। अदालत द्वारा राष्ट्रपति को एक तय समय सीमा में निर्णय लेने का निर्देश दिया गया, जो न्यायिक दायरे से परे है। न्यायपालिका का कर्तव्य संविधान के दायरे में रहकर उसकी व्याख्या करना है, न कि कार्यपालिका की भूमिका निभाना। उपराष्ट्रपति ने अनुच्छेद 142 का जिक्र करते हुए इसे लोकतांत्रिक संतुलन के लिए एक चुनौती बताया। उन्होंने कहा कि यह प्रावधान अब %न्यूक्लियर मिसाइल% की तरह हो गया है, जो हर समय न्यायपालिका के पास उपलब्ध रहता है। अगर देखा जाए तो सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद से यह बहस छिड़ा हुआ है कि क्या सुप्रीम कोर्ट राष्ट्रपति को आदेश दे सकता है। हालांकि सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय राजनैतिक कारणों से किसी भी विधेयक को रोकने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने के लिए है। अगर सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय को देखा जाए तो यह आम जनता और निर्णय प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की दिशा में सही कदम है। लेकिन राष्ट्रपति को देकर आदेश कितना वैध है ? संविधान के अनुच्छेद 145 (3) में अनिवार्य है। अनुच्छेद 145 (3) में कहा गया है कि संविधान की व्याख्या के संबंध में विधि के किसी सारवान प्रश्न से संबंधित किसी मामले का निर्णय करने के लिए या अनुच्छेद 143 के अंतर्गत किसी संदर्भ की सुनवाई के लिए न्यायाधीशों की न्यूनतम संख्या पाँच होगी। इसमें ऐसे मामलों की सुनवाई करने के लिए संविधान पीठ का विकल्प नहीं दिया गया है। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने जो निर्णय दिया है, वह संविधान के अनुच्छेद 200 और 201 की व्याख्या करके दिया है।

सुप्रीम कोर्ट की यह बेंच ना संवैधानिक थी और ना ही इसमें न्यूनतम पांच जज थे। ऐसे में सवाल यह है कि संविधान के अनुच्छेद 145 (3) का अबंधन करके सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिया गया निर्णय वैध है या नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि कार्यपालिका को खुद जज नहीं बनना चाहिए, उसे संवैधानिक मामलों से जुड़े मामलों को अनुच्छेद 143 के तहत सुप्रीम कोर्ट भेजना चाहिए। अब ध्यान देने वाली बात ये है कि संविधान के मसलों से जुड़े ऐसे प्रश्नों को हल करने के लिए संविधान के निर्माताओं ने उसमें अनुच्छेद 145 (3) का प्रावधान किया था, ताकि उस पर विद्वान जजों की बहुमत द्वारा विश्लेपण किया जा सके। संविधान का अनुच्छेद 143(1) कहता है कि यदि किसी समय राष्ट्रपति को प्रतीत होता है कि विधि या तथ्य का कोई प्रश्न उत्पन्न हुआ है या उत्पन्न होने की आशंका है, जो ऐसी प्रकृति का और ऐसे महत्व का है कि उस पर उच्चतम न्यायालय की राय प्राप्त करना समीचीन होगा तो वह उस प्रश्न पर विचार करने के लिए न्यायालय को %निर्देशित% करेगा और वह न्यायालय, ऐसी सुनवाई के पश्चात जो यह ठीक समझता है, राष्ट्रपति को उस पर अपनी राय प्रतिवेदित करेगा। दरअसल, संविधान के अनुच्छेद 124 के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई थी। इसमें तब सुप्रीम कोर्ट के लिए एक मुख्य न्यायाधीश और इसके साथ ही 7 अन्य न्यायाधीश की बात कही गई थी। अनुच्छेद 145 (3) में साफ कहा गया है कि ऐसे मामलों की सुनवाई के लिए न्यूनतम पांच जज होंगे। यानी कुल 8 जजों में से कम से कम 5 जज यानी कम से कम 62 प्रतिशत जन शामिल रहेंगे। इस तरह देखें तो सुप्रीम के वर्तमान पीठ में सिर्फ दो जज थे। अब अगर अनुच्छेद 143 की बात करें तो इसमें सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान जजों की कुल 33 में से कम से कम 21 न्यायाधीश शामिल होने चाहिए, जो इस तरह के संवैधानिक मामले पर सुनवाई करें। इतना ही नहीं, वर्तमान निर्णय में सुप्रीम कोर्ट ने अनुच्छेद 200 और 201 में समय-सीमा का प्रावधान जोड़ा है, जो यह उसके अधिकार क्षेत्र का नहीं है। संविधान भारत के राष्ट्रपति और अदालतों का कार्य अलग-अलग है। संविधान के अनुसार देश का राष्ट्रपति देश का सबसे बड़ा पद होता है। वहीं सुप्रीम कोर्ट न्यायपालिका की सबसे बड़ी इकाई है। सुप्रीम कोर्ट देश के राष्ट्रपति को सलाह दे सकता है, लेकिन राष्ट्रपति के लिए उसे मानना बाध्यकारी नहीं है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट को ऐसा आदेश देने से बचना चाहिए, जिसकी अवमानना का खतरा हो। लक्ष्मणरेखा का ध्यान न्यायपालिका, संसद और कार्यपालिका सभी को रखना चाहिए। अदालतों के कई फैसले कार्यपालिका के अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण जैसे हैं। इससे न्यायपालिका और कार्यपालिका में टकराव की स्थिति बनती है। संविधान ने सभी पक्षों के लिए कुछ सीमाएं तय की हैं। इनका पालन ही समाज और देश के हित में है।मीलार्ड को अपनी हदों को पहचानना होगा।

मनोज कुमार अग्रवाल

अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन से भाजपा उत्साहित

अन्नाद्रुमुक के साथ अपने नए गठबंधन की घोषणा को लेकर भाजपा इतनी उत्साहित थी कि पहली बार पार्टी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की प्रेस कॉन्फ्रेंस को कवर करने के लिए पत्रकारों के एक समूह को चेन्नई भेजा। हिंदी और अंग्रेजी मीडिया समूहों के दस पत्रकारों को चेन्नई में एक बड़ी घोषणा करने के वादे के साथ एक दिवसीय यात्रा के लिए भेजा गया था। कुछ समय से भाजपा को कवर कर रहे एक पत्रकार के अनुसार, नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से पार्टी ने इस तरह की मीडिया यात्रा की व्यवस्था नहीं की है। इस बार, भाजपा ने अपने बनाये इस नियम से परे जाकर इन पत्रकारों को चेन्नई भेजने का निर्णय लिया क्योंकि भाजपा अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन को तमिलनाडु में पार्टी के लिए एक बड़ी सफलता के रूप में पेश करने के लिए बेताब थी और हिंदी पट्टी में इसके लिए व्यापक प्रचार चाहती थी।

सचिन पायलट राजस्थान में फिर संभाल सकते है नेतृत्व

ऐसा लगता है कि सचिन पायलट 2028 में होने वाले अगले विधानसभा चुनाव में पार्टी का नेतृत्व करने के लिए कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच एक लोकप्रिय विकल्प के रूप में उभर रहे हैं। राहुल गांधी ने सवाई माधोपुर में कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष के साथ एक अनौपचारिक बातचीत के दौरान यही पाया। गांधी रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के दौरे पर थे। वहां पर वे पार्टी के ब्लॉक अध्यक्ष छुट्टन लाल मीणा से बातचीत करने के लिए रुके। उन्होंने मीणा से पूछा कि कांग्रेस का नेतृत्व किसे करना चाहिए। मीना ने तुरंत जवाब दिया, ÷सचिन पायलट।÷ यह जवाब महत्वपूर्ण है क्योंकि राजस्थान की जाति-आधारित राजनीति में, मीणा और गुर्जर (पायलट का समुदाय) वर्षों से मीणा समुदाय की अनुसूचित जनजाति के रूप में वर्गीकृत किए जाने की मांग को लेकर एक-दूसरे से भिड़े हुए हैं। वास्तव में, एक समय तो राज्य में दोनों समुदायों के बीच हिंसक झड़पें हुई थीं। ऐसा लगता है कि अब यह सब अतीत की बात हो गई है। छुट्टन लाल मीणा ने कहा कि वे दो कारणों से पायलट का समर्थन करते हैं। एक यह कि वे युवा हैं और दूसरा यह कि पायलट एक ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें राजस्थान में सभी 36 समुदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले के रूप में देखा जाता है। जवाब में गांधी मुस्कुराए लेकिन कुछ नहीं बोले। जैसे ही मीणा की कांग्रेस नेता के साथ संक्षिप्त मुलाकात की खबर फैली, पायलट समर्थक उम्मीद कर रहे हैं कि टोंक विधायक और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष जल्द ही नेतृत्व की स्थिति में वापस आ जाएंगे।

इस बार कितने दिन बसपा में टिक पाएंगे आकाश आनंद ?

बीएसपी प्रमुख मायावती के भतीजे आकाश आनंद, कुछ सप्ताह पहले निष्कासित किए जाने के बाद पार्टी में वापस आ गए हैं। एक साल की अवधि में यह उनकी तीसरी बार घर वापसी है और बीएसपी हलकों में यह सवाल उठ रहा है कि इस बार वह कितने दिन टिक पाएंगे। आनंद को पूरी तरह से माफी मांगनी पड़ी और अपने ससुर, पूर्व बीएसपी सांसद अशोक सिद्धार्थ से दूर रहने का वादा करना पड़ा। आकाश ने कहा कि उनके पिता आनंद कुमार जो मायावती के बड़े भाई हैं, उन्होंने अपनी बहन से आकाश को एक और मौका देने की गुहार लगाई। मायावती की माफी पाने के लिए आकाश को अपने ससुर को सार्वजनिक रूप से अस्वीकार करना पड़ा। उन्होंने एक्स पर कई पोस्ट में ऐसा किया जिसमें उन्होंने कहा कि मायावती उनकी एकमात्र राजनीतिक गुरु हैं और वह किसी और से राजनीतिक सलाह नहीं लेंगे। मायावती को संदेह था कि सिद्धार्थ और आनंद पार्टी पर कब्जा करने और उन्हें हाशिए पर डालने के लिए गुट बना रहे हैं। हालांकि आनंद वापस आ गए हैं, लेकिन उनकी भविष्य की भूमिका अभी तक स्पष्ट नहीं है। वह जिस पद पर थे, वह राष्ट्रीय समन्वयक का था, जो अब तीन लोगों, राज्यसभा सांसद रामजी गौतम, पूर्व सांसद राजा राम और बसपा के दिग्गज नेता रणधीर सिंह बेनीवाल के बीच बंट गया है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले सप्ताह मायावती की अध्यक्षता में हुई संगठनात्मक बैठक में आकाश की अनुपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी गई। अब सवाल यह ?है कि वह विनम्र होने के बाद कहां खड़े हैं? बसपा खेमा इस जारी पारिवारिक नाटक के अगले चरण के सामने आने का इंतजार कर रहा है।

राजनीति करने के इच्छुक नहीं दिखते गुलाम नबी आजाद

कांग्रेस के पूर्व दिग्गज नेता गुलाम नबी आजाद पिछले साल जम्मू-कश्मीर में हुए विधानसभा चुनावों में हार के बाद राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने की इच्छाशक्ति खो चुके हैं। उन्होंने अपनी क्षेत्रीय पार्टी डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी की सभी इकाइयों को भंग कर दिया है, जिसे उन्होंने गांधी परिवार के साथ टकराव के बाद 2022 में कांग्रेस छोड़ने के बाद बनाया था। हालांकि उन्हें जम्मू-कश्मीर की राजनीति में अपने लिए जगह बनाने की उम्मीद थी, लेकिन 2024 के राज्य चुनावों में वह अपने गृह क्षेत्र जम्मू में कांग्रेस को बुरी तरह नुकसान पहुंचाने में सफल रहे। अब 76 साल की उम्र में उन्हें अपने लिए कोई राजनीतिक भविष्य नहीं दिखता। हालांकि उन्होंने अपनी पार्टी में नए चेहरे नियुक्त करने की बात की है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के राजनीतिक हलकों में कोई भी उन्हें गंभीरता से नहीं ले रहा है। ऐसा लगता है कि आज़ाद के लिए अब रास्ता खत्म हो गया है, जो कभी कांग्रेस में एक ऊंचे कद के नेता थे। आजाद पहले नरसिम्हा राव के राजनीतिक प्रबंधक के रूप में और फिर बाद में सोनिया गांधी राजनीतिक प्रबंधक के रूप में काफी ताकतवर हुआ करते थे। सोनिया गांधी ने 1998 में कर्नाटक के बेल्लारी से अपने पहले लोकसभा चुनाव के लिए अभियान का प्रबंधन करने के लिए अन्य सभी नेताओं के मुकाबले उन्हें चुना था।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

संक्षिप्त खबरें

रिमझिम बरसात से सुहावना हुआ मौसम

रूद्रपुर, देवरिया। क्षेत्र में शनिवार की सुबह हुई रिमझिम बरसात से मौसम सुहावना हो गया। तापमान घटने से गर्मी से राहत मिली। हालांकि खेतों में खड़ी गेहूं की कुछ फसलों को नुकसान हुआ। भूसा बनाने के खेतों में पड़ी गेहूं की डंठल भींग गया जिससे स्ट्रा रीपर नहीं चले। किसान अपने मवेशियों के लिए आवश्यक भूसा के लिए परेशान दिखे। उनका कहना है कि इस बार भूसे की कमी सतायेगी और लोगों को अपने मवेशियों को बेचना पड़ेगा। वर्तमान में भी एक ट्राली भूसा लगभग तीन हजार का बिक रहा है।

गोला तहसील में सम्पूर्ण समाधान दिवस का हुआ आयोजन,87 मामलों में छह का हुआ निस्तारण

गोला बाजार गोरखपुर। गोला बाजार तहसील सभागार में शनिवार को शासन द्वारा जारी रोस्टर के क्रम में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन उप जिलाधिकारी गोला प्रशांत कुमार वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।तहसीलदार गोला कृष्ण गोपाल त्रिपाठी नायब तहसीलदार रमाकांत चौहान बाल कृष्ण,ने फरियादियों की पीड़ा को विधिवत सुना।और निस्तारण करने का भरपूर प्रयास किया।

समाधान दिवस पर अधिकांश मामले राजस्व पुलिस विद्युत विकास से संबंधित

कुल 87 मामले आये जिसमे छह मामलों का निस्तारण समाधान दिवस पर हुआ।शेष मामलों को बिभाग से संबंधित लोगो को निस्तारण करने के लिए दे दिया गया।इस अवसर पर राजस्व निरीक्षक लालजी शर्मा राममूर्ति वर्मा रमेश पांडेय अशोक गुप्ता राजेश सिंह टी एन सिंह कृष्णकुमार यादव लल्लन प्रसाद सुशील सोनी अनिल राय सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

राज्य संप्रतीक में ''सत्यमेव जयते'' का अंकित न होना गंभीर चूक:कमिश्नर

अलीगढ़। सरकारी दस्तावेजों, प्रतीकों एवं विज्ञापनों में भारत सरकार के राज्य संप्रतीक जिसमें चार सिंहों की मूर्ति होती है को ''सत्यमेव जयते'' के बिना प्रकाशित या मुद्रित करना न केवल राज्य संप्रतीक अधिनियम 2005 का स्पष्ट उल्लंघन है बल्कि संविधान की आत्मा के साथ भी अन्याय है। उक्त जानकारी देते हुए कमिश्नर संगीता सिंह ने बताया है कि विभिन्न सरकारी एजेंसियां जो अपने स्टेशनरी, प्रकाशन, मुहरों, वाहनों, भवनों व वेबसाइटों पर भारत के राज्य संप्रतीक का उपयोग कर रही हैं, वह अक्सर ''सत्यमेव जयते'' आदर्श वाक्य को छोड़ देती हैं और मात्र चार सिंहों के प्रतीक को दर्शाती हैं, जोकि राज्य संप्रतीक अधिनियम 2005 में निर्धारित डिजाइन के अनुरूप नहीं है। उन्होंने बताया कि ''सत्यमेव जयते'' जिसका अर्थ ''सत्य की ही विजय होती है''। भारत की आधिकारिक मुद्रा, दस्तावेजों और विभिन्न प्रकार के प्रतीकों में अंकित होना अनिवार्य है। यह दो शब्द न केवल राष्ट्रीय आदर्श वाक्य हैं बल्कि देश की संस्कृति और नैतिक पहचान का प्रतीक भी हैं। कमिश्नर ने मण्डल के सभी जिलाधिकारियों, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों, वीसी एडीए, नगर आयुक्त एवं सभी मण्डलीय व जिलास्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि इस प्रकार की चूक गंभीर चिंता का विषय है। इस पर तत्काल संज्ञान लेते हुए भविष्य में सभी प्रतीकों में ''सत्यमेव जयते'' को यथाविधि अंकित किया जाए। उन्होंने आमजनमानस से भी अनुरोध किया है कि यदि कहीं भी इस प्रकार की त्रुटि दिखाई देती है तो संबंधित को सूचित करें ताकि ससमय त्रुटि में सुधार किया जा सके है।

मां बाप ने भ्रष्टाचार की आवाज उठाई तो स्कूल ने काट दी बालिका की टीसी

अलीगढ़। जहां हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का नारा देते हैं तो वही तहसील अतरौली बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह के घर में मां-बाप को शिक्षा में भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना भारी पड़ गया है। हम बात कर रहे हैं छात्रा पूजा जो 4जी क्लास की छात्रा है। बच्ची पढ़ने में बहुत होशियार है क्रमौत्तर कन्या जूनियर हाव स्कूल कंपोजिट 1-8 नगर क्षेत्र अतरौली अलीगढ़ विद्यालय की प्रिंसिपल निदा खान के खिलाफ खाना खराब बनाने और क्लाश में ना पढ़ाने का आरोप लगाया तो उक्त प्रिंसिपल ने बच्ची को टीसी काट कर दे दी, बच्ची ने हिम्मत करके कहा आप आई कार्ड के नाम पर 50 रूपये लेते हो जबकि पैसा सरकार देती है, और सवाल करने पर चीखती और चिल्लाती हो। पूजा जिसके पिता का नाम राजकुमार है और लोधी समाज से है। प्रिंसिपल बोली मुझे डेढ़ लाख रुपए महीने सैलरी मिलती है तुम मेरा क्या कर सकते हो आखिर इन अध्यापक को इतनी हिम्मत और इतना अधिकार इनको किसने दे दिया कि किसी भी बच्चे को टीसी काटकर दे दी जाएगी।

गोरखपुर- बारात आई ही नहीं, दुल्हन सजती रही... रात भर टूटा एक सपना, हिरासत में दूल्हे के पिता और भाई

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर (खजनी)- क्षेत्र एक गांव में बीती रात एक ऐसी घटना घटी जिसने न सिर्फ एक घर की खुशियों को तबाह कर दिया, बल्कि पूरे गांव को स्तब्ध कर दिया। सज-धज कर दुल्हन बनी एक बेटी बारात के इंतजार में रातभर दरवाजे पर टकटकी लगाए बैठी रही। लेकिन न बैंड बजा, न बारात आई – सिर्फ ताजिंदगी न भूल पाने वाला दर्द छोड़ गई। 8 अप्रैल की रात को रुद्रपुर गांव में कन्या पक्ष ने शादी की तैयारियों में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हर कोना रोशनी से जगमगा रहा था, पकवानों की खुशबू हवाओं में घुली थी, और मेहमानों के चेहरों पर मुस्कान तैर रही थी। शादी होनी थी सूरज कुमार पांडेय, निवासी उनवल टेकवर, और एससी त्रिपाठी (संजय) की बेटी के बीच होनी थी। जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, वैसे-वैसे घर में बेचैनी गहराती गई। आखिरकार रात 2 बजे तक इंतजार के बाद जब उम्मीदें टूटने लगीं, तो परिवार ने 112 पर कॉल कर पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दूल्हे के बड़े भाई और पिता को हिरासत में लिया और दहेज उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज किया।

दूल्हा भाग गया दूसरी लड़की के साथ आरोप ?

सूत्रों की मानें तो दूल्हा किसी अन्य लड़की के साथ भाग निकला है, जिससे रिश्तों की मर्यादा और एक पूरे परिवार का मान माटी में मिल गया। आज शनिवार को खजनी थाने पर गांव के दर्जनों लोग एकत्र हुए और दूल्हे की गिरफ्तारी की मांग करने लगे। कन्या पक्ष अब शादी में खर्च हुई रकम की भरपाई की मांग कर रहा है।

क्या बेटियों का सम्मान यूं ही रौंदा जाएगा?

यह घटना सिर्फ एक शादी का टूटना नहीं, बल्कि समाज के लिए एक चेतावनी है। कैसे एक बेटी की खुशियों के साथ खिलवाड़ किया गया? ये सवाल सिर्फ कानून से नहीं, समाज से भी जवाब मांगता है। दुल्हन की सूनी आंखों में जो सवाल हैं, उनका जवाब शायद वक्त भी न दे पाए।

दो गांजा कारोबारी गिरफ्तार

चित्रकूट- पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में मादक पदार्थो की तस्करी एवं बिक्री की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना भरतकूप के उपनिरीक्षक राहुल पाण्डेय व उनकी टीम आरक्षी सतीश यादव व आरक्षी नरेन्द्र सिंह ने आरोपी दशरथ तिवारी व जुगेश त्रिपाठी निवासीगण देवखेर थाना बदौसा जनपद बांदा को सात किलो 72 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार किया। इस सम्बन्ध में आरोपियों के विरुद्ध थाना भरतकूप में एनडीपीएस एक्ट के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किए गए।

हैंबिना एक्सपायरी दवाइयां बड़ी मात्रा में सड़क के किनारे फेंकी हुई मिली जिम्मेदार मौन

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले में स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार एवं लापरवाही सामने देखने को मिला जिम्मेदार बयान देने से कन्नी काट रहे हैंबिना एक्सपायरी दवाइयां बड़ी मात्रा में सड़क के किनारे फेंकी हुई मिली जिम्मेदार मोहन स्वास्थ्य विभाग की बड़ी लापरवाही सामने आई है। बस्ती जिले के कुदरहा ब्लॉक के ग्राम पंचायत शिवपुर के पास सड़क किनारे भारी मात्रा में सरकारी दवाएं फेंकी मिलीं। ये दवाएं गर्भवती महिलाओं को आयरन और कैल्शियम की पूर्ति के लिए सरकार द्वारा भेजी जाती हैं। आश्चर्य की बात है कि ये दवाएं बिना एक्सपायर फेंक दी गई। इससे साफ जाहिर होता है कि जिम्मेदार अधिकारी कितने लापरवाह हैं। स्वास्थ्य विभाग में जनता को फ्री में मिलने वाली दवाइयां कैल्शियम जैसे और मरीजों मिलने वाली दवाइयां सड़क के किनारे फेंकी मिली जिससे ग्रामीण ऑन द्वारा

मीडिया को बुलाया गया पता करने पर ना तो कप्तानगंज सी एच सी जिम्मेदारी ले रही है और ना ही दुबौलिया इस कीजिए स्वास्थ्य केंद्र जिम्मेदारी ले रही है जनता को फ्री में मिलने वाले कैल्शियम जैसे महत्वपूर्ण दवाइयां सड़क के किनारे फेंकी हुई मिली और जिम्मेदार मोहन है बस्ती सी एम ओ द्वारादवाइयां जानकारी नहीं है मामले की जांच कराई जा रही है जल्द ही खुलासा होने पर कार्रवाई की जाएगी

सोनभद्र जिले में तेज रफ्तार के कारण एक और दर्दनाक हादसा हुआ, जिसमें तीन युवकों की जान चली गई

● सोनभद्र में रफ्तार का कहर- अज्ञात वाहन की टक्कर से तीन बाइक सवार युवकों की मौत

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र – जिले में सड़क दुर्घटनाओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। "किलर रोड"के नाम से कुख्यात वाराणसी-शक्तिनगर मुख्य मार्ग पर देर रात एक और हृदयविदारक घटना घटी। एक तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने बाइक सवार तीन युवकों को जोरदार टक्कर मार दी, जिससे तीनों की मौके पर ही मौत हो गई।स्थानीय लोगों द्वारा सूचना दिए जाने पर तत्काल पुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने तीनों शवों को अपने कब्जे में

लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, चोपन थाना क्षेत्र के वाराणसी-शक्तिनगर मुख्य मार्ग पर नायरा पेट्रोल पंप पटवध के पास यह भीषण दुर्घटना हुई। एक तेज गति से आ रहे अज्ञात वाहन ने बाइक सवार युवकों को बुरी तरह से टक्कर मार दी और मौके से फरार हो गया। इस दुर्घटना में लक्ष्मण गौड़ (पुत्र विश्वनाथ, उम्र लगभग 20 वर्ष), छोटू गौड़ उर्फ अर्जुन (पुत्र महेंद्र, उम्र लगभग 15 वर्ष), और चंद्रशेखर गौड़ (पुत्र लल्लू, उम्र लगभग 16 वर्ष) की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई।बताया जा रहा है कि तीनों युवक एक ही बाइक पर सवार होकर किसी शादी समारोह से वापस अपने गांव बेलछ (थाना चोपन) लौट रहे थे। इस दुखद घटना की खबर मिलते ही मृतकों के परिवारों में मातम छा गया। राहगीरों ने तुरंत घटना की सूचना पुलिस को दी।मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों युवकों को चोपन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (CHC) पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने तीनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल लोढ़ी भेज दिया है। चोपन सीएचसी के डॉक्टर आकाश ने बताया कि जब तीनों युवकों को अस्पताल लाया गया, तो वे पहले ही दम तोड़ चुके थे। यह घटना एक बार फिर सोनभद्र की सड़कों पर तेज रफ्तार और यातायात नियमों के उल्लंघन के कारण हो रहे जानलेवा हादसों की ओर ध्यान आकर्षित करती है। पुलिस अब अज्ञात वाहन और उसके चालक की तलाश में जुट गई है।

गोलाबाज़ार, गोरखपुर- अधूरे नाले ने बढ़ाया खतरा, कभी भी हो सकती है बड़ी दुर्घटना

स्वतंत्र प्रभात

गोलाबाज़ार (गोरखपुर)- उपनगर गोला स्थित एल.पी.एम. पब्लिक स्कूल के पश्चिम राम जानकी मार्ग पर अधूरे नाला निर्माण के कारण स्थानीय लोग भारी परेशानी में हैं। लगभग डेढ़ महीने पहले ठेकेदार द्वारा नाला निर्माण के लिए सड़क किनारे करीब आधा किलोमीटर लंबी और गहरी खाई खोदी गई थी, जो अब तक वैसी ही पड़ी हुई है। निर्माण कार्य की धीमी गति और प्रशासनिक लापरवाही के चलते यह खाई अब दुर्घटना को दावत दे रही है। स्थानीय अधिवक्ता राजेंद्र भारती, भारद्वाज

पांडेय, श्रीनिवास पांडेय और दुकानदारों ने बताया कि वे अपने घरों के सामने पटरे रखकर किसी तरह आवाजाही कर रहे हैं। उन्हें हमेशा डर बना रहता है कि कहीं रात में कोई बच्चा या महिला इस खाई में गिरकर गंभीर रूप से घायल न हो जाए। इतना ही नहीं, बारिश के कारण मकानों की नींव में पानी भरने लगा है, जिससे मकानों को भी नुकसान पहुँचने का खतरा मंडरा रहा है। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस विषय को लेकर उन्होंने क्षेत्रीय विधायक राजेश त्रिपाठी से जल्द निर्माण कार्य को पूरा कराने की मांग की है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि ठेकेदार और संबंधित अधिकारियों को इस गंभीर समस्या की कोई परवाह नहीं है। यदि जल्द ही इस अधूरे नाले का निर्माण कार्य दोबारा शुरू नहीं कराया गया, तो यह खाई कभी भी किसी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है।

ओबरा सोनभद्र पत्रकार एकता समिति ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन, शारदा मंदिर मार्ग पर ब्रेकर लगाने की मांग

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा, सोनभद्र। पूर्वांचल पत्रकार एकता समिति के नगर अध्यक्ष अरविन्द कुशवाहा और महासचिव अजीत सिंह ने तहसील दिवस पर उप जिलाधिकारी से मुलाकात कर उन्हें एक ज्ञापन सौंपा। इस ज्ञापन के माध्यम से उन्होंने क्षेत्र की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया, जिसमें मुख्य रूप से ओबरा के चोपन रोड पर शारदा मंदिर से हनुमान मंदिर तक तेज गति से चलने वाले वाहनों के कारण उत्पन्न खतरे पर गहरी चिंता व्यक्त की गई। समिति ने इस मार्ग पर तत्काल गति अवरोधक (ब्रेकर) लगाने की मांग की है। ज्ञापन में कहा गया है कि ओबरा के शारदा मंदिर से बाजार की ओर जाने वाले मार्ग पर वाहनों की अत्यधिक गति के कारण आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। समिति ने शारदा मंदिर चौराहा, माँ शारदा पब्लिक स्कूल, देवी पालक

स्कूल, अनूप मेडिकल, आत्माराम आईटीआई विद्यालय और सुदामा पाठक मोड़ जैसे भीड़भाड़ वाले स्थानों पर ब्रेकर लगाने की अत्यंत आवश्यकता बताई है। इन स्थानों पर स्कूलों और अन्य महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों की उपस्थिति के कारण लोगों का आवागमन लगातार बना रहता है, और तेज रफ्तार वाहन दुर्घटनाओं का कारण बन सकते हैं। पूर्वांचल पत्रकार एकता समिति ने बताया कि पिछले कुछ महीनों में चोपन रोड पर ओबरा के शारदा मंदिर से गजराज नगर क्षेत्र के बीच कई दुर्घटनाएं दर्ज की गई हैं। स्थानीय निवासियों का यह दृढ़ मत है कि यदि इन चिन्हित स्थानों पर ब्रेकर लगाए जाते हैं, तो तेज गति से चलने वाले वाहनों की गति को नियंत्रित किया जा सकेगा, जिससे लगातार हो रही दुर्घटनाओं को प्रभावी रूप से रोका जा सकेगा। समिति ने विशेष रूप से स्कूली बच्चों की सुरक्षा पर जोर देते हुए कहा कि इस मार्ग पर कई विद्यालय स्थित हैं, और ब्रेकर लगने से छात्रों का सुरक्षित आवागमन सुनिश्चित हो सकेगा। यह कदम जनहित में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस गंभीर विषय पर स्थानीय निवासियों की ओर से पूर्वांचल पत्रकार एकता समिति ने संबंधित अधिकारियों से विनम्र अनुरोध किया है कि वे जन कल्याण को प्राथमिकता देते हुए इन चिन्हित स्थानों पर गति अवरोधक लगवाने के लिए तत्काल आवश्यक कार्रवाई करें। समिति का मानना है कि प्रशासन द्वारा इस मांग पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देने से क्षेत्र में सड़क सुरक्षा की स्थिति में सुधार आएगा और अनमोल जिंदगियों को बचाया जा सकेगा।

उच्च प्राथमिक विद्यालय बलही जोत के परिसर का निर्माण कार्य अभी तक अधर में लटका हर वर्ष बारिश में होती है भारी जलभराव की समस्याएं

● शिक्षा क्षेत्र रूपईडीह के उच्च प्राथमिक विद्यालय बलही जोत में जहां एक ओर मानसून दस्तक देने को है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के परिसर का निर्माण कार्य अभी तक अधर में लटका हुआ है

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। बरसात नजदीक, लेकिन विद्यालय परिसर का निर्माण अब भी अधूरा।छात्रों और शिक्षकों को कीचड़, जलभराव और अव्यवस्था से जूझना पड़ रहा।शिक्षा क्षेत्र रूपईडीह के उच्च प्राथमिक विद्यालय बलही जोत से जुड़ा हुआ है जहां एक ओर मानसून दस्तक देने को है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के परिसर का निर्माण कार्य

अभी तक अधर में लटका हुआ है। अधिकारियो की उदासीनता से विगत कई माह से निर्माण कार्य अब तक विद्यालय के नहीं शुरू किया गया जिससे छात्रों और शिक्षकों को गंभीर समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।विद्यालय परिसर में न तो समुचित मार्ग बने हैं, न ही जल निकासी की कोई ठोस व्यवस्था है। बरसात के दौरान परिसर कीचड़ में तब्दील हो जाता है, जिससे बच्चों का आना-जाना बेहद कठिन हो जाता है। इससे न केवल उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है, बल्कि स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी बढ़ गए हैं।विद्यालय के प्रधानाध्यापक राजेश कुमार

तिवारी और स्थानीय ग्रामीणों ने संबंधित विभाग से कई बार शिकायत की, परंतु अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई है। अभिभावकों की चिंता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि आने वाले दिनों में जब बारिश तेज होगी, तब स्थिति और भी भयावह हो सकती है।

स्थानीय प्रशासन से की गई अपील

विद्यालय प्रबंधन और ग्रामवासियों ने प्रशासन से आग्रह किया है कि निर्माण कार्य में तेजी लाई जाए और प्राथमिकता के आधार पर परिसर की दशा सुधारी जाए, ताकि बच्चों का भविष्य कीचड़ में न सने।

सोनभद्र राहुल और सोनिया गांधी का पुतला फूंकने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन, मुकदमा दर्ज करने की मांग

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र – जिले के राबर्ट्सगंज स्वर्ण जयंती चौक पर एक दिन पहले विपक्ष के नेता राहुल गांधी और सोनिया गांधी का पुतला फूंकने का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। उनकी गिरफ्तारी और मुकदमा दर्ज करने की मांग को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शनिवार को जमकर प्रदर्शन किया।जिला मुख्यालय स्थित स्वर्ण जयंती चौक पर सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने भाजपा नेताओं के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान भारी संख्या में पुलिसकर्मी तैनात रहे और ज्ञापन देने जा रहे कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को रोकने का प्रयास किया। एक घंटे तक चले हंगामे के बीच मौके पर पहुंचे अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) कालू सिंह ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से ज्ञापन लेकर मामले को शांत कराया।शुक्रवार को भारतीय जनता युवा मोर्चा (भाजयुमो) के कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी और सोनिया गांधी का पुतला फूंका था, जिससे आक्रोशित कांग्रेस

कार्यकर्ताओं ने शनिवार को जिलाध्यक्ष रामराज सिंह गोंड के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया और पुतला दहन करने वाले भाजपा नेताओं पर मुकदमा दर्ज कराने की मांग को लेकर भारी हंगामा किया। इस दौरान भारी पुलिस बल तैनात रहा और पुलिस और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच तीखी नोकझोंक भी हुई। कांग्रेस कार्यकर्ताओं को पुलिस ने रोकने की कोशिश की, लेकिन वे रॉबर्ट्सगंज कोतवाली पहुंचकर विरोध जताने में सफल रहे।वहां मौजूद एएसपी कालू सिंह, क्षेत्राधिकारी (सीओ) चारु द्विवेदी और कोतवाल सत्येंद्र राय ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रोककर वार्ता की और जल्द ही मामले में कार्रवाई का आश्वासन दिया।जिला प्रवक्ता शत्रुंजय मिश्रा ने कहा कि राहुल गांधी की बढ़ती लोकप्रियता से भाजपा बौखला गई है। राहुल गांधी किसानों, नौजवानों, मजदूरों, महिलाओं और दलितों के अधिकारों के लिए सड़कों पर संघर्ष कर रहे हैं। मोदी सरकार और योगी सरकार बदले की भावना से सरकारी संस्थाओं का दुरुपयोग कर हमारे नेताओं को परेशान कर रही हैं। भाजपा नेताओं ने हमारे नेताओं का पुतला फूंका, जिससे पूरे कांग्रेस कार्यकर्ताओं में आक्रोश है। यदि पुतला फूंकने वालों पर मुकदमा दर्ज नहीं किया गया, तो बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

एनटीपीसी रिहन्द में स्कूली बच्चों को मिला अग्नि सुरक्षा का प्रशिक्षण

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र। राष्ट्रीय अग्नि सुरक्षा सप्ताह 2025 के अवसर पर, एनटीपीसी रिहन्द में केंद्रीय विद्यालय में सीआईएसएफ की अग्निशमन इकाई द्वारा एक महत्वपूर्ण अग्नि सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली बच्चों को आग लगने के कारणों, विभिन्न प्रकार की आग और उन्हें बुझाने के तरीकों के बारे में विस्तृत जानकारी देना था।कार्यक्रम के दौरान, सीआईएसएफ के निरीक्षक/अग्नि कैलाश चन्द्र गोरा और उनकी टीम ने छात्रों को आग के विभिन्न वर्गीकरणों और उन्हें नियंत्रित करने के उपायों के बारे में विस्तार से समझाया। इसके साथ ही, उन्होंने विभिन्न प्रकार के फायर एक्स्टिंग्विशर (अग्निशामक यंत्रों) के उपयोग की विधि को व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित

किया, जिससे छात्रों को उन्हें सही तरीके से इस्तेमाल करने की समझ विकसित हुई। टीम ने अग्नि सुरक्षा उपकरणों का प्रदर्शन भी किया और उनके महत्व पर प्रकाश डाला।इस अवसर पर, विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों ने फायर एक्स्टिंग्विशर चलाकर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे आपातकालीन स्थिति में इनका उपयोग करने के लिए अधिक सक्षम महसूस करने लगे। कार्यक्रम के समापन पर, विद्यालय की प्राचार्या लालसा साहा ने एनटीपीसी रिहन्द सीआईएसएफ की अग्निशमन टीम को इस महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।कार्यक्रम के दौरान, निरीक्षक/अग्नि कैलाश चन्द्र गोरा ने सभी विद्यार्थियों को अग्नि दुर्घटनाओं से बचने के लिए आवश्यक सावधानियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को यह भी सिखाया कि ऐसी किसी भी आपातकालीन स्थिति में घबराना नहीं चाहिए और त्वरित एवं सुरक्षित कदम उठाने चाहिए।यह कार्यक्रम न केवल छात्रों को अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूक करेगा, बल्कि उन्हें भविष्य में किसी भी अप्रिय घटना से खुद को और दूसरों को बचाने के लिए तैयार भी करेगा। एनटीपीसी रिहन्द और सीआईएसएफ की यह संयुक्त पहल निश्चित रूप से समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है।

अंत्येष्टि स्थल में घटिया सामग्री का किया जा रहा है इस्तेमाल

● अंत्येष्टि स्थल पर जाने के लिए नहीं है रास्ता पूर्व में भी एक अंत्येष्टि स्थल बनाया गया है जिसमें आज तक जाने के लिए नहीं मिला रास्ता

स्वतंत्र प्रभात

हलिया मिर्जापुर। स्थानीय विकासखंड के ग्राम पंचायत गलरिया में बन रहे अंत्येष्टि स्थल में घटिया सामग्री व मानक के विपरीत बनाया जा रहा है अंत्येष्टि स्थल अंत्येष्टि स्थल पर जाने के लिए ना तो रास्ता है तीन नंबर का ईट व भस्सी से किया जा रहा है अंत्येष्टि स्थल के बाउंड्री वॉल का काम ग्रामीणों के मुताबिक सही जगह पर नहीं बन रहा है अंत्येष्टि स्थल जहां शव का दाह संस्कार सही से हो सके बरसात में जाने के लिए नहीं मिलेगा कहीं से अंत्येष्टि स्थल पर रास्ता जिस जिस जगह पर बना है अत्यष्टि स्थल कहीं पर अंत्येष्टि स्थल का नहीं हो रहा उपयोग सिर्फ सरकार से पैसा लेकर अधिकारी व जनप्रतिनिधि कागज पर कोरम पूरा करके निकालते हैं अपना काम अंत्येष्टि स्थल का उपयोग हो या ना हो सिर्फ अंत्येष्टि स्थल के नाम से धन में किया जाता है बंदर बाट ग्रामीणों ने बताया कि हलिया विकासखंड के लगभग ग्राम पंचायत में अंत्येष्टि स्थल बनाया गया है और एक भी अंत्येष्टि स्थल उपयोग में नहीं है सिर्फ ग्राम प्रधान अपना उल्लू सीधा करने के लिए कहीं विवादित जगह पर अंत्येष्टि स्थल बनवाकर अपना कोरम पूरा कर लेते हैं घटिया सामग्री से काम करते हैं जो बाद में ध्वस्त हो जाता है कहीं-कहीं अंत्येष्टि स्थल इसी पंचवर्षीय का टूटा हुआ पड़ा है कहीं पर एकदम ध्वस्त हो गया है एक भी अंत्येष्टि स्थल उपयोग में नहीं है।

आज होगा निर्धन कन्याओं का सामूहिक भव्य विवाह समारोह

● 14 वरवधू लेंगे आज अग्नि के फेरे...

स्वतंत्र प्रभात

गोंडा। रानी बाजार स्थित श्री राम जानकी मंदिर में निर्धन कन्याओं हेतु सामूहिक भव्य विवाह समारोह का आयोजन किया जायेगा। जिसमें हिंदू रीति रिवाज एवं पूरे वैदिक मंत्रोचार के साथ आज सायं 3:00 बजे से 14 वर वधू एक दूसरे को जयमाल पहनते हुए परिणय सूत्र में बंधे गे। यह जानकारी विवाह समारोह के आयोजक और श्री राम जानकी धर्मादा समिति के महामंत्री संजय अग्रवाल ने दी। उन्होंने बताया कि जनपद के निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्र से वर एवं वधू पक्ष के परिवारजन दोपहर 12:00 तक विवाह स्थल पर पहुंचे गे। और 3:00 बजे जयमाल, 5:00 बजे भंवर (अग्नि फेरा) एवं 7:00 बजे तक विदाई संपन्न होगी। विवाह समारोह की प्रमुख सहयोगी मारवाड़ी युवा मंच देवी पाटन महिला शाखा की अध्यक्ष अनीता मनीरामका ने बताया की सभी जोड़ों को नई गृहस्थी एवं खुशहाल जीवन के लिए आवश्यक सामान दिए जाएंगे जिसमें लोहे का बॉक्स, अटैची, एयर बैग,पलंग, गद्दा, चादर, प्रत्येक कन्या को 7 साड़ी, ब्लाउज व पेटिकोट, पायल, बिछिया व मंगलसूत्र, प्रेशर कुकर, टेबल पंखा, कंबल, बर्तन व मिठाई आदि सामान समिति द्वारा देकर विदा किया जाएगा।विवाह संयोजक अनिल अग्रवाल ने बताया की सभी मेहमानों के लिए जलपान व भोजन की समुचित व्यवस्था की गई है। श्री राम जानकी धर्मादा समिति के अध्यक्ष अनिल मित्तल ने बताया कि इस आयोजन में सभी मारवाड़ी महिलाओं के विभिन्न संगठनों की प्रमुख भूमिका रहेगी। और नगर के संभ्रांत, प्रतिष्ठित एवं सामाजिक गणमान्य व्यक्तियों के एवं जनप्रतिनिधियों के शामिल होने की प्रबल संभावना है। कार्यक्रम के संयोजक राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल एडवोकेट ने बताया की कार्यक्रम की तैयारी कर ली गई है जिसमें विवाह संयोजक अनिल अग्रवाल, सचिव संजय अग्रवाल, अध्यक्ष अनिल मित्तल, कार्यक्रम सह संयोजक सरोज अग्रवाल, स्वागत समन्वयक अमिता अग्रवाल, विवाह सह संयोजक नीलम जैन, संस्कृत प्रमुख नीतू गर्ग के अलावा समाज के कई लोगों को जिम्मेदारी सौंपी गई है।

संक्षिप्त खबरें

तहसील समाधान दिवस में सीडीओ एवं पुलिस अधीक्षक ने फरियादियों की सुनी समस्याएं

शाहजहांपुर। जनपद के जलालाबाद के आज शनिवार को तहसील समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें सीडीओ डॉक्टर अपराजिता सिंह एवं पुलिस अधीक्षक ग्रामीण भवरे दीक्षा अरुण ने आए हुए फरियादियों की समस्याओं को सुना और अधीनस्थों को समस्या निस्तारण के निर्देश दिए। आज कल इतनी शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें पास शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया, और वही आज तहसील समाधान दिवस में बीते दिन उमरपुर गांव निवासी व्यक्ति की समस्या की खबर समाचारों में प्रकाशित हुई थी उसके अनुसार आज सीडीओ ने आश्वासन दिया कि आज से कल तक उसकी गेहूं की फसल कटवा दी जाएगी जो दबंग लोग नहीं काटने दे रहे हैं, इस अवसर पर प्रमुख रूप से उप जिला अधिकारी दुर्गेश यादव तहसीलदार पैगाम हैदर एवं अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

अभियुक्त गिरफ्तार, 12 बोर देसी तमंचा बरामद

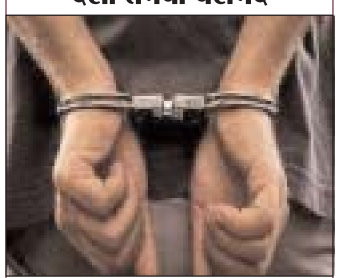

शाहजहांपुर। जनपद के जलालाबाद पुलिस द्वारा अभियुक्त इंद्रपाल पुत्र रामनाथ निवासी मोहल्ला गांधीनगर कस्बा व थाना जलालाबाद, जनपद शाहजहाँपुर को सराय साधौ के पास बनी पुलिया के पास से गिरफ्तार किया गया। जिसके कब्जे से 01 अवैध देशी तंमचा 12 बोर मय 02 जिन्दा कारतूस 12 बोर बरामद किया गया। अभियुक्त इन्द्रपाल उपरोक्त विरुद्ध थाने पर अभियोग पंजीकृत करने के बाद उसे जेल भेज दिया गया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी एक गांव का रहने वाला है। कई मामलों में जेल जा चुका है। अवैध तमंचा रखकर लोगों में दहशत व्याप्त करने का माहिर है।

वित्त मंत्री ने किया जनपद के प्रथम मिलेट्स स्टोर का उद्घाटन

शाहजहांपुर। गंगा भूमि सीड्स प्रोडक्शन प्रोड्यूसर कम्पनी लि शाहजहांपुर ने जनपद में अपना पहला मिलेट्स स्टोर/मार्ट गंगा भूमि मिलेट्स स्टोर के नाम से सरस्वती पुरम अक्षरधाम कॉलोनी लोदीपुर रोड निकट जी सी बाबासाहब पेट्रोल पंप शाहजहांपुर में खोला है जो जनपद का पहला मिलेट्स स्टोर होगा जिसका शुभारंभ उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना द्वारा फीता काट कर किया गया ।मा वित्त मंत्री ने गंगा भूमि के मैनेजिंग डायरेक्टर राकेश कुमार पांडेय को इसके लिए बधाई देते हुए उनके प्रयास की सराहना भी की और कहा कि मिलेट्स प्रोत्साहन हेतु केंद्र व राज्य सरकारें लगातार कार्य कर रही है, इसके एफ पी ओ को बहुत सारी योजनाओं का लाभ भी दिया जा रहा है। आज लोगों को अपने दैनिक भोजन में मिलेट्स को शामिल करना चाहिए, मोटे अनाज हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत ही उपयोगी हैंउद्घाटन कार्यक्रम में प्रमुख रूप से मंत्री जी के साथ ब्लॉक प्रमुख कांट दत्त शुक्ल, ब्लाक प्रमुख खुटार नमित दीक्षित, महानगर अध्यक्ष श्रीमति शिल्पी गुप्ता, के वी के प्रभारी अधिकारी डॉ एन सी त्रिपाठी, वैज्ञानिक डॉ नरेंद्र प्रसाद, डॉ महेश कुमार, डॉ विमल कुमार, गन्ना शोध परिषद से डॉ एस पी सिंह, जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष डी पी एस राठौड़, व जी एम सौरभ द्विवेदी, विभाग संघ चालक रवि मिश्र, महानगर संघ चालक रमेश सक्सैना, मंडी सचिव रोजा विक्रम बाजपेई , केशव चंद्र मिश्र, डॉ के के शुक्ल, राजकमल बाजपेई, पार्षद नरेंद्र गुरु, पार्षद रूपेश वर्मा, पार्षद रामखेलावन मिश्र, योगेन्द्र शर्मा, समाज सेवी सावित्री शर्मा, पूर्व महानगर कार्यवाह संत कुमार मिश्र, निदेशक उमा पांडेय,सीईओ इशिका पांडेय, संतोष दीक्षित, कृषि विभाग से सुनील कुमार व ललित शुक्ला, राम निवास मिश्र प्राचार्य वनस्थली इंटर कॉलेज शिकलपुर खुटार,अमर दीप शुक्ल, रुचिता पांडेय, क्षमा मिश्र, हर्षित मिश्र, अपर्णा पांडेय,अभय पांडेय,विंदु सिंह, मुरारी दीक्षित, सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे सभी ने पांडेय जी को मिलेट्स स्टोर खोलने हेतु शुभकामनाएं दीं। आए हुए सभी महानुभावों का राकेश पांडेय द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

सीबीआई जांच कर किया जाए, पत्रकार राघवेंद्र बाजपेई हत्याकांड का खुलासा

● सीबीआई जांच और आर्थिक सहायता हेतु 29अप्रैल से चेयरमैन ऐप्जा रवीन्द्र मिश्रा देंगे अनिश्चितकालीन धरना

स्वतंत्र प्रभात

निघासन खीरी नगर पंचायत निघासन में ऐपजा के पदाधिकारियों की एक बैठक की गई जिसमें संगठन के महासचिव अनुराग एम. सारथी के साथ व जिला अध्यक्ष संदीप शुक्ला ने बताया कि सीतापुर जनपद के तहसील क्षेत्र महोली से दैनिक जागरण के पत्रकार, किसान और ब्राह्मण भाई राघवेंद्र बाजपेई की बीते दिनों हेमपुर ओवरब्रिज पर गोली मारकर हत्या कर दी गई थी जिसमें लगभग एक माह से ज्यादा दिनों के बाद पुलिस द्वारा इस हत्याकांड में किए गए खुलासे से परिवारीजानों सहित संपूर्ण जनमानस हताश और अवाक रह गया है। जैसा कि मृतक राघवेन्द्र की पत्नी ने भी वीडियो जारी कर इस खुलासे का विरोध किया है। अब चेयरमैन ऐप्जा (आल इंडियन प्रेस जर्नलिस्ट एसोसिएशन) रवीन्द्र मिश्रा भगवान परशुराम जयंती पर आगामी 29 अप्रैल 2025 दिन मंगलवार से राघवेंद्र बाजपेई हत्याकांड की सीबीआई जांच, 50 लाख रुपए सहायता राशि और पत्नी को सरकारी नौकरी की मांग के समर्थन में सीतापुर कलेक्ट्रेट परिसर में अनिश्चितकालीन धरने पर बैठेंगे। समस्त पत्रकार जगत, समस्त किसान संगठन, समस्त ब्राह्मण समुदाय, समस्त सामाजिक संगठनों एवं समस्त जनता जनार्दन से साथ और समर्थन की अपेक्षा की जाती है, ऐप्जा के चीफ को-आर्डिनेटर अनुराग सारथी ने प्रेसवार्ता के दौरान बताया कि जहां एक ओर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी पत्रकारों की सुरक्षा एवं संरक्षण तथा उनके विकास पर चिन्ता जताते हुए आला अधिकारियों को आगाह करते रहते हैं वहीं दूसरी ओर आए दिन शासन-प्रशासन में कुंडली मार कर बैठे भ्रष्ट कारिंदे पूरे उत्तर प्रदेश में पत्रकारों को अपने कोपभाजन का शिकार बनाते रहते हैं घटनाओं दुर्घटनाओं तथा फर्जी मुकदमों में फंसाकर, कभी कभी तो हत्या तक करवाकर जनता जनार्दन एवं मीडिया की आवाज दबाने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं, इसी का नतीजा है राघवेंद्र बाजपेई हत्याकांड।

राघवेंद्र बाजपेई सीतापुर जनपद के महोली तहसील क्षेत्र से दैनिक जागरण लखनऊ संस्करण के पत्रकार थ जिनकी समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर उनकी पैनी नजर थी, लगातार अपने अखबार के माध्यम से भ्रष्टाचार के कारनामें उजागर करते रहते थे शुरूआती दौर में तहसील प्रशासन के लोगों की इस हत्याकांड में संलिप्तता पाई गई। किंतु शासन प्रशासन ने मिलीभगत कर एक माह तक हवा का रुख देखने के उपरांत हवाहवाई खुलासा कर केस से अपना पल्ला झाड़ लिया है। मृतक पत्रकार राघवेन्द्र बाजपेई की पत्नी ने थक हारकर ऐप्जा संगठन से मदद की गुहार लगाकर समस्त जनमानस से ऐप्जा का साथ देने की अपील की है। सारथी ने कहा, माना कि केस की तह तक जाने में समय लगता सकता किन्तु हत्या का होना तो घटना के समय ही पता लग गया था जिसके बावजूद इसके आर्थिक तंगी से जूझ रहे राघवेंद्र बाजपेई परिवार को आर्थिक सहायता देने में प्रशासन की हीलाहवाली कर उसकी मंशा पर प्रश्नचिन्ह लगाती है। बहरहाल अब चेयरमैन ऐप्जा रवीन्द्र मिश्रा ने राघवेंद्र बाजपेई हत्याकांड की सीबीआई जांच, पचास लाख रुपए आर्थिक सहायता और पत्नी को सरकारी नौकरी दिलाने के लिए संघर्ष का ऐलान कर दिया है, जब तक शासन-प्रशासन राघवेन्द्र के परिवार को आर्थिक सहायता 50 लाख रूपए, पत्नी को सरकारी नौकरी और सीबीआई जांच की संस्तुति नहीं करता तब तक अनिश्चितकालीन आन्दोलन जारी रहेगा। 29 अप्रैल को आयोजित धरने को लेकर ऐप्जा चीफ कोआर्डिनेटर अनुराग सारथी ने जनपद लखीमपुर खीरी के तहसील निघासन के पत्रकारों के साथ बैठक कर प्रेसवार्ता किया बैठकों में सारथी ने कहा कि आगामी 29 अप्रैल को सीतापुर कलेक्ट्रेट परिसर में धरना प्रदर्शन में सभी पत्रकार साथी सहभागिता करें ताकि उनके परिवार को न्याय मिल सके।

बाघ के हमले के बाद गांव पहुंचे जिला वनराज अधिकारी हथे नहीं आया बाग तो लगवा दिए कैमरे

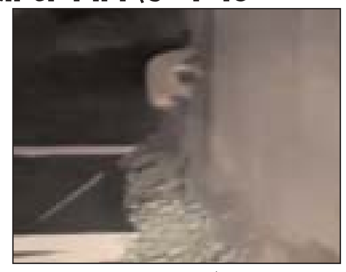

● बाघ के हमले में घायल हुए युवक की खबर के बाद गांव पहुंची- डीएफओ लगाए कैमरे

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/नवाबगंज तहसील के गांव बिहारीपुर अब्दुल रहमान में कल गन्ने की सिंचाई कर रहे युवक अरविंद कुमार को उसने घायल कर दिया इस खबर को स्वतंत्र प्रभात ने खबर को प्रमुखता से प्रकाशन किया तो मची खलबली बाघ को पकड़ने हेतु वन विभाग की मुखिया जिला वनराज अधिकारी दलबल के साथ गांव पहुंची और जंगल में जाकर बाघ के पद कॉन को दिखा डोन कैमरे द्वारा सर्वे भी करवाया गया परंतु कोई भी कामयाबी हाथ नहीं लगी। तो उन्होंने जगह-जगह कैमरे लगवा दिए हैं जिसकी निगरानी विभाग एवं ग्रामीण भी करेंगे ताकि बाघ को पकड़ा जा सके इस कार्य के लिए वन विभाग के साथ थाना पुलिस भी खोजबीन में जुटी है परंतु बाग का कोई भी सुराग नहीं लग सका है इधर ग्रामीणों में दहशत का माहौल बना हुआ है सूत्रों के अनुसार यह बाग कई दिनों से इसी क्षेत्र में होने की चर्चा है जबकि घटना से एक-दो दिन पहले मेथी चौराहे के पास रोड को क्रॉस करते हुए देखा गया था। इसकी भी सूचना विभाग को दी गई थी परंतु विभाग ने उसे पर कोई भी गंभीरता पूर्वक अमल नहीं किया जिसके कारण बिहारीपुर अब्दुल रहमान के युवक अरविंद कुमार को इसका कामयाब आज झेलना पड़ा।

अजान घरथनिया मार्ग पर बनी पुलिया की टूटी रेलिंग से हादसे का खतरा

स्वतंत्र प्रभात

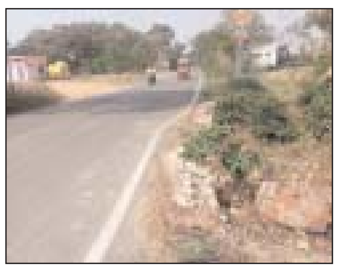

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। अजान घरथनिया मार्ग पर इमलिया गांव के पास बनी पुलिया की रेलिंग पिछले 6 महीनों से टूटी पड़ी है।जो यह हादसे को निमंत्रण दे रही है।आवागमन के दौरान लोगों को हादसे का भय बना रहता है। लोगो ने बताया कि पीडब्ल्यूडी विभाग को सूचना देने के बाद भी विभाग के अधिकारी संज्ञान नहीं ले रहे हैं। यह मार्ग गोला से घरथनिया अजान भीखमपुर से सीतापुर लखनऊ जाने का क्षेत्र के लोगों का मुख्य मार्ग है। यह मार्ग ढेड़ साल पहले ही बना था। तभी इस मार्ग पर पुलिया का भी निर्माण हुआ था। ढेड़ साल मे पुलिया की रेलिंग टूट गई तो यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि पुलिया को विभाग द्वारा कितनी मजबूती से बनबाया होगा।

ग्राम इमलिया हनुमान मंदिर के सामने सडक भी धंसी हुई है।जिसको आज तक सही नहीं कराया गया।इसके चलते प्रायः छोटे बड़े वाहनों से लेकर बाइक मैजिक स्कूल बसें सहित बड़े वाहन शामिल हैं क ई वाहन चालक तो वाहन सहित गिरकर गम्भीर चोट के शिकार हो भी चुके हैं। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि विभाग का ध्यान आकृष्ट कराने के बाबजूद विभाग संज्ञान नहीं ले रहा है। स्थानीय लोगों ने एक बार फिर विभाग का ध्यान आकृष्ट कराते हुए पुलिया पर रेलिंग कार्य कराए जाने की मांग की है।

थाना रोजा पुलिस ने गौवध अधि0 के अभियोग में अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात पुलिस 112

शाहजहांपुर। पुलिस अधीक्षक शाहजहाँपुर के निर्देशानुसार, पुलिस अधीक्षक नगर के निर्देशन व क्षेत्राधिकारी सदर के कुशल पर्यवेक्षण मे वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में मुखबिर की सूचना पर सीतापुर रोड पर टेढ़ी पुलिया के पास से वांछित अभियुक्त इमरान खान पुत्र सुल्तान खान उम्र करीब 25 वर्ष नि0 ग्राम बरनई पोस्ट सरही, थाना रोजा, जनपद शाहजहाँपुर हाल नि0 ग्राम सैंजना, थाना मंझिला, जनपद हरदोई , तौसिफ पुत्र हनीफ उम्र करीब 24 वर्ष नि0 मो0 खुरमुली कस्बा व थाना पिहानी, जनपद हरदोई को गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तगण के विरुद्ध अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए मा0 न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रपति को संबोधित नायब तहसीलदार को सोपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। पश्चिम बंगाल में हिंदुओं को प्रताड़ित करने एवं वक्फ कानून के विरोध की आड़ में संपूर्ण पश्चिम बंगाल को जिस प्रकार हिंसा की आग में जलाए जाने को लेकर विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया । विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट गेट पर पहुंचकर नायब तहसीलदार को ज्ञापन दिया। विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने ज्ञापन सौंपते हुए बताया हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा है, राष्ट्र विरोधी और हिंदू विरोधी तत्वों को निर्बाध रूप से अपने षडयंत्रों को क्रियान्वित करने की खुली छूट दी जा रही है, उससे स्पष्ट है कि प0 बंगाल की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। मुर्शिदाबाद से प्रारम्भ हुई यह भीषण हिंसा अब संपूर्ण बंगाल में फैलती हुई दिखाई दे रही है। वक्फ तो केवल बहाना था, असली उद्देश्य मुर्शिदाबाद को हिंदू शून्य बनाना था। इस उन्मादी जेहादी भीड़ ने हिंदुओं के 200 से अधिक घरों और व्यावसायिक दुकानों को लूटकर जलाया, सैकड़ो हिंदुओं को बुरी तरह घायल किया व तीन नागरिकों की निर्मम हत्या की गई। दर्जनों महिलाओं के शीलभंग भी किए गए। परिणाम स्वरूप 500 से अधिक हिंदू परिवारों को मुर्शिदाबाद से पलायन करना पड़ा। उनके पास जाकर उनकी चिंता एवं सहायता करने की अपेक्षा सुश्री ममता बनर्जी दंगा भड़काने वाले इमामो से मिल रही है जिनमें से एक इमाम ने एक दिन पहले ही धमकी दी थी कि ÷अगर ममता बनर्जी ने उनका साथ नहीं दिया तो वह उसकी औकात बता देंगे।÷ इस

दौरान विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं में महानगर मंत्री धर्मेंद्र, प्रांत मंत्री अनुज सिंह, महानगर अध्यक्ष अभिनव ओमर, जिला मंत्री ग्रामीण दीपक शुक्ला, विभाग मंत्री अशनील सिंह, सत्यवान शिव अवस्थी, बलराम, रणधीर सिंह पूजा रस्तोगी, अंकित नवनीत, सुमित खन्ना ऋषभ गुप्ता कृष्ण कुमार गुप्ता बृजेश गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

सी एम से शिकायत के बाद सरकारी जमीन कब्जाने वाले बनिका प्रधान पर कार्यवाही शून्य

● जो माननीय का खास उसके हर गुनाह माफ की तर्ज पर चल रहा तहसील प्रशासन

क्षेत्रीय लेखपाल बनिका और प्रधान मनोज की जुगलबंदी से सरकारी जमीनों पर प्रधान ने बनाई दुकान व मकान

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश सरकार के लाख प्रयासों के बाद भी तहसील सदर लखीमपुर में सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जा किए जाने का सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है जिसका जीता जागता उदाहरण तहसील सदर के अंतर्गत गांव बनिका में देखा जा सकता है जहां पर लेखपाल और राजस्व निरीक्षक व प्रधान मनोज के बीच साठ गांठ करके कई सरकारी जमीनों पर प्रधान द्वारा अवैध कब्जा करके उस पर आलीशान मकान व दुकान खड़ी कर लिए जाने का मामला जन चर्चा का विषय बना है सूत्र बताते हैं गाटा संख्या 749, 750, 683, 1072, 1083 के आशिक भागों पर ग्राम प्रधान द्वारा अवैध कब्जा करके मकान दुकान बनवाने के साथ कुछ भू भागों पर बाउंड्री वॉल करवा कर अवैध कब्जा किया जा चुका है और उक्त मामले की डीएम से लेकर सीएम तक शिकायत के बावजूद लेखपाल व राजस्व निरीक्षक के कान पर जू तक नहीं रेंग रहा है आज तक कोई कार्यवाही अमल में नहीं लाई जा रही है क्या ग्राम प्रधान पर एंटी भू माफिया कानून व सीएम के आदेश प्रभावी नहीं होते हैं सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत बनिका में विद्यालय के नाम पर आरक्षित रिक्त पड़ी जमीन गाटा संख्या 683 जिसमें आंगनबाड़ी केंद्र और स्वास्थ्य केंद्र बना है तथा रिक्त पड़ी अवशेष जमीन पर ग्राम प्रधान द्वारा अवैध कब्जा करने की नीयत से नीव भरवा दी इतना ही नहीं नवीन परती के नाम पर दर्ज कागज़ात जमीन गाटा संख्या 749 750 के आशिक भूभाग पर अन्नपूर्णा भवन बनवाकर शेष बची सरकारी जमीन पर प्रधान जी की हवेली बनी खड़ी देखी जा सकती है काफी बड़े पेट वाले और माननीय का सबसे खास बताने वाले बनिका प्रधान मनोज का पेट नहीं भरा तो गाटा संख्या 1083 व 1072 में आर आर सी सेंटर बनवाकर उसके दोनों तरफ रिक्त पड़ी से जमीन पर अवैध कब्जा करके उस पर बाउंड्री वॉल खड़ी कराकर योगी सरकार के एंट्री भू माफिया कानून को खूंटी पर टांग दिया गया उक्त आरोप लगाते हुए दर्जनों ग्रामीणों द्वारा संयुक्त रूप से मुख्यमंत्री से शिकायत करके सरकारी जमीन से अवैध कब्जा हटवाए जाने सरकारी जमीन कब्जाने वाले ग्राम प्रधान बनिका मनोज के विरुद्ध कार्यवाही किए जाने की मांग की गई है लेकिन रसूखदार लेखपाल साहब पर इन शिकायतों का कोई असर नहीं पड़ रहा है तहसीलदार तक पहुंची चढ़ावे की राशि के चलते उनको यह अवैध दिखाई ही नहीं पड रहे हैं या फिर लक्ष्मी जी के वशीभूत साहब यह सब देखना नहीं चाहते हैं।

अराजक तत्वों ने हनुमान जी एवं दुर्गा जी की मूर्ति तोड़कर अरे क्या फैलाने का प्रयास किया

● लोगों में आक्रोश बढ़ता देख सीओ बोले अराजक तत्वों पर होगी कार्रवाई।

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। थाना हैदराबाद क्षेत्र के ग्राम बेलवा में अराज तत्त्वों ने फिजा बिगाड़ने की कोशिश करते हुए गांव के बाहर बीरबाबा स्थान पर बने हनुमान जी के मंदिर व माता दुर्गा के मंदिर में लगी मूर्ति को अराजक तत्वों द्वारा तोड़ दी गई। इसकी जानकारी होने पर भारी संख्या में लोग मंदिर पहुंच गए। तोड़ी गई मूर्ति को देखकर ग्रामीणों का आक्रोश बढ़ने लगा। आरोप है कि माहौल बिगाड़ने के लिए शरारती तत्वों ने मूर्ति तोड़ी है। हिंदू संगठनों के लोग भी पहुंच गए। मामला बढ़ता देख घटनास्थल पर प्रशासनिक एवं पुलिस के अधिकारी भी पहुंच गये।

ग्रामीणों का कहना है कि बेलवा गांव के बाहर बीरबाबा स्थान पर बने हनुमान मंदिर और दुर्गा मंदिर काफी पुराना है। आसपास के लोग रोज इस मंदिर में पूजापाठ करने आते हैं। मंदिर के देख रेख करने वाले पुजारी जगदीश प्रसाद का आरोप है कि शुक्रवार की देर रात्रि को अराजक तत्वों द्वारा मंदिर का दरवाजा खोलकर उसमें लगी हनुमान जी और माता दुर्गा की मूर्ति को खंडित कर दी गई। यह सिर्फ माहौल बिगाड़ने के लिए किया गया उन्होंने ने बताया कि आज सुबह जब हम मंदिर की साफ सफाई करने आये तो देखा कि माता दुर्गा के वस्त्र मंदिर के बाहर पड़े थे।जिसपर हमको शंका हुई तो आगे बढ़कर मंदिर में घुसे तो देखा की माता रानी की मूर्ति टूटी थी।फिर हम हनुमान जी के मंदिर में गये तो देखा कि हनुमान जी की मूर्ति भी तोड़कर मंदिर में बिखेर दी। इस घटना को लेकर गांव वालों को जानकारी दी गई। ग्रामीणों ने हैदराबाद पुलिस व 100 नम्बर पुलिस को जानकारी दी। सूचना पर पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर ग्रामीणों से घटना की जानकारी ली। इसके बाद मौजूद ग्रामीणो व अखिल भारतीय हिंदू महासभा के जिला अध्यक्ष डाक्टर सचिन पांडे व जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष पीयूष शुक्ला ने पुलिस से कहा अराजक तत्वों के लोगों को गिरफ्तार कर कार्रवाई करे। देखते ही देखते माहौल भी बिगड़ने लगा। घटना स्थल पर मौजूद गोला उपजिलाधिकारी विनोद कुमार गुप्ता, मोहम्मदी पुलिस क्षेत्राधिकारी अरुण कुमार सिंह, गोला थाना प्रभारी चंद्र शेखर सिंह, हैदराबाद थाना प्रभारी प्रवीर गौतम अजान चौकी प्रभारी जेपी यादव ने ग्रामीणों से कहा जिसने भी मूर्ति तोड़ी है उस पर कार्रवाई का भरोसा दिलाते हुए तोड़ी गई मूर्तियों को मंदिर से उठवाकर किसी नदी में प्रवाहित करने के लिए भेजा और उस स्थान पर दूसरी मूर्ति की स्थापना किए जाने की व्यवस्था करने पर ग्रामीण शांत हुये।सीओ अरुण कुमार सिंह ने बताया कि बेलवा गांव में बीर बाबा स्थान पर मंदिर में हनुमान जी और दुर्गा माता का मंदिर किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा मंदिर की मूर्ति को तोड़ा गया है इस सम्बन्ध में अभियोग पंजीकृत कर लिया गया है विधिक कार्रवाई की जा रही है।

डोरेमोंस इंटरनेशनल स्कूल में उच्च स्तरीय डिजिटल शिक्षा का आयोजन

डोरेमॉन्स इंटरनेशनल स्कूल में हुआ भव्य वेलकम ओरिएंटेशन प्रोग्राम ,नए सत्र की शानदार शुरुआत ,डोरेमॉन्स इंटरनेशनल स्कूल में आज नए सत्र का स्वागत एक शानदार वेलकम ओरिएंटेशन प्रोग्राम के ज़रिए किया गया, कार्यक्रम की शुरुआत में मंच संचालन कर रही स्कूल की,को-ऑर्डिनेटर अंशिका बाथम ने सजीव अंदाज़ में समस्त अभिभावकों का गर्मजोशी से स्वागत किया।

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। डोरेमॉन्स इंटरनेशनल स्कूल प्रधानाचार्या दीपमाला रस्तोगी ने माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया और बच्चों के उज्जवल भविष्य की कामना की। एकेडमिक कोऑर्डिनेटर उदय प्रताप सिंह ने अपने प्रेरक संबोधन में स्कूल की उपलब्धियों और आने वाले समय में होने वाले अभिनव परिवर्तनों की जानकारी दी। मोबाइल फोन के सुरक्षित व सकारात्मक उपयोग पर उनकी सलाह ने सभी अभिभावकों को गहराई से प्रभावित किया।डिसिप्लिन इंचार्ज अलीशा सिंह ने अनुशासन को दंड नहीं, बल्कि प्रगति की नींव बताया। उन्होंने कहा कि डोरेमॉन्स स्कूल में अनुशासन का उद्देश्य बच्चों को एक सुरक्षित, सकारात्मक और सहयोगपूर्ण वातावरण देना है, जिससे वे शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से विकास कर सकें। दिल्ली से आई हुई एकेडमिक हेड काउंसलर दीक्षा दुबे ने टेक्नोलॉजी की मदद से बच्चों के ज्ञान और समझ को बेहतर बनाने के नए आयाम साझा किए। उन्होंने बताया कि यह ऐप बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को न सिर्फ रोचक बनाएगा, बल्कि उन्हें प्रतिस्पर्धा में आगे भी रखेगा। एकेडमिक मॉनिटर हीरा सिंह जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम अकादमिक और समग्र विकास के बीच संतुलन पर जोर देते हैं नियमित कक्षा शिक्षण को इंटरएक्टिव सत्रों प्रोजेक्ट वर्क समूह गतिविधियों और डिजिटल उपकरणों से समृद्ध किया जाता है ।हमारे यहां शिक्षक केवल पढ़ते ही नहीं है बल्कि वह मार्गदर्शन और परामर्श भी देते हैं ताकि प्रत्येक छात्र की क्षमता को निखारा जा सके। हम सभी मिलकर एक सकारात्मक और प्रोत्साहन भरा वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं जहां आपके बच्चे प्रेरित आत्म विश्वासी और भविष्य की चुनौतियों के लिए अपने आप को तैयार महसूस करें।कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्या दीपमाला रस्तोगी ने सभी उपस्थित अभिभावकों, शिक्षकों और मेहमानों का आभार व्यक्त किया।इस अवसर पर मुकेश पाल, मानसी रोहरा, शंकर लाल, इकरा खान, शुभम सक्सेना, रोमाना आरिफ, आकांक्षा मिश्रा, विशाल कनौजिया, यशी रस्तोगी, अलीशा सिंह, हीरा सिंह, पंकज कुमार सक्सेना, चारु अग्निहोत्री, शुभि गुप्ता, इफरा अंजुम, वैष्णवी, सहित समस्त शिक्षकगण मौजूद रहे।

मेला चैती के सांस्कृतिक मंच पर बही स्थानीय संगीतकारों की बयार

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ खीरी। छोटी काशी गोला के ऐतिहासिक मेला चैती के पन्द्रहवें दिन सांस्कृतिक मंच पर स्थानीय संगीत कार्यक्रम का आयोजन एडवाइजर बी एच एल अवनी पांडेयक्ष की अध्यक्षता में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विमल वर्मा ब्लैक प्रमुख कुंभी के साथ विशिष्ट अतिथि प्रेमचंद जायसवाल, समाजसेवी शिव गोपाल गुप्ता, समाजसेवी केशव अग्रवाल, सुखविंदर सिंह टोनी ,हरजीत सिंह भाटिया, पूर्व सभासद देवी दयाल वर्मा,पूर्व सभासद श्रीकांत तिवारी, शिप्रा खरे साहित्यकार,पत्रकार लोकेश गुप्ता, समाजसेवी विमलेश वर्मा, महेश चन्द्र कमल, गुरदीप सिंह, शकील ,कार्यक्रम अध्यक्ष लीगल एडवाइजर बी एच एल अवनी पाण्डेय उपस्थित थे और नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ल रिंकू ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि विमल वर्मा ने कार्यक्रम के संबोधन में कहा कि, मेला चैती की सजावट, साफ-सफाई बहुत अच्छी है इसके लिए मै चेयरमैन विजय शुक्ला रिंकू को बधाई देता हूँ। कार्यक्रम अध्यक्ष अवनी पाण्डेय ने कहा कि,मेला चैती हमारी संस्कृति विरासत है इसे संजोए रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने कहा कि ऐतिहासिक चैती मेला में आतिथ्य स्वीकार करने के लिए तथा सहयोग करने के लिए सभी का आभार ऐतिहासिक मेला चैती के सांस्कृतिक मंच पर स्थानीय संगीत की शुरुआत राजेश गुप्ता ने भजन - वो काला बासुरी वाला सुध विसराय गयो मोरी रे से की।

गीत- लगी आज सावन की फिर वो झड़ी है, दिल के टुकड़े टुकड़े करके, मुस्कराके चल दिये। आदेश राजपूत ने- ओ पत्थर के समन तुझे मैने मोहब्बत का खुदा जाना। मिल के न होंगे जुदा, आ कसम खा लें।जिन्दगी की न टूटे लड़ी प्यार करले घड़ी दो घड़ी। इक प्यार कर नगमा है, मौजो की रवानी है। बृजेश कुमार तिवारी- क्या तुम्हे पता है ऐ गुलशन तेरे दिलवर आने वाले हैं। तुमको मेरे दिल ने पुकारा है बड़े नाज से।एपर्वत के पीछे चंवेदा गांव, गांव में दो प्रेमी रहते हैं। इसी के साथ

श्रीराम शाह, सावन सैनी, मोहम्मद इमरान, निर्मल राठौर- आर्गन पर राजेश गुप्ता, अली अहमद, ढोलक पर महेश आजाद और पैड पर मुन्ना ने साथ दिया। इस अवसर पर नगर अध्यक्ष भाजपा शत्रोहन मिश्रा, कुम्भी मण्डल अध्यक्ष रविन्द्र कटियार, विजय मिश्रा, सुनील मिश्रा, अरविन्द मिश्रा, काके सहगल, लवकुश अवस्थी सभासद नानक चन्द्र वर्मा, धर्मेन्द्र तिवारी, साहिद अंसारी, रियाजुद्दीन,सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

ग्राम पंचायत में पानी की समस्या से जूझ रहे है ग्रामीण टैंकर से दिया जा रहा है ग्रामीणों को पानी

ग्रामीणों से लेकर गौशाला तक में टैंकर से दिया जा रहा है पानी पानी की समस्या नहीं होने देंगे प्रशांत कुमार दुबे

हलिया मिर्जापुर। स्थानीय विकासखंड के ग्राम पंचायत गौरवा में भीषण गर्मी होने के कारण जल स्तर नीचे चला गया है जिससे ग्रामीणों को पानी की व्यवस्था को देखते हुए ग्राम प्रधान प्रतिनिधि प्रशांत कुमार दुबे के द्वारा लगातार टैंकर से पानी ग्रामीण से लेकर गौशाला तक पहुंचाया जा रहा है प्रशांत कुमार दुबे ने बताया कि जिस बस्ती में पानी की समस्या होता है उस बस्ती में तुरंत टैंकर से पानी सप्लाई कराया जाता है दिनभर में गौशाला में लगातार दो टैंकर खड़ा कर दिया गया है पशुओं को पीने के लिए पानी की व्यवस्था तुरंत कराया जा रहा है ग्राम पंचायत में पानी की जटिल समस्या कहीं-कहीं बस्तियों में हो गया है लेकिन टैंकर से पानी बराबर पहुंचा जा रहा है इतनी भीषण गर्मी और तेज धूप होने से इस वर्ष हमारे ग्राम पंचायत में जलस्तर नीचे चला गया है नहीं तो पानी का कोई समस्या नहीं होता था गौशाला में बोर हुआ है बराबर पानी मिलता था इस वर्ष पानी का जलस्तर नीचे चला गया जिससे टैंकर से पानी गौशाला तक पहुंचाया जा रहा है किसी भी बस्ती में पानी के लिए नहीं परेशान होंगे ग्रामीण।

पीटीओ ने बिना पंजीकरण के चल रहे दो ई रिक्शा व एक ऑटो को सीज किया

हलिया मिर्जापुर। बिना पंजीकरण के सवारी को लेकर फर्राटे भर रहे दो ई रिक्शा व एक ऑटो को शुक्रवार की शाम पीटीओ महेंद्र पांडे ने हलिया ड्रमडगज मार्ग से पकड़ कर तीनों वाहनों के चालकों से कागजात की मांग किया लेकिन तीनों वाहनों के चालकों द्वारा कागजात नहीं देखा पाने पर पीटीओ ने तीनों वाहनों को चीज कर हलिया पुलिस की अभिरक्षा में सुपुर्द कर दिया है पीटीओ के इस कार्यवाही से बिना पंजीकरण के चल रहे वाहनों के चालकों में हडकंप मच गया है ऐसे वाहन के चालक वाहनों को एक किनारे लगाकर इधर-उधर हो लिए पीटीओ के जाने के बाद वाहन चालक वाहन लेकर अपने गतब्य को रवाना हुए इस संबंध में पीटीओ महेंद्र पांडे ने बताया कि बिना पंजीकरण के सवारी को लेकर जा रहे दो ई रिक्शा वाहन व एक ऑटो को चीज कर पुलिस की अभिरक्षा में सुपुर्द कर दिया गया है आगे भी यह अभियान चलता रहेगा।

विवाहिता की मा की तहरीर पर पुलिस ने विवाहिता के पति सहित 6 लोगों के विरुद्ध दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज किया

हलिया मिर्जापुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के बंजारी खुर्द गौरवा गांव निवासी इन्द्रकली पत्नी रमाशंकर ने शुक्रवार की देर शाम थाने में तहरीर देकर पुत्री की दहेज को लेकर प्रताड़ित कर हत्या करने के आरोप में विवाहिता के पति सहित छे लोगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया है पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच पड़ताल करने में जुड़ गई है दिए गए तहरीर में बताया कि अपनी पुत्री 25 वर्षीय सुनीता की शादी में 2019 में हलिया थाना क्षेत्र के कुशियरा गांव निवासी कमलेश के साथ हिंदू रीति रिवाज के अनुसार किया गया था शादी के समय क्षमता अनुसार दान दहेज दिया गया था शादी के 6 माह से विपक्षी पति कमलेश साकेत व सासु देवर विमलेश देवरानी तथा मौसी बचन व मौसी द्वारा मिलकर दहेज में मोटरसाइकिल तथा अंगूठी ना मिलने को लेकर प्रताड़ित करते चले आ रहे थे कि 17 अप्रैल को दिन में मारपीट कर फंदे पर लटका दिया गया और समय लगभग 7:00 बजे शाम दुरभाष से मुझे पुत्री की तबीयत खराब होने की सूचना दिया जिस पर मेरी बहन के पहुंचने पर मौत की पुष्टि हुई जिस पर पुलिस ने ताहरीर के आधार पर जांच पड़ताल करने में जुड़ गई पूरे मामले की जांच को लालगंज अशोक कुमार सिंह द्वारा किया जाएगा संबंध में प्रभारी निरीक्षक वीरेंद्र सिंह ने बताया कि शरीर के आधार पर विवाहिता के पती सहित 6 लोगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच पडताल किया जा रहा है।

जनपद के चतुर्दिक विकास व जनहितार्थ, मा. जनप्रतिनिधियों ने विकास कार्य योजना व फरियादों से प्राप्त संदर्भों, सुझावों को रखा पटल पर

●जनप्रतिनिधियों से प्राप्त संदर्भों के निस्तारण व क्रियान्वयन की दिशा में कलेक्ट्रेट सभागार में संपन्न हुई बैठक

जन प्रतिनिधियों से प्राप्त शिकायत संदर्भों, सुझाव, विकास योजनाओं को डीएम ,एसपी ने गंभीरता से सुन कर विश्वास दिलाया कि विकास परक व जनहितार्थ में उनकी अपेक्षाएं होगी पूर्ण

स्वतंत्र प्रभात

भदोही – जनपद के चतुर्दिक विकास व जनहितार्थ मा. जनप्रतिनिधियों से वर्ष 2024 एवं 25 में प्राप्त संदर्भों के निस्तारण व क्रियान्वयन की दिशा में मा जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी ,मा विधायक औराई दीनानाथ भास्कर, ज्ञानपुर विपुल दुबे ,जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा, मा सांसद प्रतिनिधि अभिषेक कुमार गौड रवि ,जिलाधिकारी विशाल सिंह, पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक, मुख्य विकास अधिकारी डॉ शिवाकांत द्विवेदी एवं अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित जनपद प्रतिनिधियों द्वारा जनपद के बहुआयामी विकास हेतु व जनपदवासियों व फरियादियों की शिकायतों के निस्तारण हेतु अपनी बातें कहीं। बैठक में अधिकांश शिकायतें पीडब्ल्यूडी की सड़क, समाज कल्याण विभाग की पेंशन ,विद्युत ,जल जीवन मिशन आदि विभागों से संबंधित रही। मा.विधायक ज्ञानपुर विपुल दुबे ने सड़क चौड़ीकरण के क्रम में नथईपुर ,अकोढा सड़क मार्ग में आने वाले विद्युत पोल को पीछे करने की बात कही।धारा 80 का निर्णय विलंब से ना हो। गांव का विद्युतीकरण सौभाग्य 3 योजना के सर्वे के अंतर्गत एक्शईएन विद्युत द्वारा बताया गया की 27 गांव में सर्वे का कार्य चल रहा है, जिलाधिकारी ने संतृप्त करने के भाव से कार्य करने हेतु निर्देशित किया । विपुल दुबे ने 15 सड़कों की सूची देते हुए रिनुवल करने का निर्देश दिया। सिंचाई नहर विभाग द्वारा खरगापुर भीटी के पास सिंचाई पुल धवस्त हो जाने से आवागमन में बाधा के दृष्टिगत नए पुल

की आवश्यकता पर बल दिया।

विधायक औराई दीनानाथ भास्कर ने जनपद के विकास एवं फरियादियों की शिकायतों को उठाते हुए समस्या के निस्तारण हेतु बिन्दुसार कार्य योजना रखी। लगभग एक दर्जन कृषक दुर्घटना का प्रकरण तहसील औराई में विचाराधीन है लेकिन वह रिपोर्ट अभी तक संबंधित को नहीं भेजी गई। दवनपुर में अतिक्रमण किए गए रास्ता के संबंध में, उमरहाँ तीन तालाब के आवंटन के संबंध में, खेमईपुर एवं कोलाहलपुर के प्रकरण में कड़ी कार्रवाई,परानापुर औराई के पुल पर एप्रोच रोड के प्रकरण का निस्तारण,फूल गेंना देवी कटेबना द्वारा प्रेषित कृषक दुर्घटना बीमा की रिपोर्ट लगवाने के संबंध में, कटेबना में 200 मी. रोड के मरम्मत के संबंध मे,प्राथमिक विद्यालय नेवादा के अतिक्रमण को हटाने के संबंध में। ग्राम पिलखनी तहसील औराई में 15 लोगों को आवासीय पट्टा दिया गया परंतु कंप्यूटर पर नाम चढ़ाने में हिला हवेली हो रही है। विनोद प्रजापति अवर अभियंता विद्युत चकापुर एवं औराई को जनता की शिकायतों के आधार पर अन्यत्र हटाया जाए। चकोड़ा के मौजा डोढ़वा में सीसी रोड पर खोदकर जल जीवन मिशन द्वारा पाइप गई है जिसके मरम्मत के संबंध में,महाराजगंज राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में चौकीदार की हत्या के वर्कआउट के संबंध में तथा मृतक आश्रित की नियुक्ति के संबंध मे,चौरी बाजार में देसी एवं अंग्रेजी शराब की 03 दुकान एकदम स्कूल एवं मंदिर के बगल में खोलीं गई है जबकि बाजार के अगल-बगल तमाम जगह है। माधव सिंह हाईवे से टेढ़वा मोड तक वाया खमरिया। चकवा नहर की पटरी से ज्ञानपुर गोपीगंज रोड तक। गरौली से उगापुर एलडी रोड तक वाया चकबिरा मरम्मत कार्य, एलडी रोड उपरौठ से बसंतापुर दलित बस्ती तक नहर की पटरी का मरम्मत कार्य, दवनपुर से भाला नहर की पटरी तक नई बनाई गई रोड अत्यंत जीर्ण शीण हो गई है इसकी जांच कराकर कार्रवाई की जाए। माधो सिंह जीटी रोड से असंनाव तक पीएमजीएसवाई रोड से पीडब्ल्यूडी में आ चुकी है जिसका विशेष कार्य मरम्मत में कार्य कराया गया है अत्यंत खराब स्थिति में है जांच कर कारवाई करें। वर्ष 2022 में कोठरा से भरतपुर तक रोड का विशेष कार्य मरम्मत में स्वीकृति प्राप्त हुई थी अधी रोड बनाई गई और आधी रोड आज तक नहीं बनी जिसकी जांच कर कार्रवाई कराया जाए। त्रिलोकपुर, चक मसूद मोहम्मदपुर के पानी के टंकी के सन्दर्भ में। वासुदेवपूर में हिट एंड रन के 3 बच्चे के संबंध में मुआवजा दिया जाय।अहिमनपुर में मुकदमा का प्रकरण,कटेबना में दलित उत्पीड़न,जन्म प्राण पत्र पेंडिंग पड़ा हैं। शुकुलपुर चकबीरा, ब्लॉक औराई में शुकुलपुर नकटापुर चौराहा से पियरोपुर तक नवनिर्मित मार्ग पर पाइप बीचो बीच बिछाई गई है।

पिपरगांव नहर की पुलिया से कमलेश गौतम के घर तक नई इंटरलॉकिंग हटा कर पाइप बिछाई गयी है। त्रिलोकपुर, दलापुर, रमईपुर (मम्महर), मूलापुर, चकौड़ा में पानी की पाइप के लिए खोदे गए स्थानों का मरम्मत नहीं हो सका। माधोसिंह उत्तरी सर्विस लेन पर अत्यधिक कूड़ा है। हटवाया जाए और न रखे जाने पर विचार किया जाए। ग्राम सभा कटेबना नहर के पीच रोड से मौर्य व दलित बस्ती होते हुए रमाशंकर मौर्य के घर तक दूरी लगभग 800 मीटर रोड का मरम्मत कार्य कराने की कृपा करें। यह रोड जिला पंचायत की है जिसे रिपेयर होना आवश्यक है। जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी ,जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा व उपस्थित अन्य जन प्रतिनिधियों द्वारा भी जनपद के विकास हेतु अनेक विकास योजना, शिकायतें, सुझाव को पटल पर रखा गया। जिलाधिकारी ने उपस्थित सभी जन प्रतिनिधियों से प्राप्त शिकायत संदर्भों, सुझाव, विकास योजनाओं को गंभीरता से सुनते हुए विश्वास दिलाया कि विकास परक व जनहितार्थ में उनकी अपेक्षाएं प्राथमिकता पर पूर्ण की जाएगी। पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने जन प्रतिनिधियों द्वारा कानून व शांति व्यवस्था के अंतर्गत उठाए गए विभिन्न बिंदुओं पर पूर्ण अस्वासत किया कि नियमानुसार प्रभावी कार्रवाई की जाएगी। बैठक में ब्लॉक प्रमुख ज्ञानपुर प्रतिनिधि बबलू सिंह, नगर पंचायत नई बाजार प्रतिनिधि ,अपर जिला अधिकारी कुंवर वीरेंद्र मौर्य ,अपर पुलिस अधीक्षक शुभम अग्रवाल, समस्त उप जिलाधिकारी ,पुलिस क्षेत्राधिकार, तहसीलदार ,खंड विकास अधिकारी, समस्त अधिशासी अभियंता सहित सभी विभागों के विभागध्यक्ष उपस्थित रहे।

एफपीओ का आदर्श मॉडल बना नवचेतना एग्रो सेंटर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड

●कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने की सराहना

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़ , मीरजापुर। उत्तर प्रदेश में सतत कृषि विकास, तकनीकी नवाचार और किसानों के सामुहिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मीरजापुर में मंडल स्तरीय एफपीओ बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता प्रदेश के माननीय कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने की, जिसमें 91 एफपीओ ने भाग लिया और अपने उत्पादों, सेवाओं व नवाचारी प्रयासों का प्रभावशाली प्रदर्शन किया।इस विशेष अवसर पर नवचेतना एग्रो सेंटर प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, सीखड़ मीरजापुर

के कार्यों को विशेष रूप से सराहा गया। माननीय कृषि मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही ने अपने संबोधन में नवचेतना एफपीओको एफपीओ मॉडल को आदर्श बताते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश के अन्य एफपीओ को नवचेतना जैसी संस्थाओं से सीखना चाहिए कि किस प्रकार सामुहिक प्रयास, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सतत कृषि पद्धतियाँ मिलकर किसानों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं। माननीय कृषि मंत्री ने नवचेतना एफपीओ के मुख्य कार्यालय और परियोजना स्थलों का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने नवचेतना द्वारा स्थापित महिला-संचालित मृदा परीक्षण केंद्र का उद्घाटन किया। यह केंद्र किसानों को वैज्ञानिक, सुलभ और समयबद्ध मृदा परीक्षण सेवाएं प्रदान करता है। इसकी सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इसका संचालन पूरी तरह तकनीकी रूप से प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा किया जा रहा है।

यह केंद्र मिट्टी के 12 प्रमुख मानकों - जैसे पीएच, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम, ऑर्गेनिक कार्बन, सूक्ष्म पोषक तत्व आदि - की जांच करता है। विशेष जोर ऑर्गेनिक कार्बन की मात्रा बढ़ाने पर दिया जाता है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति को प्राकृतिक रूप से पुनः जीवित किया जा सके। ज्ञान, रोजगार और सामाजिक सशक्तिकरण का केंद्र नवचेतना द्वारा संचालित यह केंद्र केवल एक तकनीकी सुविधा नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान, रोजगार, कौशल विकास और पर्यावरणीय चेतना का केंद्र बनकर उभरा है। इससे न केवल किसानों को वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त हो रही है, बल्कि वे अपनी खेती में बदलाव कर उत्पादकता और लाभ में भी वृद्धि कर पा रहे हैं। इस पहल के माध्यम से नवचेतना एफपीओ ने प्रधानमंत्री के 'किसानों की आय दोगुनी करने' के सपने को साकार करने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। यह केंद्र जैविक खेती को प्रोत्साहित0ो तकनीकी प्रशिक्षण देने और कार्बन उत्सर्जन घटाकर जलवायु परिवर्तन से लड़ने जैसे कई आयामों को साथ लेकर चल रहा है। समारोह में नवचेतना एफपीओ के डायरेक्टर अन्जू शुक्ला, मुकेश त्रिपाठी, अखिलेश त्रिपाठी, रामू मिश्रा, सुकेश पटेल, रजनीकान्त पांडेय, चन्दमौली पांडेय,शिवम सिंह , विशाल सिंह, रामाकृष्णा, रितेश प्रसाद, अमित त्रिपाठी, हंसराज यादव, आशा देवी, सहित सैकड़ों एफपीओ के कर्मचारी और किसान सदस्य पुरुष महिला उपस्थित रही।

अम्बेडकर जयंती उत्सव पर नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने किया श्रमदान

मीरजापुर। भारत रत्न डॉ भीमराव अम्बेडकर की जयंती उत्सव पर विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से नगर पालिका परिषद मीरजापुर उनको नमन कर रही है।इसी क्रम में नपाध्यक्ष श्यामसुंदर केशरी ने भाजपा कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय सभासद के साथ पुरानी दशमी वार्ड में विशेष सफाई जागरूकता अभियान चलाया।उन्होंने आस पास झाड़ू लगाकर श्रमदान कर स्वच्छता का संदेश दिया।इस मौके पर उन्होंने कहा कि अम्बेडकर जयंती को एक उत्सव के रूप में मनाया जा रहा है,नगर पालिका मीरजापुर द्वारा विभिन्न कार्यक्रम कर इस उत्सव को मनाया जा रहा है।आज इस वार्ड में श्रमदान कर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया है।इस मौके पर वार्ड के सभासद हुकुमचंद मौर्य, सनथ केशरी,श्रीकांत सहित मोहल्लेवासी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

तहसील औराई में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने फरियादियों की शिकायतों को गंभीरता से सुनकर किया निस्तारण

●जिलाधिकारी के समक्ष भूमि पैमाइश की अधिकांश शिकायत आने पर राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम बनाकर प्रभावी कार्रवाई करने का उप जिलाधिकारी को दिया निर्देश

जनपद के सभी अधिकारी/कर्मचारी भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर करें कार्य जिलाधिकारी

राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम, मौके का स्थलीय निरीक्षण कर कराए संतुष्टिपरक निस्तारण-पुलिस अधीक्षक

स्वतंत्र प्रभात

भदोही – शासन के मंशानुरूप जनशिकायतो के त्वरित निस्तारण एवं कार्यवाही के दृष्टिगत ''सम्पूर्ण समाधान दिवस'' जनपद के सभी तहसीलों में आयोजित किया गया। तहसील औराई में जिलाधिकारी विशाल सिंह एवं पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. शिवाकांत द्विवेदी,सीएमओ डॉ संतोष कुमार चक, उप जिलाधिकारी औराई बरखा सिंह, तहसील ज्ञानपुर में अपर जिलाधिकारी कुंवर वीरेंद्र मौर्य, अपर पुलिस अधीक्षक शुभम अग्रवाल, उप जिलाधिकारी शिवप्रकाश यादव, तहसील भदोही में अपर जिलाधिकारी शिव नारायण सिंह,उप जिलाधिकारी अरुण गिरी, अन्य अधिकारियो द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस में उपस्थित होकर फ़रियादियों की समस्याओ को गंभीरता से सुन कर निस्तारण किया गया। सभी तहसीलों में जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में लगायें गये विभिन्न कैम्पो- बाल विकास पुष्ठाहार विभाग, आयुष्मान गोल्डेन कार्ड, परिवार नियोजन, समाज कल्याण विभाग द्वारा वृद्धावस्था पेंशन, महिला कल्याण विभाग द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं के उन्ययन हेतु विविध योजना मिशन शक्ति, राजस्व विभाग हेल्प डेस्क, जागरूकता हेतु लगाये गये। तहसील औराई में जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने निरीक्षण करते हुयें उनके द्वारा लाभार्थियों को दी जाने वाली योजनाओं एवं सुविधाओं की जानकारी ली। जिलाधिकारी के समक्ष विभिन्न विभागो से सम्बन्धित तहसील औराई में फरियादियो के द्वारा

कुल 53 समस्याओ से अवगत कराया गया। जिसमें से जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक द्वारा 06 प्रार्थना पत्रो को मौके पर ही निस्तारित करते हुये शेष 47 प्रार्थना पत्रो को सम्बन्धित विभाग के अधिकारियो को निर्धारित समय सीमा के अन्दर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारित करने का निर्देश दिया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी विशाल सिंह ने कहा कि आज तहसील दिवस में अधिकांश शिकायतें भूमि पैमाइश को लेकर रही जिसके लिए राजस्व व पुलिस की संयुक्त टीम मौके का स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट लगाएंगी तथा प्रभावी क्रियान्वयन करना सुनिश्चित करेंगे। केंद्र व प्रदेश सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ आम जनमानस व अंत्योदय तक पहुंचे, इसके लिए सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया गया है।

जिलाधिकारी ने कहा कि उप जिलाधिकारी, तहसीलदार व नायब तहसीलदार अपने-अपने कोर्टो के लंबित मुकदमों का गुणवत्तापरक व ससमय निस्तारण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने बताया कि मुकदमे के सुनवाई के लिए आम इंसान व किसान दूरदराज के क्षेत्रों से बड़ी आशा के साथ आते हैं,उनके केसों को जल्द ही डिस्पोजल किया जाए। जनपद भदोही के सभी अधिकारी/कर्मचारी भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति पर कार्य करें।उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों को निर्देशित किया कि देश व प्रदेश में जो इन्नोवेशन/नवाचार कार्य हो रहे हैं वह अपने यहां भी क्रियान्वित करें । पुलिस अधीक्षक अभिमन्यु मांगलिक ने कहा कि राजस्व संबंधित मामलों में कानूनगो ,लेखपाल व पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा स्थलीय निरीक्षण,सत्यापन कर एक हफ्ते के अन्दर निस्तारण करने का निर्देश दिया। संयुक्त टीम मौके पर जाकर दोनो पक्षों व गवाहों के साक्ष्य लेते हुए स्पॉट नोट तैयार कर उसपर हस्ताक्षर कराये। उन्होंने सभी तहसीलदारों को निर्देशित किया कि जो मामले या विवाद बार बार आ रहे है,उनकी सूची बनाकर पुलिस के साथ मिलकर मामले का निस्तारण करना सुनिश्चित करायें। सम्पूर्ण समाधान दिवस पर तीनों तहसील में उपर्युक्त अधिकारियों द्वारा कुछ फरियादियों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण करते हुए शेष निस्तारण के लिए सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। संपूर्ण समाधान दिवस तहसील भदोही में प्राप्त कुल 32 शिकायतों में 05 का त्वरित निस्तारण, तहसील ज्ञानपुर में कुल प्राप्त 25 शिकायतों में से 05 का त्वरित निस्तारण किया गया।

पीआरवी 2314 के पुलिसकर्मियों की तत्परता व बहादुरी से बची युवक की जान

● पेड़ से फांसी पर लटके युवक की जान बचाने के लिए पुलिसकर्मियों ने तत्परता पूर्वक फंदे से उतारा

स्वतंत्र प्रभात

दिनांक 18.04.205 की रात्रि करीब 11.30 बजे थाना सुरियावां क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सागरपुर में डायल 112 पीआरवी पर सूचना प्राप्त हुआ कि ससुराल में आये सुभाषनगर कला निवासी थाना ऊंज उम्र करीब 24 वर्ष नशे की हालत में विवाद के उपरांत घर के पीछे पेड़ में फांसी लगा लिया है । सूचना पर तत्काल 112 पीआरवी मौके पर पहुंची। अभिमन्यु मांगलिक पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा पीआरवी वाहनों को सूचना पर तत्काल रिस्पांस देने हेतु निर्देशित किया गया है । उक्त निर्देश क्रम में सूचना पर 112 पीआरवी वाहन 2314 पर ड्यूटीरत पुलिस कर्मियों द्वारा

तत्काल ग्राम सागरपुर में पहुंचकर त्वरित कार्यवाही करते हुए फांसी के फंदे लटके हुए युवक को उतार कर अपने पीआरवी वाहन से नजदीकी सीएचसी सुरियावां लाया गया जिसे प्राथमिक उपचार के उपरांत जिला अस्पताल ज्ञानपुर रेफर कर दिया गया ईलाज से युवक की पूर्णतः स्वास्थ्य है। अब अपने घर परिजनों के साथ है। युवक के परिजनों व स्थानीय लोगों द्वारा पुलिसकर्मियों द्वारा किए गए त्वरित कार्यवाही व बहादुरी की भूरि- भूरि प्रशंसा की जा रही है। पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा पुलिसकर्मियों की तत्परतापूर्वक कार्यवाही व बहादुरी की प्रशंसा की गई ।

गोपीगंज क्षेत्र अंतर्गत महिला से झाड़-फूंक के नाम पर आभूषण मंगलसूत्र छल पूर्वक चोरी करने का आरोपी गिरफ्तार

कब्जे से मंगलसूत्र पीली धातु बरामद

स्वतंत्र प्रभात

दिनांक-13.04.2025 को वादिनी थाना कछवा जनपद मिर्जापुर निवासी द्वारा थाना गोपीगंज पर सूचना दिया कि अज्ञात व्यक्ति द्वारा मेरे पति के उपर संकट बताकर झाड़ फूंक करने के लिए गोपीगंज मजार पर बुलाकर धोखे से पोटली में मंगलसूत्र रखवाकर,पोटली में रखा मंगलसूत्र निकाल लिया । सूचना पर अज्ञात के विरुद्ध थाना गोपीगंज पर मु0अ0सं0-168/2025 धारा-318(4),316(2) बी0एन0एस0 का अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही प्रचलित की गई। अभिमन्यु मांगलिक, पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा पंजीकृत अभियोग से सम्बंधित अभियुक्तों

की शीघ्र गिरफ्तारी/अनावरण हेतु दिए गए निर्देश के क्रम में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य/सीसीटीवी फुटेज व मुखबिर की सूचना के आधार पर आज दिनांक-19.04.2025 को थाना गोपीगंज पुलिस टीम द्वारा पंजीकृत अभियोग से सम्बन्धित अभियुक्त अशोक कुमार हरिजन पुत्र भुवर निवासी ग्राम गदियानी सरैया थाना मऊ आईमा जनपद प्रयागराज उम्र करीब 50 वर्ष को सराय जगदीश रे0 स्टेशन से गिरफ्तार कर कब्जे से मंगलसूत्र पीली धातु बरामद किया गया ।गिरफ्तारी बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 303(2),317(4)बीएनएस की बढ़ोत्तरी कर विधिक कार्यवाही के उपरांत चालान सम्बंधित मा0 न्यायालय किया गया।

कार्यालय ग्राम पंचायत- छीतकपुर वि.खं. सीखड़, मीरजापुर

अल्पकालीन निविदा सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य योजना / पंचम राज्य वित्त आयोग एवं पन्द्रहवा वित्त आयोग (केन्द्रीय वित्त आयोग), मनरेगा योजना, स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), एवं अन्य शासकीय योजनाओं से ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्यो के लिए निम्नलिखित सामग्री के आपूर्ति हेतु अल्पकालीन निविदा निम्न शर्तो के अधीन आमंत्रित किया जाता है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता/ सामग्री की आपूर्ति हेतु ग्राम पंचायत कार्यालय से आवेदन शुल्क 500.00 रुपया जमा कर आवेदक निविदा प्रपत्र प्राप्त कर दिनांक 19/4/25 से दिनांक 22/4/25 को सुबह 10 से 4 बजे तक बन्द लिफाफे में डाल सकते है, जो दिनांक 23/4/25 को पूर्वाह्न 12 बजे क्रय समिति/निर्माण कार्य समिति के सदस्यों के समक्ष ग्रा.प. कार्यालय में स्वीकृति हेतु खोली जायेगी। आपूर्ति की जाने वाली सामग्री का विवरण निम्नवत है-

सामग्री का विवरण-1. ईट प्रथम श्रेणी प्रति हजार, 2. इण्टरलाकिंग प्रति हजार, 3. लाल बालू मोरंग, महीन बालू प्रति घननी., 4. ईट गिट्टी 25 एम.ए. प्रति घन मी., 5. एस्बेस्ट्रस सीट, पैन सीट, दरवाजा प्रति नग, 6. टाइल्स, कोटा स्टोन प्रति वर्ग मी., 7. स्टोन ब्लाडर प्रति घन मी., 8. NPx ह्यूग पाइप 250, 300, 350, 450, 600m m प्रति नग मी., 9. सोलर लाइट, बेट्री, पैनल, स्ट्रीटलाइट 252, 452, 352 प्रति नग, 10. हैण्डपम्प मरम्मत एवं रिबोर सामग्री प्रति नग, 11. सीमेंट प्रति बोरी व प्रति घन मी., 12. सरिया प्रति कुन्तल, 13. पटीया 1 बोर्ड प्रति नग, 14. फर्नीचर क्रय/R.O. वाटर कूलर, प्रति नग, 15. लोहा, एन्गल प्रति किलो ग्राम, 16. PVC पैनल कार्य प्रति वर्ग मी., 17. कार्यालय स्टेशनरी, 18. रंगाई, पुताई इत्यादी सम्बंधित सामग्री, 19. प्लम्बरिंग सामग्री (CPVC) नल, समरसेबुल प्रति नग. 20. SBM-G सम्बंधित सामग्री प्रति नग, 21. PVC पाईप प्रति मीटर, एवं अन्या, 22- डस्टबिन ग्रा.पं. कार्यो की सूची तथा प्रतिबन्ध एवं शर्ते ग्रा.पं. कार्यालय पर उपलब्ध है । निविदादाता प्रत्येक कार्य / सामग्री की अलग-अलग निविदा डालने हेतु स्वतंत्रत है।

मुकेश सिंह
प्रधान
ग्राम पंचायत छीतकपुर
वि.ख. सीखड़, मीरजापुर

सबिता यादव
सचिव
ग्राम पंचायत छीतकपुर
वि.ख. सीखड़, मीरजापुर

सुप्रीम कोर्ट के दो फैसले से सरकार बौखलाई। उपराष्ट्रपति सारी मर्यादाएं तोड़ कर टिप्पणी कर रहे है

स्वतंत्र प्रभात

पिछले पखवाड़े में सुप्रीम कोर्ट के दो महत्वपूर्ण फैसलों-पहले राज्यपालों पर संवैधानिक अंकुश और फिर 16 अप्रैल को वक्फ (संशोधन) अधिनियम पर अंतरिम आदेश-ने केंद्र सरकार को हिलाकर रख दिया है। इन फैसलों के बाद देशभर में सोशल मीडिया पर सक्रिय समूह न्याय10 में न्यायपालिका के अधिकारों पर सवाल उठाने में जुट गए हैं। इसे संसद की सर्वोच्चता से जोड़ा जा रहा है और राष्ट्रपति को न्यायपालिका से ऊपर बताया जा रहा है। इस विवाद में उपराष्ट्रपति एवं राज्यसभा सभापति जगदीप धनखड़ भी शामिल हो गए हैं और अपनी संवैधानिक मर्यादा का उल्लंघन करते हुए दोनों फैसलों पर सवाल उठा रहे हैं।

सबसे पहले मैं राष्ट्रपति द्वारा पदभार ग्रहण करते समय ली जाने वाली शपथ की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ- "मैं, [नाम], ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं भारत के राष्ट्रपति के पद का निष्ठापूर्वक पालन करूँगा, अपनी पूरी क्षमता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा, तथा भारत की जनता की सेवा और कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित करूँगा।"

'अपनी पूरी क्षमता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा'- इस वाक्य के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दें। संविधान के अनुच्छेद 13(2) और अनुच्छेद 26 पर विचार करें। अनुच्छेद 13(2) कहता है कि राज्य कोई ऐसा कानून नहीं बना सकता जो संविधान के अनुरूप न हो। यदि कोई कानून मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है, तो वह उल्लंघन की सीमा तक शून्य होगा। यह न्यायिक समीक्षा का स्पष्ट आधार प्रदान करता है। अनुच्छेद 26 धार्मिक स्वतंत्रता की गारंटी देता है, जो सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य की शर्तों के अधीन है। इसके तहत प्रत्येक धार्मिक समुदाय को धार्मिक संस्थाएँ स्थापित करने, उनके प्रबंधन, संपत्ति अर्जन और कानून के अनुसार उसका प्रशासन करने का अधिकार है। संक्षेप में, धार्मिक कार्यों की स्वतंत्रता है, लेकिन यह कुछ नियमों के साथ आती है।

राष्ट्रपति केवल नाममात्र के प्रमुख होते हैं और कैबिनेट की सलाह पर कार्य करते हैं। उनके पास कोई व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता। यह कहना है राज्यसभा सांसद एवं वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल का। उन्होंने उपराष्ट्रपति धनखड़ के हालिया बयानों पर कहा कि उन्हें यह समझना चाहिए कि जब

सुप्रीम कोर्ट के फैसले सरकार के पक्ष में नहीं होते, तो कुछ लोग न्यायपालिका पर अपनी सीमा लाँघने का आरोप लगाते हैं। सिब्बल ने अनुच्छेद 142 का उल्लेख करते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट को पूर्ण न्याय सुनिश्चित करने का अधिकार है, जिसे सभी को स्वीकार करना चाहिए।

धनखड़ द्वारा सुप्रीम कोर्ट के फैसलों की आलोचना पर सिब्बल ने कहा कि उन्होंने कभी किसी राज्यसभा सभापति को इस तरह का राजनीतिक बयान देते नहीं देखा। यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे न्यायपालिका को सबक सिखाया जा रहा हो। 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के चुनाव को रद्द करने वाले सुप्रीम कोर्ट के फैसले का उल्लेख करते हुए सिब्बल ने कहा, "लोगों को याद होगा कि उस समय केवल एक न्यायाधीश, न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने फैसला दिया था। यह धनखड़ जी को स्वीकार्य था, लेकिन अब दो न्यायाधीशों की पीठ का फैसला इसलिए गलत है, क्योंकि यह सरकार के पक्ष में नहीं है।"

सिब्बल ने कहा कि लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा सभापति को सत्तारूढ़ पक्ष और विपक्ष दोनों से समान दूरी बनाए रखनी चाहिए। फैसले से समस्या है, तो समीक्षा के लिए आवेदन करें। यदि फिर भी समस्या हो, तो सुप्रीम कोर्ट से सलाह लें।" उन्होंने कहा, "धनखड़ ने 1984 की बात की, लेकिन 2002 की नहीं। उन्होंने आपातकाल का उल्लेख किया, लेकिन वर्तमान अघोषित आपातकाल की बात नहीं की।"

उपराष्ट्रपति धनखड़ की टिप्पणियों ने भारत की संवैधानिक व्यवस्था पर नई बहस छेड़ दी है। उनके अनुसार, सुप्रीम कोर्ट अब केवल न्याय तक सीमित नहीं है, बल्कि उसने स्वयं को 'सुपर संसद' की भूमिका में स्थापित करने का प्रयास किया है। ये बातें उन्होंने राज्यसभा इंटर्नशिप कार्यक्रम के समापन समारोह में कही। धनखड़ ने अनुच्छेद 142 को "न्यायपालिका के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध परमाणु मिसाइल" बताया, जो एक तीखा और प्रतीकात्मक बयान है।

यह विवाद सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले से शुरू हुआ, जिसमें राष्ट्रपति को समय-सीमा के भीतर निर्णय लेने का निर्देश दिया गया। वक्फ कानून में न्यायिक हस्तक्षेप ने इस विवाद को और बढ़ाया। धनखड़ ने सवाल उठाया, "राष्ट्रपति, जो देश का सर्वोच्च संवैधानिक पद है, उन्हें आदेश देना कि वे कब और कैसे फैसला लें, क्या यह लोकतंत्र के संतुलन को बिगाड़ने वाला नहीं है?" उन्होंने पूछा, ÷यदि राष्ट्रपति समय पर निर्णय नहीं लेते, तो क्या यह स्वतः कानून बन जाता है? यह कैसी व्यवस्था है?"

वर्तमान शासन में 'राज्यपाल राज' की एक खतरनाक प्रवृत्ति उभरी है, जो संविधान को कमजोर कर रही है। यह इतने सूक्ष्म तरीके से हो रहा है कि इसे आसानी से नहीं देखा जा सकता। संवैधानिक रूप से नाममात्र के व्यक्ति होने के बावजूद, राज्यपाल राज्य सरकारों के प्रशासन में हस्तक्षेप कर रहे हैं और अवरोध उत्पन्न कर रहे हैं। बार-बार देखा गया है कि राज्यपाल विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को अनिश्चितकाल तक लंबित रखते हैं, न तो उन्हें स्वीकृति देते हैं और न ही कारण बताकर वापस करते हैं, जिससे विधायी प्रक्रिया बाधित होती है।किस कानूनी अधिकार से पद पर बने हुए हैं। यह वास्तव में "पूर्ण न्याय" होगा।

जयसिंह ने कहा कि आधुनिक समय में संविधान को अनदेखा करने की रणनीति अपनाई जा रही है, न कि संशोधन द्वारा बदलाव लाने की। संशोधनों को संविधान के मूल ढांचे के उल्लंघन के आधार पर चुनौती दी जा सकती है। निष्क्रियता अक्सर अदृश्य होती है और शायद ही कभी अदालत में चुनौती दी जाती है। यही कारण है कि असंवैधानिक प्रथाएँ नया सामान्य बन रही हैं। इसकी तुलना अमेरिका से की जा सकती है, जहाँ राष्ट्रपति के प्रत्येक कार्यकारी आदेश को तुरंत चुनौती दी जाती है। इसके विपरीत, भारत में ऐसी चुनौतियाँ कम हैं, क्योंकि अदृश्य को चुनौती देना कठिन है। मूल ढांचे के सिद्धांत और कॉलेजियम प्रणाली को त्यागने की माँगें तेज हो रही हैं, जिससे ÷लोगों की इच्छा÷ की सर्वोच्चता का हवाला देते हुए राजनीतिक गैर-जवाबदेही का माहौल बन रहा है।

संक्षिप्त खबरें

मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत द्वारा दारागंज से शास्त्री पुल के मध्य बने पार्क एवं संगम क्षेत्र में सफाई का निरीक्षण

प्रयागराज। मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत द्वारा महाकुम्भ 2025के दृष्टिगत दारागंज से शास्त्री पुल के मध्य बने पार्क एवं संगम क्षेत्र में सफाई का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय दयानन्द प्रसाद अपर मेलाधिकारीग नवीन शर्माग अधिशासी अभियन्ताग लो0नि0वि0 निर्माण खण्ड-3 एवं डा0आनन्द सिंह सहायक प्रभारी सैनिटेशन उपस्थित थे। अधिशासी अभियन्ता द्वारा बताया गया कि इस पार्क को आगामी 05 वर्ष तक मेंटेनेंस का कार्य कराया जायेगा। इस पार्क में मूर्ति की स्थापना की जानी हैग जिसके लिए मूर्ति पार्क में रखी पायी गयी। बताया गया कि आगामी सप्ताह में मूर्ति की स्थापना हो जायेगी। निरीक्षण के समय पार्क में गंदगी तथा कई स्थान पर गिट्टी बिखरी पायी गयी। अधिशासी अभियन्ता को चेतावनी निर्गत करते हुए पार्क में नियमित सफाई कराये जाने तथा मेंटेनेंस का डेढ माह का पैसा भुगतान न किए जाने तथा पार्क का नियमित मेंटेनेश कराये जाने के निर्देश दिए गए। संगम क्षेत्र में सफाई व्ययवस्था हेतु लगे सफाई कर्मी की उपस्थिति पंजिका को देखा गया। उपस्थिति पंजिका सही प्रकार से न बनाये जाने एवं उसका समुचित देखभाल न किए जाने पर सहायक प्रभारी सैनिटेशन को निर्देशित किया गया कि सफाई कर्मी की क्षेत्रवार एवं समयवार डियूटी लगाया जाना सुनिश्चित करें।

सिराथू ब्लॉक में एडीओ कार्यालय से लैपटॉप, बैटरी, इन्वर्टर हुआ चोरी

सिराथू कौशाम्बी। जनपद में बेखौफ चोरों ने सैनी थाना क्षेत्र के अन्तर्गत सिराथू ब्लॉक परिसर स्थित एडीओ पंचायत में शनिवार की रात को चोरी की वारदात अंजाम दिया। जिसमें चोरों ने कार्यालय का ताला तोड़कर लैपटॉप, बैटरी, इन्वर्टर जरूरी दस्तावेज की चोरी कर ली। सुबह जब कर्मचारी कार्यालय पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एडीओ पंचायत कार्यालय का ताला टूटा हुआ है कार्यालय के अन्दर का सामान बिखरा हुआ था कर्मचारियों ने तुरन्त 112 डायल किया और सिराथू चौक की पुलिस को भी घटना की सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस जांच कर चोरों की तलाश में लुट गई है। पुलिस ब्लॉक में लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की जांच कर रही है। ब्लॉक परिसर में चोरी की इस वारदात से ब्लॉक में हड़कम्प मचा हुआ है।

निवर्तमान विधायक संजय गुप्ता ने की जनसुनवाई

कौशाम्बी। निवर्तमान विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने अपने पेट्रोल पम्प देव फिलिंग स्टेशन स्थित जनसुनवाई कार्यालय में प्रत्येक शनिवार के भांति आज जनसुनवाई का कार्यक्रम किया जिसमें लगभग 27 शिकायती पत्र प्राप्त हुई जिसमें ज्यादातर शिकायत जमीन से विवादित शिकायती पत्र प्राप्त हुये गुप्ता ने तत्काल शिकायतों से सम्बन्धित अधिकारियों से फोन के माध्यम से वार्ता कर अति शीघ्र शिकायत निस्तारण के लिए कहा शिकायतों में मुख्य रूप से बालिहावाँ से रेखा गुप्ता ने शिकायती पत्र देते हुये बताया कि मेरे पति सुरेश की 4 वर्ष पूर्व मृत्यु हो गई है परन्तु लेखपाल ने अभी तक वरासत नहीं किया साथ ही पीड़ित महिला ने बताया कि मेरे पति के गुजर जाने के बाद आज तक राशन कार्ड नहीं बन पाया जिससे बच्चों का पालन पोषण में असुविधा होती है पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता ने सहायता राशि देते हुए कहा कि आपकी समस्त समस्याओं का अति शीघ्र निस्तारण कराऊंगा। राजेश साहू रसूलपुर बदले से जमीन की विवाद का शिकायती पत्र दिया रजनी सरोज से बेटी के विवाह हेतु सहायता मांगी राजकुमार ने पारिवारिक विवाद की शिकायती पत्र दिया संजय कुमार गुप्ता सम्बन्धित अधिकारियों से वार्ता कर अति शीघ्र समस्त शिकायतों का निस्तारण करने के लिए निर्देशित किया जनसुनवाई में प्रमुख रूप से सम्मानित जन उपस्थित रहे।

अमरोहा में 9 साल की बच्ची तो अमेठी में चार साल की मासूम से दुष्कर्म, कुशीनगर में स्कूली छात्रा से शिक्षक कर रहा था शारीरिक शोषण

स्वतंत्र प्रभात

अमरोहा जनपद के हसनपुर कोतवाली क्षेत्र में एक 9 साल की बच्ची से 20 साल के युवक ने दुष्कर्म किया. वारदात तो अंजाम देने वाला कोई गैर नहीं, बल्कि अपना चचेरा भाई ही था. चचेरा भाई बच्ची को बहाने से जंगल लेकर गया और वहां पर उसके साथ वारदात की। वारदात को अंजाम देने के बाद युवक बच्ची को बेसुध हालत में घर पर छोड़कर फरार हो गया. परिजन जब पहुंचे तो बच्ची की हालत देखकर हैरान रह गए. आनन-फानन में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया और पुलिस को मामले की जानकारी दी गई।

शुक्रवार की देर शाम को युवक अपनी चचेरी बहन को आंधी के दौरान भूसे पर तिरपाल डलवाने के बहाने बाइक से जंगल ले गया था. वहां ले जाने के बाद युवक ने बच्ची के साथ दुष्कर्म किया. फिर बच्ची को घायल अवस्था में घर छोड़कर आरोपी युवक वहां से भाग गया.बच्ची कक्षा 5 की छात्रा है और घर पर वह अपने छोटे भाई बहन के साथ अकेली थी. परिवार वाले किसी काम से बाहर गए हुए थे. परिजनों ने जब बच्ची को घायल अवस्था में देखा तो तुरंत एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया. जहां पर उसका इलाज चल रहा है।

अमेठी जिले में तीन दिन पहले एक चार साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म करने की घटना घटना समाने आई है. बताया जा रहा है कि बच्ची 16 तारीख को आरोपी युवक के साथ एक समारोह में गई थी तभी उसके साथ दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया गया। बच्ची ने परिजनों को इसकी जानकारी दी लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया. दो दिन बाद जब मासूम की तबीयत बिगड़ी उसके बाद परिजनों ने घटना को गंभीरता से लिया और शुक्रवार देर शाम को पिता ने थाने में तहरीर दी. पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश करेगी।

कुशीनगर जिले में एक निजी स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षक पर नाबालिग छात्रा से दुष्कर्म का गंभीर मामला सामने आया है. आरोपी शिक्षक श्याम मंडल पश्चिम बंगाल का रहने वाला है।

आरोपी शिक्षक ने पहले छात्रा को स्कूल परिसर में बने कमरे में बुलाकर बहला-फुसलाकर उसका आपत्तिजनक वीडियो बना लिया. फिर वीडियो वायरल करने की धमकी देकर लगातार शारीरिक शोषण करता रहौ। परिजनों को जानकारी मिलने पर पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई. पूरे मामले पर सीओ तमकुहीराज अमित सक्सेना ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर लिया गया है. आरोपी पुलिस की हिरासत में है. पीड़िता की तहरीर और गवाही के आधार पर आरोपी से पूछताछ हो रही है. जल्द ही उसे जेल भेज दिया जाएगा।

अध्यक्ष उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग इसौटा लोंहगपुर पहुंचे

● पीड़ित परिवार के परिवारजन से की मुलाकात। हर सम्भव मदद दिए जाने का दिलाया भरोसा।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। अध्यक्ष उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग श्री बैजनाथ रावत जी सोमवार को तहसील करछना के ग्राम इसौटा लोंहगपुर पहुंचकर अनुसूचित जाति के युवक के साथ घटित घटना का स्वतः संज्ञान लेते हुए पीड़ित परिवार के परिवारजन से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की घटना निंदनीय है और इसकी जितनी निंदा की जाये वह कम है। उन्होंने घटित घटना पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए पीड़ित परिवारजन को ढांढस बंधाया और कहा कि हम सब लोग दुख की इस घड़ी में आपके साथ है। उन्होंने कहा कि सरकार के द्वारा अनुमन्य सारी सुविधाएं परिवार को प्रदान किए जाने की कार्यवाही की जा रही है। दोषियों को बख्सा नहीं जायेगा और जो अभियुक्त अभी तक नहीं गिरफ्तार हुए है, उन्हें जल्द से जल्द गिरफ्तार करने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने कहा कि दोषियों के विरूद्ध कड़ी से कड़ी कार्रवाई होगी।

उन्होंने बताया कि पीड़ित परिवार को 8 लाख 25 हजार रूपये की सहायता राशि, 5 लाख रूपये मुख्यमंत्री विवेकाधीन कोष से, 30 हजार रूपये पारिवारिक सहायता के रूप में, बच्चों के भरण पोषण के लिए 5 हजार रूपये प्रति बच्चे के हिसाब से प्रतिमाह एवं प्रति नाबालिक बच्चें को 4 हजार रूपये की अतिरिक्त धनराशि प्रतिमाह दी जायेगी। इसके साथ ही पीड़ित परिवार को 1 एकड़ जमीन

का पट्टा एवं आवास व आवास के लिए दो बिस्वा जमीन के आवंटन के साथ ही वृद्धावस्था पेंशन का लाभ भी दिलाया जायेगा। अध्यक्ष ने कहा कि हम सब लोग पीड़ित परिवार के साथ है और उनकी पूरी मदद की जायेगी। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी करछना तपन मिश्रा, एसीपी करछना वरूण कुमार, राष्ट्रीय कामगार मजदूर सभा संयोजक श्रवण तिवारी सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रयागराज के परेड ग्राउंड में लगी आग लालू एंड संश टेंट गोदाम जलकर खाक लाखों का नुकसान

● पांच घंटे बाद दर्जनों दमकलों ने बुझाई आग।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। शास्त्री ब्रिज के पास स्थित लल्लू टेंट हाउस के गोदाम में आज सुबह भीषण आग लग गई। गोदाम में बांस-बल्ली, पर्दे और अन्य ज्वलनशील सामग्री भरी होने के कारण आग ने कुछ ही देर में विकराल रूप ले लिया। आग की तेज लपटें और धुएं का घना गुबार करीब तीन किलोमीटर तक आसमान में फैल गया, जिससे पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई।

दमकल विभाग ने समय रहते शुरू किया रेस्क्यू ऑपरेशन- घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की तीन से चार गाड़ियां मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने का प्रयास शुरू कर दिया। मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई, लेकिन पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीमों ने तत्परता दिखाते हुए स्थिति को नियंत्रित किया।

कुंभ और माघ मेला क्षेत्र में करता है प्रमुख कार्य

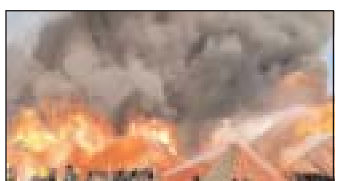

लल्लू जी एंड संस टेंट हाउस प्रयागराज के कुंभ और माघ मेला क्षेत्रों में वर्षों से टेंट, पंडाल, बिजली और ध्वनि व्यवस्था से जुड़ी सेवाएं प्रदान करता आया है। कंपनी को हर साल करोड़ों रुपये का टेंडर प्राप्त होता है, जिसके अंतर्गत संतों, कल्पवासियों और सरकारी संस्थाओं के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की जाती हैं।

परेड ग्राउंड स्थित गोदाम में लगी आग

लल्लू टेंट हाउस के गोदाम प्रयागराज के नैनी, झूंसी, रामबाग और परेड ग्राउंड जैसे क्षेत्रों में स्थित हैं। परेड ग्राउंड का गोदाम सबसे प्रमुख माना जाता है क्योंकि यहीं से मेला क्षेत्र की अधिकांश व्यवस्थाएं संचालित होती हैं। इसी गोदाम में आज आग लगी, जिससे लाखों रुपये की सामग्री जलकर खाक हो गई

प्रशासन सतर्क, कारणों की जांच जारी

फिलहाल किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, लेकिन नुकसान काफी भारी बताया जा रहा है। प्रशासन और दमकल विभाग की टीमें मौके पर मौजूद हैं और स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए हैं। आग लगने के कारणों की जांच की जा रही है। प्रशासन का कहना है कि प्राथमिकता लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

आजमगढ़ में 'घर बा केकरा बाप के डर बा', गाने को लेकर दो जिलों के बारातियों में मारपीट

● बचाने आई पुलिस टीम पर भी हमला।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। आजमगढ़ जिले में पुलिस टीम पर हमला का सनसनी खेज मामला सामने आया है. पुलिसकर्मियों पर हुए पथराव में एक महिला सिपाही गंभीर रुप से घायल हो गई. दरअसल जिले के तरवा थाना क्षेत्र के ठाटा गांव से बलिया जिले के बेल्थरा गई बारात में 'आजमगढ़ में घर बा केकरे बाप के डर बा' गाने को लेकर विवाद शुरू हुआ. देखते ही देखते बाराती पक्ष के ही दो गुट आपस में भिड़ गए. जिसके बाद दोनों पक्षों में जमकर मारपीट हो गई. मारपीट में आजमगढ़ के बरातियों की पिटाई अधिक हो गई. शनिवार को जब दूल्हे की बहन अन्य महिलाओं के साथ घर से जा रही थी तो आक्रोशित लोगों ने मारपीट शुरू कर दिया. मौके पर पुलिस पंहुची तो लोंगो ने पुलिस टीम पर पथराव कर दिया. सूचना के बाद गांव में भारी संख्या में पुलिस बल पहुंचा और 12 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया।

बता दें कि तरवा थाना क्षेत्र के ठाटा गांव से 18अप्रैल को एक बारात बलिया जिले के बेल्थरा गई थी. बताया जा रहा है कि दूल्हा अपने बहन के घर शादियाबाद गाजीपुर में पला बढ़ा था तो गाजीपुर के लोग और दूल्हे के पैतृक गांव के लोग बारात में शामिल हुए. तभी बारात में 'आजमगढ़ में घर बा केकरे बाप के डर बा' गाने को लेकर दोंनो जिलों आजमगढ़ और गाजीपुर के बाराती आपस में भिड़ गए. विवाद बढ़ा तो दोंनो पक्षो में मारपीट शुरू हो गई. जिसके बाद बारात में भगदड़ मच गई. लोग वाहनों में सवार होकर भागने लगे. इसी दौरान एक वाहन से 4 लोग दब गए. जिसमें से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है शनिवार की सुबह जब दूल्हे की बहन अपने मायके ठाट गांव से महिलाओं और बच्चों को लेकर अपने ससुराल जाने के लिए निकली तो इसकी जानकारी ग्रामीणों को हुई और रात की पिटाई से आक्रोशित लोगों ने ईट, लाठी, डंडे से लैस होकर हमला बोल दिया. सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची तो पुलिस टीम पर भी ग्रामीणों ने पथराव किया. जिसमें एक महिला सिपाही का सिर फट गया. जानकारी के बाद आसपास के थाने की पुलिस फोर्स के साथ अधिकारी मौके पर पहुंचे और किसी तरह से मामले को शांत कराया।

एसपी सिटी शैलेंद्र लाल ने बताया कि ठाट गांव का दूल्हा अपनी बहन के घर गाजीपुर का शादियाब में पला बढ़ा था, तो वहां से भी बाराती बलिया जिले के बेल्थरा बारात में पहुंचे थे. जहां डीजे पर गाने बजाने को लेकर जमकर मारपीट हुई. शनिवार की सुबह दूल्हे की बहन सात महिलाओं व 3 बच्चों के साथ वाहन में सवार होकर ठाट गांव से जा रही थी तभी आरोपियों ने वाहन पर पथराव किया तोड़फ़ोड़ की. पुलिस ने बचने का प्रयास किया तो पथराव किया गया. इस मामले में 12 उपद्रवियों को गिरफ्तार किया गया है. सीसीटीवी फुटेज व रिकार्डिंग की जांच की जा रही है. सभी के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने तहसील मंझनपुर में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के दिए निर्देश

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद कौशाम्बी के सभी तहसीलों में आज सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील मंझनपुर में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को तहसील दिवस एवं आईजीआरएस पर प्राप्त शिकायतों को गम्भीरता से लेते हुए गुणवत्तापूर्ण/समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित किया जाय कि कोई भी शिकायत लम्बित न होने पाये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 47 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया।

समाधान दिवस में शिकायतकर्ता सज्जन सिंह पुत्र बाबू लाल निवासी ग्राम-हिनौता तहसील मंझनपुर जनपद कौशाम्बी का मूल निवासी है। द्वारा प्रार्थना पत्र देकर अवगत कराया कि प्रार्थी की भूमि पर गेहूँ की फसल को काटने में विपक्षीगण द्वारा जबरन विवाद कर रहे है, दंबग यशवन्त सिंह व गोपी सिंह पुत्र रामनाथ हिनौता द्वारा गेहूँ व सरसों की फसल को काटने में विरोध/लडाई पर अमादा है जिसमें प्रार्थी द्वारा गेहूँ की फसल काटने की अनुमति चाहता है जिस पर जिलाधिकारी ने एस0एच0ओ0 को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इसी प्रकार शिकायतकर्ता एडवोकेट आशीष कुमार त्रिपाठी पुत्र महेश नारायण त्रिपाठी निवासी भेलखा तहसील मंझनपुर जनपद कौशाम्बी का मूल निवासी है प्रार्थी के गॉव की खतौनी की फीडिंग लगभग एक साल से चल रही है जिससे गॉव वालों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जिस पर जिलाधिकारी ने उप जिलाधिकारी मंझनपुर को जॉच कराकर आवश्यक कार्यवाही करने के

निर्देश दिये।

तहसील चायल में कुल 23 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 01 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील सिराथू में कुल 27 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 02 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अजीत कुमार श्रीवास्तव, अपर जिलाधिकारी प्रबुद्ध सिहं,अपर पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार सिंह,उप जिलाधिकारी मंझनपुर अजेन्द्र सिंह, तहसीलदार संजय कुमार दुबे, सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

केपीएस भीटी में इण्टरहाउस क्विज प्रतियोगिता में, वहीं हेलो किड्स भरवारी में इंग्लिश पोएम प्रतियोगिता में नन्हें बच्चों ने बिखेरा हुनर

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। केपीएस भीटी में आज का दिन विद्यार्थियों के लिए ज्ञान और प्रतिभा के प्रदर्शन का अद्भुत अवसर लेकर आया। एक ओर जहाँ वरिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों के लिए इण्टरहाउस क्विज प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, वहीं दूसरी ओर हेलो किड्स भरवारी में नन्हे बच्चों के लिए इंग्लिश पोयम कंम्पीटिशन आयोजित किया गया।विद्यालय के प्रांगण में आयोजित इस ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता में कक्षा 10वी 11वीं और 12वीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। क्विज प्रतियोगिता के विभिन्न राउण्ड जैसे रैपिड फायर, पिक द राइट ऑप्शन, और ऑडियो-विजुअल राउण्ड ने विद्यार्थियों की जानकारी, तर्कशक्ति और त्वरित निर्णय क्षमता की परख की।प्रतियोगिता करेन्ट अफेयर्स, साइंस व टेक्नोलॉजी और स्पोर्ट्स जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित थी। सभी हाउसों ने शानदार प्रदर्शन किया, परन्तु अन्ततः ग्रीन हाउस ने सर्वश्रेष्ठ समन्वय और सटीक उत्तरों के साथ विजेता बनने का गौरव प्राप्त किया।ग्रीन हाउस की टीम में कक्षा 11 साइंस से सिमरन कक्षा 10वी से साक्षी मौर्य, तन्मय, विवेक पाण्डेय और वैष्णवी शामिल थे।

हेलो किड्स भरवारी में इंग्लिश पोएम प्रतियोगिता में नन्हें मुन्नों का आत्मविश्वास देखते ही बनता था हेलो किड्स भरवारी शाखा में आज एक मनमोहक आयोजन हुआ, जिसमें नर्सरी, जूनियर केजी और सीनियर केजी के बच्चों ने इंग्लिश पोयम प्रतियोगिता में भाग लिया। मंच पर बच्चों ने रंग-बिरंगे परिधान पहनकर, अपनी मीठी आवाज़ में जैसे ही कविताएं प्रस्तुत कीं, वहाँ उपस्थित सभी शिक्षकों और दर्शकों के चेहरे पर मुस्कान आ गई।बच्चों ने कविताएं अत्यन्त आत्मविश्वास और भावपूर्ण प्रस्तुति के साथ सुनाई। यह प्रतियोगिता बच्चों में भाषा के प्रति रुचि जागृत करने, उनकी मंचीय झिझक को दूर करने और प्रस्तुति कौशल विकसित करने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। कार्यक्रम के अन्त में सभी प्रतिभागियों को गिफ्ट देकर सम्मानित किया गया, जिससे बच्चों के चेहरों पर अत्यंत हर्ष की झलक दिखाई दी। विद्यालय की डायरेक्टर श्रीमती सीमा पवार ने प्रतियोगिता के अन्त में कहा- "हमारे विद्यार्थियों ने आज जिस आत्मविश्वास और ज्ञान का परिचय दिया, वह न केवल सराहनीय है, बल्कि यह दर्शाता है कि वे आने वाले भविष्य के लिए पूरी तरह तैयार हैं। मैं विजेता टीम को हार्दिक बधाई देती हूँ और प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को उनकी लगन और प्रयासों के लिए धन्यवाद देती हूँ।" विद्यालय परिवार ने इन दोनों आयोजनों को सफल बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इन आयोजनों ने यह सिद्ध कर दिया कि केपीएस भीटी एवं हेलो किड्स भरवारी न केवल अकादमिक उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है, बल्कि छात्रों के सर्वांगीण विकास में भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

राम-सीता चौक पर वाहनों के जाम से आमजन परेशान, हाट के दिनों में बढ़ती है समस्या

पाकुड़िया/पाकुड़/ झारखंड- प्रखंड मुख्यालय पाकुड़िया स्थित राम-सीता मंदिर चौक (पुराना बस स्टैंड) पर लगातार वाहनों के जाम लगने से आम लोगों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों को आवाजाही में भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।जानकारी के अनुसार, पाकुड़िया-पाकुड़ पीडब्ल्यूडी मुख्य पथ के निकट बाइक, ऑटो और टोटो जैसे वाहनों की अनावश्यक पार्किंग के कारण यह समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।स्थानीय लोगों का कहना है कि शनिवार और मंगलवार को लगने वाले साप्ताहिक हाट के दिनों में जाम की स्थिति और भी भयावह हो जाती है। इन दिनों बाजार क्षेत्र में छोटे-बड़े वाहनों की भरमार से स्थिति बेकाबू हो जाती है।हालांकि क्षेत्र में यातायात का दबाव बढ़ने के साथ-साथ सड़कों का चौड़ीकरण भी किया गया है, फिर भी समस्या जस की तस बनी हुई है।स्थानीय नागरिकों की मांग है कि यदि साप्ताहिक हाट के दिनों में राम-सीता मंदिर चौक, पुराना बस स्टैंड, डाक बंगला तथा मोंगलाबांध मोड़ पर ग्रामीण पुलिस बलों की तैनाती की जाए, तो जाम की समस्या में कुछ हद तक सुधार संभव है और आम जन को राहत मिल सकती है।

संजर मलिक को आंदोलनकारी सूची में मिला सम्मान

हजारीबाग, झारखंड-समाजसेवा और मानवता के क्षेत्र में सक्रिय फहिम उद्दीन अहमद उर्फ संजर मलिक को झारखंड सरकार ने आंदोलनकारी सूची में शामिल कर सम्मानित किया है। फ्रेंड्स कॉलोनी निवासी संजर मलिक गरीबों की सेवा, शांति समिति में योगदान और झारखंड आंदोलन में भागीदारी के लिए जाने जाते हैं। उनके सम्मान पर समर्थकों में खुशी की लहर है। कमल नैन सिंह, दिलीप वर्मा, मुकेश राय, प्रो. इरफान, काशिफ अदीब, शाहिद वारसी, एजाज खान, सय्यद तबरेज़ अख्तर, मोहम्मद इबरार, आदिल, राशिद नवाब और मुबारक ने उन्हें बधाई देते हुए उनके योगदान की सराहना की।

डीएवी पब्लिक स्कूल बरही में धूमधाम से मनाई गई महात्मा हंसराज जयंती

बरही- डीएवी पब्लिक स्कूल बरही में महात्मा हंसराज जी की जयंती बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत प्राचार्य महोदय, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राओं द्वारा महात्मा हंसराज जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर व दीप प्रज्वलन के साथ हुई। महात्मा हंसराज जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विद्यालय के शिक्षकों ने उनके शिक्षा क्षेत्र में योगदान को याद किया। उन्होंने किस प्रकार से डीएवी आंदोलन की नींव रखी और आधुनिक शिक्षा के साथ भारतीय संस्कारों को जोड़ने का कार्य किया, यह बताया गया।

विद्यालय के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिनमें भजन, भाषण, प्रश्नोत्तरी शिक्षक निर्मल कुमार की देखरेख में हुई जिसमें विजेता दयानंद हाउस, विवेकानंद हाउस और एनडी ग्रोवर हाउस के छात्र सामूहिक रूप से हुए जब कि उपविजेता हंसराज हाउस रहा । संगीत प्रतियोगिता संगीत शिक्षक दीपक कुमार की देखरेख में हुई जिसमें प्रथम विजेता कक्षा 3ए की श्रेया अभिरामी हंसराज हाउस ,

द्वितीय विजेता 3ए हर्षवर्धन दुबे विवेकानंद हाउस, तृतीय विजेता 5 ए के आदया सिंह हंसराज हाउस चतुर्थ रूबी कुमारी रही। प्रस्तुतियों ने न सिर्फ सभी को भावविभोर किया, बल्कि महात्मा हंसराज जी के आदर्शों से भी अवगत कराया। अंत में प्राचार्य डॉ. आशुतोष कुमार ने अपने प्रेरणादायक भाषण में महात्मा हंसराज जी के आदर्शों को जीवन में अपनाने का संदेश दिया और सभी को उनके पदचिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया।

त्रिवेणीगंज में किराना दुकान में लगी भीषण आग, लाखों की क्षति

● दुकान बंद कर पारिवारिक समारोह में गए थे दुकानदार, लौटने पर दिखा धुआं

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज शुक्रवार की संध्या त्रिवेणीगंज अनुमंडलीय अस्पताल के सामने स्थित एक किराना दुकान में भीषण आग लग गई, जिससे दुकान में रखा लाखों रुपये मूल्य का सामान जलकर राख हो गया। घटना के समय दुकानदार प्रमोद कुमार प्रभाकर पारिवारिक समारोह में शामिल होने के लिए बाहर गए हुए थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार, प्रमोद कुमार प्रभाकर, पिता - स्वर्गीय कमलेश्वरी प्रसाद यादव, निवासी - नगर परिषद, लालपट्टी, वार्ड संख्या-17, कई वर्षों से अस्पताल के सामने किराना दुकान चला रहे हैं। 18 अप्रैल 2025 को उन्होंने दोपहर में दुकान बंद कर किसी रिश्तेदार के यहां समारोह में चले गए थे। शाम करीब 7:30 जब वे दुकान लौटे तो देखा कि दुकान के अंदर से धुआं निकल रहा है। शोर सुनकर आसपास के लोग भी मौके पर पहुंच गए। स्थानीय लोगों की मदद से दुकान का ताला तोड़ा गया और जब अंदर प्रवेश किया गया, तो देखा गया कि अंदर भीषण आग लगी हुई थी। सूचना मिलते ही त्रिवेणीगंज अग्निशमन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक दुकान में रखे खाद्य सामग्री, किराना सामान और अन्य उपयोगी वस्तुएं पूरी तरह जल चुकी थीं। दुकानदार प्रमोद कुमार प्रभाकर के अनुसार, इस घटना में उनका लाखों रुपये का नुकसान हुआ है। उन्होंने प्रशासन से क्षति का आकलन कर आर्थिक सहायता देने की मांग की है। घटना के कारणों की जांच की जा रही है।

मनरेगा में भुगतान में देरी से मजदूरों का टूटा भरोसा, गांव छोड़ने को मजबूर

स्वतंत्र प्रभात

वीरपुर मनरेगा योजना जो ग्रामीण गरीबों को गांव में ही रोजगार की गारंटी देने के उद्देश्य से शुरू की गई थी, वह अब स्वयं संकट में घिरती नजर आ रही है। बसंतपुर प्रखंड के सैकड़ों मजदूरों को 8 माह पूर्व किए गए कार्य की मजदूरी अब तक नहीं मिल पाई है। इससे परेशान मजदूर कर्ज लेकर परिवार चला रहे हैं और बड़े पैमाने पर पलायन की ओर मजबूर हो रहे हैं। मनरेगा मजदूरों का कहना है कि समय पर मजदूरी नहीं मिलने से योजना से उनका मोहभंग हो रहा है और वे बैकल्पिक रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। योजना की सफलता तभी संभव है जब मजदूरी का भुगतान समयबद्ध तरीके से किया जाए।

क्या कहते हैं मजदूर?

पिपराही निवासी उपेंद्र सादा ने कहा, "हम रोज की कमाई से परिवार चलाने वाले लोग हैं। अगर महीनों तक मजदूरी का इंतजार करना पड़ेगा, तो हमारे लिए चूल्हा जलाना मुश्किल हो जाएगा। सरकार को भुगतान प्रक्रिया को सरल और त्वरित बनाना चाहिए।" भीमनगर निवासी रत्नेश पासवान ने बताया, "साल 2024 के अंत में हमने काम किया था, लेकिन अब तक मजदूरी नहीं मिली है। अब बाहर जाकर काम करना ही पड़ेगा, नहीं तो गुजारा मुश्किल है।" भगवानपुर के दीपक साह ने कहा, "अगर मजदूरी समय पर नहीं मिलेगी, तो मजदूर इस योजना से कैसे जुड़े रह सकते हैं? सरकार को चाहिए कि काम के तुरंत बाद भुगतान सुनिश्चित करे।"

क्या कहते हैं अधिकारी?

मनरेगा प्रोग्राम ऑफिसर (पीओ) बसंतपुर, राजेश रमन ने बताया कि, "मजदूरी भुगतान सीधे केंद्र सरकार द्वारा मजदूरों के खाते में भेजा जाता है। हमारी ओर से समय पर सभी जरूरी कागजी प्रक्रियाएं पूरी कर दी जाती हैं। जैसे ही राशि ऊपर से उपलब्ध होती है, मजदूरों के खातों में पैसा भेज दिया जाएगा। हमारी कोशिश रहती है कि मजदूरों को समय से भुगतान मिले।"

सहकारिता मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने किया बड़ा ऐलान- पैक्स को मिलेगी नई पहचान, सुपौल में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी कई योजनाओं की जानकारी

स्वतंत्र प्रभात

सुपौल, 18 अप्रैल 2025 - बिहार सरकार के सहकारिता मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने शुक्रवार रात सुपौल जिला मुख्यालय स्थित गेस्ट हाउस में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जिले को कई महत्वपूर्ण योजनाओं की सौगात दी। उन्होंने कहा कि सरकार किसानों और ग्रामीणों के सशक्तिकरण के लिए लगातार ठोस कदम उठा रही है और पैक्स (प्राथमिक कृषि साख समिति) को ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बनाने की दिशा में कार्य कर रही है।मंत्री ने बताया कि सुपौल जिले के निर्मली प्रखंड में प्राथमिक सब्जी उत्पादक समिति का निबंधन कर पदाधिकारियों को प्रमाण पत्र सौंपा गया है। साथ ही परमानंदपुर (प्रखंड बसंतपुर) में 1000 मीट्रिक टन क्षमता वाले गोदाम निर्माण कार्य की आधारशिला रखी गई। यह परियोजना कुल 72,67,954 रुपये की लागत से पूरी की जाएगी। इसके अतिरिक्त त्रिवेणीगंज, प्रतापगंज, पथरा गोर्दे और भवानीपुर दक्षिण में भी ऐसे ही गोदाम बनाए जाएंगे।प्रेस वार्ता में मंत्री ने बताया कि किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को सस्ती एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवा देने के लिए पैक्स के माध्यम से प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र खोले जा रहे हैं, जहाँ जेनेरिक दवाएं रियायती दरों पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि इन केंद्रों से दूरदराज के ग्रामीणों को खासा लाभ मिल रहा है।सहकारिता मंत्री ने यह भी घोषणा की कि पैक्स को पेट्रोल पंप के लाइसेंस भी दिए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। साथ ही सभी पैक्सों में कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) स्थापित किए जा रहे हैं, ताकि किसानों को सरकारी योजनाओं की जानकारी और लाभ एक ही स्थान पर मिल सके।अपने संबोधन में उन्होंने कोसी क्षेत्र में रेलवे मंत्रालय द्वारा चल रहे विकास कार्यों का भी ज़िक्र किया और कहा कि कोसी महासेतु जैसे प्रोजेक्ट पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी की दूरदर्शिता का परिणाम हैं। वर्तमान में माननीय

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में मिथिलांचल क्षेत्र के लिए अनेक विकास योजनाएं लाई जा रही हैं।मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने यह भी बताया कि पिछली सरकार ने राज्य को दो एम्स की सौगात दी - एक पटना में और दूसरा दरभंगा में जो निर्माणाधीन है। इनसे सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, अररिया, मधुबनी और दरभंगा जैसे जिलों को अत्यधिक लाभ मिलेगा।प्रेस कॉन्फ्रेंस के अंत में मंत्री ने विश्वास जताया कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर बिहार को विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुंचाएगी।इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष नरेंद्र ऋषिदेव, पूर्व जिलाध्यक्ष नागेंद्र नारायण ठाकुर समेत कई वरिष्ठ नेता व अधिकारी उपस्थित थे।

महिला सशक्तिकरण की नई पहल- सुपौल में शुरू हुआ महिला संवाद कार्यक्रम, पहले ही दिन 3500 से अधिक महिलाओं ने लिया भाग

स्वतंत्र प्रभात

सुपौल, शुक्रवार- मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा पटना से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शुभारंभ किए गए "महिला संवाद कार्यक्रम" की गूंज अब सुपौल जिले में भी सुनाई देने लगी है। पटना से संवाद रथ को हरी झंडी दिखाकर इस महाअभियान की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य महिलाओं को राज्य सरकार की योजनाओं से जोड़ना और उनकी अपेक्षाओं को सुनकर समाधान करना है। सुपौल में आज इस कार्यक्रम का आगाज़ जिला पदाधिकारी श्री कौशल कुमार ने सदर प्रखंड के चानसिंह पट्टी में किया। इस मौके पर अपर समाहर्ता श्री कलिम अंसारी समेत 300 से अधिक महिलाएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन जीविका के जिला परियोजना प्रबंधक श्री विजय कुमार साहनी द्वारा किया गया।

आज जिले के कुल 17 ग्राम संगठनों में महिला संवाद कार्यक्रम आयोजित हुए, जिसमें 3500 से अधिक महिलाओं ने सक्रिय भागीदारी निभाई। कार्यक्रम के दौरान ऑडियो-वीडियो प्रस्तुतियों के माध्यम से राज्य सरकार की योजनाओं और अब तक महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में किए गए प्रयासों की जानकारी दी गई। इसके साथ ही योजनाओं से लाभान्वित महिलाओं ने मंच से अपने जीवन में आए सकारात्मक बदलाव साझा किए। कार्यक्रम के तहत महिलाओं को एक खुला मंच प्रदान किया गया, जहाँ वे न सिर्फ अपनी समस्याएं रख रहीं हैं, बल्कि शासन से जुड़ी अपनी अपेक्षाएं और सुझाव भी साझा कर रही हैं। उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा इन सभी सुझावों का दस्तावेजीकरण किया जा रहा है। जिला स्तर पर हल योग्य समस्याओं का स्थानीय समाधान किया जाएगा, वहीं नीति से जुड़ी अपेक्षाएं राज्य सरकार को भेजी जाएंगी।

जिला पदाधिकारी श्री कौशल कुमार ने अपने संबोधन में कहा, "योजनाएं सरकार

बनाती है, लेकिन उनका लाभ तभी संभव है जब हम आपके साथ सीधे संवाद करें। यह कार्यक्रम इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।" उन्होंने बताया कि महिलाओं को वितरित किए गए लीफलेट्स के माध्यम से उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी भी दी जा रही है। सुपौल जिले में महिला संवाद कार्यक्रम आगामी 58 दिनों तक चलेगा, जिसके तहत जिले के कुल 1955 ग्राम संगठनों में यह आयोजन किया जाएगा। यह पहल निश्चित रूप से महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी।

त्रिवेणीगंज अंचल कार्यालय बना मनमर्जी का अड्डा, फाइलों से ज्यादा दौड़ते दिखे आम लोग

● कर्मियों की ढुलमुल रवैये से परेशान जनता, अपनी फरियाद लेकर चक्कर काटते रह गए पीड़ित

स्वतंत्र प्रभात

त्रिवेणीगंज (सुपौल) — त्रिवेणीगंज अंचल कार्यालय इन दिनों कर्मियों की मनमानी और जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति के कारण सुर्खियों में है। यहां पर एक आम नागरिक को अपने हक के लिए न केवल अधिकारियों के सामने गिड़गिड़ाना पड़ता है, बल्कि पूरे ऑफिस परिसर का चक्कर काटना आम बात हो गई है। हाल ही में एक मामला सामने आया जिसमें स्थानीय दुकानदार प्रमोद कुमार प्रभाकर अपनी दुकान में लगी आग की घटना का आवेदन लेकर अंचल कार्यालय पहुंचे। लेकिन वहां नजीर से लेकर अन्य कार्यालय कर्मियों तक, सभी ने जिम्मेदारी लेने से इनकार कर दिया। "यह मेरा काम नहीं है", "उधर जाओ", "फिलहाल समय नहीं है" – ऐसे जवाबों की बौछार होती रही, लेकिन कोई समाधान नहीं मिला। पीड़ित इधर-उधर भटकते रहे और अंततः जब मामला गर्माया, तब जाकर आवेदन की रिसीविंग दी गई।

यह कोई पहली घटना नहीं है। ग्रामीण इलाकों से रोजाना बड़ी संख्या में लोग अपनी समस्याओं को लेकर अंचल कार्यालय का रुख करते हैं, लेकिन अधिकतर मामलों में उन्हें यहां से निराशा ही मिलती है। कार्यालय क्षेत्रफल में बड़ा है और आबादी भी अधिक

है, ऐसे में कर्मचारियों की इस प्रकार की गैर-जिम्मेदाराना रवैये ने लोगों का भरोसा हिला दिया है।

जनता सवाल पूछ रही है — क्या अंचल कार्यालय जनता की सेवा के लिए है या फिर एक दूसरे पर जिम्मेदारी टालने का मंच बन गया है? अब देखना यह है कि प्रशासन इस लापरवाही पर कब लगाम लगाता है और क्या पीड़ितों को कभी समय पर न्याय मिल पाएगा?

जन-जन के नायक हैं कौशल्या नंदन श्रीराम चंद्र जी

स्वतंत्र प्रभात

पाकुड़िया, झारखंड- महर्षियों ने मानव को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना बताया है। उनका मानना है कि मानव अपने आंतरिक गुणों को विकसित कर ब्रह्मांड के समस्त रहस्यों को समझ सकता है। भले ही भौतिक विज्ञान इस दिशा में पूरी तरह सफल न हो सका हो, परंतु आर्यावर्त के महान संतों, ऋषियों और महर्षियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि मानवीय काया में ही संपूर्ण ब्रह्मांड समाया है। जगत जननी मां जगदंबा ही ब्रह्मांड की रचयिता, पालनहार और संहारक हैं। भारत को देवभूमि कहा गया है, और यह धरती सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के माध्यम से समय के साथ विकसित होती रही है। सतयुग में महा प्रतापी सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र, अज, रघु, सगर, दिलीप, भागीरथ जैसे सम्राटों ने धर्म और न्याय के अनुसार राज्य किया। दुर्भाग्यवश, कुटिल अंग्रेजों और स्वतंत्र भारत की कुछ सरकारों ने इन महानायकों की उपेक्षा कर राष्ट्रीय भावना को ठेस पहुंचाई।इक्ष्वाकु वंश में ही प्रजापालक महाराज दशरथ हुए। उनके विस्तृत साम्राज्य में सभी सुखी थे, पर वे स्वयं संतानहीन होने के कारण चिंतित रहते थे। उन्होंने राजगुरु वशिष्ठ से पुत्रेष्टि यज्ञ कराने की अनुमति ली। यज्ञफल के सेवन से महारानी कौशल्या से श्रीराम, कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण व शत्रुघ्न का जन्म हुआ।सनातन धर्म में समय-समय पर भगवान के अवतार लेकर राक्षसों का विनाश कर विश्व कल्याण करने का वर्णन शास्त्रों, वेदों, उपनिषदों, महाभारत और रामायण में मिलता है। कुटिल अंग्रेजों ने इन पवित्र ग्रंथों को काल्पनिक बताकर भ्रम फैलाया। परंतु साहित्य समाज का दर्पण होता है जो ऐतिहासिक साक्ष्यों को संजोए रहता है।श्रीराम भगवान विष्णु के अंशावतार हैं, परंतु इस अवतार में उन्होंने मानव रूप में कौशल्या के गर्भ से चैत्र शुक्ल नवमी को जन्म लिया। उनके जन्म के साथ ही अयोध्या में उल्लास छा गया। समय के साथ चारों कुमार किशोरावस्था में पहुंचे और गुरु वशिष्ठ के आश्रम में शिक्षा-दीक्षा हेतु भेजे गए।गुरुकुल में वे सभी विषयों में दक्ष हुए, चाहे वह अस्त्र-शस्त्र हो, शास्त्र हो या जीवन मूल्य। गुरु वशिष्ठ और गुरु माता अरुंधति का स्नेह ऐसा था कि वे अपनी माताओं की अनुपस्थिति कभी महसूस नहीं कर सके। गुरुकुल से लौटने पर माताएं भावविह्वल हुई और दशरथ पुत्र राम को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुए।इसी बीच राक्षसों से परेशान महर्षि विश्वामित्र यज्ञ रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण को मांगने आए। दशरथ पहले तो पुत्रमोह में असमंजस में पड़े, पर गुरु वशिष्ठ की आज्ञा मानते हुए राम-लक्ष्मण को भेजा गया।

यात्रा के क्रम में माता अहिल्या का उद्धार हुआ। ताड़का वध और यज्ञ की सफलता के बाद वे जनकपुर पहुंचे, जहां श्रीराम ने शिव धनुष तोड़कर सीता स्वयंवर जीत लिया। इसके बाद उनका विवाह सम्पन्न हुआ।दशरथ अब राम का राज्याभिषेक करना चाहते थे, पर मंथरा की चालों से कैकेयी ने भरत के लिए राज्य और राम के लिए वनवास की मांग कर दी। राम ने प्रसन्नता से माता की आज्ञा मानी और

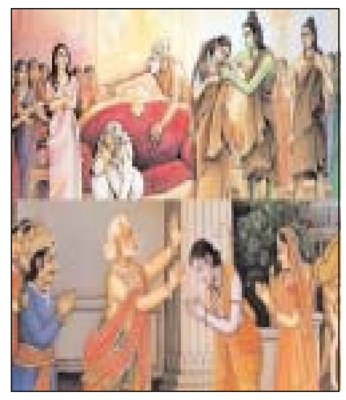

वनवास को प्रस्थान किया।वनगमन के दौरान निषादराज गुह, केवट, सुग्रीव, बाली, हनुमान आदि से भेंट, सीता की खोज, लंका कांड, रावण वध और अंत में अयोध्या वापसी हुई। फिर सीता वनवास, लव-कुश संवाद, माता सीता का पृथ्वी में समाना और श्रीराम का देह त्याग – यह समस्त जीवनगाथा अत्यंत प्रेरणादायक है।राम कथा केवल भारत ही नहीं, अनेक देशों में भी कही जाती है। वहां की भाषाओं में यह कहानी सुनाई जाती रही है, परंतु मूल चरित्र श्रीराम ही रहे हैं। आज भी कुछ लोग इसे काल्पनिक मानते हैं और भारतीय संस्कृति पर प्रश्न उठाते हैं, परंतु ऐसे विचार श्रीराम की महत्ता को कम नहीं कर सकते।श्रीराम की गहराई और ऊंचाई को नापना संभव नहीं है। वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उनका जीवन संतुलन, त्याग, धर्म, प्रेम और कर्तव्य का अनुपम उदाहरण है। वे जन-जन के नायक हैं। मानवता के लिए उनका चरित्र सदैव अनुकरणीय रहेगा।

झारखंड में चलंत लोक अदालत एवं विधिक जागरूकता अभियान का हुआ आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड-झारखंड विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार, हजारीबाग की ओर से एक चलंत लोक अदालत सह विधिक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी श्रृंखला में आज कटकमसांडी प्रखंड मुख्यालय, कटकमसांडी पंचायत मुख्यालय और कंचनपुर पंचायत मुख्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डिप्टी चीफ एलएडीसी विकास सोनी एवं मीडिएटर अजय कुमार ने स्थानीय लोगों को विभिन्न कानूनी अधिकारों एवं सेवाओं के बारे में जानकारी दी। श्री सोनी ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार (ष्ठरुस्न) एक ऐसा मंच है, जहां लोगों को त्वरित और निःशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराई जाती है। उन्होंने यह भी बताया कि लोग अपने छोटे-

मोटे विवादों को आपसी सुलह-समझौते के माध्यम से यहीं निपटा सकते हैं। कार्यक्रम में यह जानकारी भी दी गई कि अब आम नागरिक टोल फ्री नंबर 15100 पर कॉल कर घर बैठे मुफ्त कानूनी सलाह ले सकते हैं। मीडिएटर अजय कुमार ने बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा और चेक बाउंस जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाते हुए इन सामाजिक बुराइयों से दूर रहने की अपील की। कंचनपुर की मुखिया पिंकी राणा एवं कटकमसांडी की मुखिया कुमारी पांडेय ने भी उपस्थित जनसमूह को डीएलएसए की योजनाओं और सेवाओं की जानकारी दी और इनका लाभ उठाने की सलाह दी। कार्यक्रम में पीएलवी विकास कुमार पांडेय, विजय कुमार, अनिल कुमार, राहुल कुमार, परवेज आलम, गीता कुमारी, सुनीता कुमारी समेत कई महिला एवं पुरुष शामिल हुए।

हुसैनाबाद में वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ मौन जुलूस की तैयारी पूरी, आयोजन स्थल का किया निरीक्षण

● हुसैनाबाद के इमली पेड़ के पास से निकलेगा शांतिपूर्ण मार्च

स्वतंत्र प्रभात

हुसैनाबाद/पलामू/झारखंड-केंद्र सरकार के नए वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ हुसैनाबाद अनुमंडल क्षेत्र के मुस्लिम समाज में गहरी नाराजगी देखने को मिल रही है। इसी कड़ी में 21 अप्रैल को एक शांतिपूर्ण मौन जुलूस निकालने का निर्णय लिया गया है, जिस संबंध में शनिवार को मदरसा खैरुल इस्लाम, हुसैनाबाद परिसर में समाज के 11 प्रतिनिधि सरपरस्तों और प्रबुद्धजनों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई।बैठक में सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि यह जुलूस शेख मुजाहिद हुसैनाबादी के आवासीय स्थल के समीप स्थित इमली के पेड़ के पास से आरंभ होगा, और हुसैनाबाद के प्रमुख चौक-चौराहों से गुजरते हुए अनुमंडल कार्यालय तक पहुंचेगा। वहां एक शिष्टमंडल अनुमंडल पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपेगा। इसके बाद सभी लोग शांतिपूर्वक अपने अपने गांवों को लौट जाएंगे।

स्थल निरीक्षण और समाज की सहमति

कार्यक्रम को लेकर स्थल निरीक्षण भी किया गया, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया कि जहां से जुलूस की शुरुआत होनी है, वह स्थान न केवल प्रतीकात्मक रूप से उपयुक्त है बल्कि वहां की स्थानीय जनता की पूर्ण सहमति भी प्राप्त की गई है। उपस्थित शेख मुजाहिद हुसैनाबादी ने बताया कि आयोजन स्थल पर सुविधाजनक वातावरण तैयार कर लिया जाएगा। और यह स्थान लोगों की एकत्रता के लिए भी उपयुक्त है।

शांति और अनुशासन होगी प्राथमिकता

बैठक में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि यह जुलूस पूरी तरह मौन और अनुशासित होगा। इसमें भाग लेने वाले लोग अपने हाथों में तख्तियां लेकर वक्फ संशोधन कानून का विरोध दर्ज कराएंगे। तख्ती पर लिखे स्लोगन पहले से ही सभी गांवों में भेजे जा चुके हैं, ताकि सभी में एक रुपया दिखे। जुलूस की पंक्ति में कुछ जिम्मेदार लोग बीच-बीच में उपस्थित रहेंगे, जो आवश्यकतानुसार दिशा-निर्देश देंगे। ताकि आयोजन की मर्यादा बनी रहे।

धार्मिक आस्था से जुड़ा मुद्दा

बैठक में वक्ताओं ने जोर देकर कहा कि वक्फ की संपत्ति इस्लाम धर्म के अनुसार अल्लाह की राह में दी गई अमानत है, जिसे किसी भी स्थिति में अन्य कार्यों में प्रयोग नहीं किया जा सकता। वक्फ से जुड़ी धार्मिक व्यवस्थाओं में किसी भी प्रकार का सरकारी हस्तक्षेप या बदलाव अस्वीकार्य है। वक्ताओं ने इस संशोधन कानून को ÷काला कानून÷ करार देते हुए कहा कि जब तक यह नया वक्फ कानून पूरी तरह रद्द नहीं हो जाता, तब तक संवैधानिक और लोकतांत्रिक तरीकों से चरणबद्ध आंदोलन जारी रहेगा।

राजनीतिक व सामाजिक संगठनों को भेजा गया आमंत्रण

बैठक में यह भी तय किया गया कि जो भी राजनीतिक दल या सामाजिक संगठन इस संशोधन कानून के खिलाफ हैं, उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने का खुला निमंत्रण है। स्थानीय विधायक संजय कुमार सिंह यादव, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सत्यनारायण सिंह सहित इंडिया गठबंधन से जुड़े प्रमुख प्रतिनिधियों व गैर राजनीतिक संगठनों को आमंत्रित किया गया है। हालांकि, यह स्पष्ट किया गया कि आयोजन का स्वरूप पूरी तरह सामाजिक और गैर-राजनीतिक रहेगा। बैठक और स्थल निरीक्षण में एजाज हुसैन उर्फ छेदी खान, मसरूर अहमद, अब्बास अंसारी, नवाजिश खान, गुलाम मोहम्मद अमीन अली खान, गयासुद्दीन सिद्दीकी, शकील अहमद, सैयद फिरोज हुसैन, अफरोज अहमद, परवेज अहमद, महताब आलम सहित कई अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे। इन सभी ने आयोजन की रूपरेखा पर गहन चर्चा की और इसे सफल, गरिमामयी व उद्देश्यपूर्ण बनाने का संकल्प लिया।

पोषण अभियान योजना के तहत आँगनबाड़ी सहायिकाओं का जिला स्तरीय खाद्य/व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग,झारखंड- विभागीय निदेशानुसार पोषण अभियान योजना के तहत सूचना भवन, हजरीबाग में आँगनबाड़ी सहायिकाओं का जिला स्तरीय खाद्य/व्यंजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिलान्तर्गत विभिन्न परियोजनाओ में पंचायत/सेक्टर पर चयनित सहायिकाओं का परियोजना स्तर पर खाद्य/व्यंजन प्रतियोगिता क्रमशः दिनांक-15.04.2025 एवं 17.04.2025 को आयोजित की गई थी। परियोजना स्तर से चयनित एक-एक सहायिका स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों की रेसिपी के साथ जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लिया गया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिमा कुमारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, हजारीबाग ग्रामीण, नीलू रानी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, ईचाक सह बरकट्ठा, राखी चन्द्रा, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, बड़कागाँव सह केरेडारी, सावित्री देवी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, कटकमसांडी, डॉ अमरेश कुमार, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, सदर, डॉ मुकेश चन्द्रा, चिकित्सा पदाधिकारी एवं डॉ फातमा खातुन, चिकित्सा पदाधिकारी, सभी महिला पर्यवेक्षिकाएँ तथा आँगनबाड़ी सेविकाएँ एवं सहायिकाएँ उपस्थित थीं। सभी पदाधिकारियों द्वारा सर्वसम्मति से खाद्य प्रतियोगिता में ईचाक परियोजना की सहायिका वीणा कुमारी को मडुवा से निर्मित खाण्डवी एवं सहजन सूप के लिए इन्हें प्रथम पुरस्कार, हजारीबाग ग्रामीण परियोजना से सहायिका श्रीमती नंदिनी कुमारी को सूजी से निर्मित रोटी तथा नारियल एवं मूंगफली चटनी के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा बड़कागाँव परियोजना से सहायिका प्रभा देवी को मकई का खिचड़ी के लिए तृतीय पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र दिया गया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली अन्य सभी सहायिकाओं को सांत्वना पुरस्कार स्वरूप

प्रशस्ति पत्र दिया गया। उक्त कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आँगनबाड़ी सहायिकाओं के माध्यम से स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य पदार्थों के पौष्टिक महत्व के सन्दर्भ में जागरूकता लाना है। जिला स्तर पर चयनित सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी राज्य स्तर पर आयोजित प्रतियोगिता में भाग लेंगे। जिला स्तरीय कार्यक्रम में हेल्दी बेबी शो का आयोजन किया गया। जिसमें हजारीबाग सदर एवं ग्रामीण परियोजना से तीन-तीन बच्चों को बेबी किट का वितरण किया गया।

संक्षिप्त खबरें

एसपी जौनपुर ने मड़ियाहूं थाने का किया औचक निरीक्षण, दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

जौनपुर। पुलिस अधीक्षक जौनपुर ने शनिवार को मड़ियाहूं थाने का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने थाना परिसर के विभिन्न हिस्सों का जायजा लिया और व्यवस्थाओं की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान एसपी ने अभिलेखों, हवालात, बैरक, थाना कार्यालय एवं सीसीटीएनएस कार्यालय का बारीकी से निरीक्षण किया। उन्होंने साफ-सफाई की व्यवस्था, अभिलेखों के उचित रख-रखाव और उनके अद्यतन किए जाने की स्थिति को परखा। एसपी ने थाने की व्यवस्था को और बेहतर बनाने के लिए संबंधित अधिकारियों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। उन्होंने विशेष रूप से निर्देशित किया कि अभिलेखों को समय-समय पर अपडेट रखा जाए और साफ-सफाई में किसी प्रकार की लापरवाही न हो। इस मौके पर थाना प्रभारी सहित अन्य पुलिसकर्मी उपस्थित रहे।

अवैध शराब बरामद, चार आरोपी गिरफ्तार

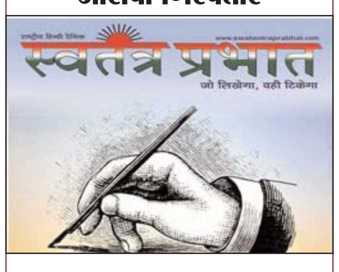

चित्रकूट - पुलिस अधीक्षक अरुण कुमार सिंह के निर्देशन में अवैध शराब के निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम के लिए चलाए जा रहे अभियान के क्रम में चित्रकूट पुलिस टीम ने चार आरोपियों को 86 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया। थाना राजापुर के उपनिरीक्षक अनिल कुमार व उनके हमराही आरक्षी चन्दन विश्वकर्मा ने आरोपी कपेस सोनकर निवासी हनुमानगंज को 22 क्वार्टर देशी शराब के साथ, थाना भरतकूप के उपनिरीक्षक रामकुमार व उनके हमराही आरक्षी शुभम यादव ने आरोपी राजेश निवासी बछरन को 20 क्वार्टर के साथ व भैरव प्रसाद निवासी बछरन थाना को 24 क्वार्टर देशी शराब के साथ तथा थाना भरतकूप के उपनिरीक्षक अरविन्द कुमार सिंह व उनके हमराही सतीश यादव ने आरोपी आशीष सिंह निवासी बछरन थाना पहाड़ी को 20 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में इन सभी आरोपियों के विरुद्ध सम्बन्धित थानों में धारा 60 आबकारी अधिनियम के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किए गए।

बच्चों ने बाबा साहब द्वारा समाज सुधार के लिए किए गए संघर्षों की दी जानकारी

चित्रकूट - जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन के निर्देशानुसार संविधान निर्माता डॉ भीम राव अम्बेडकर की जयंती पखवाड़े के अंतर्गत शनिवार को एकेडमिक हाइट किंगसन इंगलिश मीडियम स्कूल एवं बचपन प्ले स्कूल में डॉ भीम राव अम्बेडकर की जीवनी विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मऊ क्षेत्राधिकारी यामीन अहमद ने डॉ भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। इसके बाद प्रतिभागी विद्यार्थियों ने डॉ भीम राव अम्बेडकर के जीवन काल के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए उनके द्वारा समाज सुधार के लिए किए गए संघर्ष की जानकारी दी। इस दौरान मऊ क्षेत्राधिकारी यामीन अहमद ने कहा कि विद्यार्थियों से कहा कि डॉ भीमराव अम्बेडकर के जीवन से प्रेरणा लेते हुए कार्य करें तथा अपने जीवन में सफलता प्राप्त करें। कार्यक्रम में समृद्धि सोनी, दृष्टि श्रीवास्तव, अभिनव शाह, नेहा राज, हम्माद, प्रतिमा, अमीन, इनाया, दिव्यांशी, अर्पिता, वैष्णवी, अफ्नान, प्रतीक, साकिब सहित अन्य विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। जिसमें जूनियर वर्ग में हम्माद ने प्रथम व समृद्धि सोनी ने द्वितीय तथा सीनियर वर्ग में अफ्नान ने प्रथम व वैष्णवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिन्हे मेडल पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक मयंक मोहन मिश्रा ने किया। इस मौके पर प्रबन्धक मिनहाज खान, प्रधानाचार्या रजनी खरे, कोडिनेटर बचपन प्ले स्कूल शाहीन खान, अध्यापक रामदुलार विश्वकर्मा, उमेश, अजय वर्मा, रीना तिवारी आदि मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत, परिजनों ने पप्पू प्लाटर समेत कई लोगों पर लगाया हत्या का आरोप

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। कोतवाली थाना क्षेत्र अंतर्गत मोहल्ला मखदूम शाह आढ़न में स्थित एक प्रतिष्ठान में कार्यरत युवक की रहस्यमय परिस्थितियों में हुई मौत से इलाके में सनसनी फैल गई है। मृतक की पहचान मोहल्ला ख्वाजगी टोला निवासी 19 वर्षीय मो० आसिफ उर्फ उबैदा पुत्र लल्लन कुरैशी के रूप में हुई है, जो अपनी मौसी के घर मोहल्ला उमर खां बड़ी मस्जिद में रहकर इब्राहिम कुरैशी की दुकान में कार्यरत था।

रात 11 बजे दुकान में अचेत मिला युवक

सूत्रों के अनुसार बुधवार की देर रात लगभग 11 बजे आसिफ को उस दुकान के भीतर अचेतावस्था में पाया गया जहां वह नियमित रूप से कार्य करता था। इससे क्षेत्र में हड़कंप मच गया। हैरान करने वाली बात यह रही कि कुछ युवक उसे ऑटो में डालकर उसकी मौसी के घर छोड़ गए और वहां से चुपचाप चले गए। जब तक परिजन कुछ समझ पाते, तब तक युवक की मौत हो चुकी थी।

परिजनों में मचा कोहराम, हत्या की जताई आशंका

जैसे ही आसिफ की मौत की जानकारी उसके घरवालों को हुई, परिवार में कोहराम मच गया। शोकग्रस्त परिजनों ने आरोप लगाया कि यह सामान्य मौत नहीं है, बल्कि सुनियोजित साजिश के तहत की गई हत्या है। परिजनों ने दुकान के मालिक इब्राहिम कुरैशी के बेटे और इस्माइल कुरैशी उर्फ पप्पू प्लाटर तथा उनके भाई और दुकान में काम करने वाले अन्य कर्मियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पीड़ित परिवार का कहना है कि आसिफ के शरीर पर संदिग्ध चोट के निशान पाए गए हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि उसे प्रताड़ित किया गया। उन्होंने आशंका जताई कि उसकी हत्या को आत्महत्या का रूप देने की कोशिश की जा रही है।

पुलिस जांच में जुटी, पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार

मामले की सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। कोतवाली पुलिस का कहना है कि अभी मौत के कारणों को लेकर कोई ठोस निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही यह स्पष्ट हो पाएगा कि यह आत्महत्या थी या हत्या। फिलहाल पुलिस सभी संदिग्धों से पूछताछ कर रही है और घटनास्थल की भी गहनता से जांच की जा रही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए उच्चाधिकारियों को भी सूचित कर दिया गया है।

स्थानीय लोगों में आक्रोश, न्याय की मांग

घटना के बाद इलाके में आक्रोश का माहौल है। स्थानीय लोगों और सामाजिक संगठनों ने प्रशासन से निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कठोर कानूनी कार्रवाई की मांग की है। उनका कहना है कि यदि दोषियों को सजा नहीं मिली तो आने वाले दिनों में लोग कानून व्यवस्था पर भरोसा खो बैठेंगे।

क्या कहते हैं परिजन?

मृतक की मौसी ने मीडिया से बातचीत में कहा, "मेरा बेटा मेहनती था, अपने भविष्य के लिए संघर्ष कर रहा था। उसे किसी से कोई दुश्मनी नहीं थी। जो कुछ हुआ है, वह सब साजिश है। हमें न्याय चाहिए।"

पुलिस का बयान

कोतवाली थाना प्रभारी मिथलेश मिश्रा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है। उसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। सभी संभावित पहलुओं को ध्यान में रखकर निष्पक्ष जांच सुनिश्चित की जाएगी।"

नगर पंचायत अध्यक्ष बनीं रुक्मिणी एवं उनके पति बनें श्री कृष्ण

जौनपुर केराकत। नगर पंचायत केराकत की चेयरमैन ज्योति कृष्णा जायसवाल के आवास महाजन बाड़ा पर भागवत कथा का पाठ बैठा है पाठ के पांचवे दिन कृष्ण और रुक्मणि स्वयंवर का पाठ था जिसमे गुरु जी के निर्देश पर भगवान कृष्ण का अभिनय चेयरमैन पति प्रतिनिधि कृष्णा जायसवाल उर्फ गोलू जी द्वारा और रुक्मणि का किरदार स्वयं नगर पंचायत केराकत चेयरमैन (अध्यक्ष) ज्योति जायसवाल जी ने निभाया कार्यक्रम में उपस्थित सभी भक्त जनों ने भगवान कृष्ण और माता रुक्मणि का आशीर्वाद प्राप्त किया गया इस शुभ मौके पर नगर पंचायत केराकत चेयरमैन ज्योति कृष्णा जायसवाल के ससुर अशोक जायसवाल, हरिश्चंद्र जायसवाल, उमाशंकर जायसवाल सहित समस्त जायसवाल परिवार उपस्थित रहे।

दो युवकों की मौत गांव में पसरा मातम

दुर्घटना/हादसा

● चार महिने की गर्भवती है अर्जुन की पत्नी

पूरे गांव में फैला है मातम, बच्चों के सर से उठा पिता का साया

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर जफराबाद। गौराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के बहोरापुर गांव के पास शुक्रवार की देर रात को हुई दुर्घटना में क्षेत्र के कुंडवा मसुदपुर गांव के दो युवक की जिंदगियां अकाल के गाल में समा गई। वो गए थे दूसरे की जन्मदिन की खुशी मनाने उन्हें क्या पता था कि आज उनकी जिन्दगी का अंतिम दिन है। अर्जुन चौहान अपने दोस्त विनोद चौहान व महेश चौहान के साथ शुक्रवार की शाम को अपने बाइक से एक युवक के सुसराल पचहटिया में उसके साले के जन्मदिन पार्टी में शामिल होने गए था। रात के वक्त तीनो लोग पार्टी में जिन्दगी के हसीन लम्हे तो जिये मगर पार्टी से घर वापस लौटने लगे तो पचहटिया से मात्र दो किलोमीटर दूर ही पहुचे थे कि एक पिकप गाड़ी की चपेट में आने से दो युवकों की मौत हो गयी वही पर तीसरे साथी महेश चौहान की हालत नाजुक बनी हुई है। जैसे ही मौत की खबर परिजनों को मिली परिवार में मातम सा छा गया। हर कोई यही कहता फिर रहा है कि काश! कि वे बर्थडे पार्टी में गये ही न होते। एक तरफ जहां पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है वही पर घटना में मृतक अर्जुन के पास 1 साल का लड़का और उसकी पत्नी जलता देवी 4 महीने गर्भवती है। विनोद के पास 3 साल की एक बेटी है। वही पर विनोद की पत्नी मंजु देवी की करुण क्रंदन सुन सबकी आंखे नम हो जा रही है। सबके जुबान पर एक ही सवाल है कि अब दोनों की पत्नियों और पहाड़ सी जिंदगी कैसे बीतेगी। बच्चों के सिर से पिता का साया छिन जाने का दुःख पुरे गांव को है।

नशा मुक्ति को लेकर चित्रकूट के किशोर संप्रेषण गृह में जागरूकता शिविर का आयोजन

● - जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में चला अभियान

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। नशा मुक्ति को लेकर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, चित्रकूट के तत्वावधान में शनिवार को राजकीय संप्रेषण गृह किशोर में विशेष जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में उपस्थित किशोर संवासियों और स्टाफ को नशीली दवाओं, धूम्रपान व शराब से होने वाले शारीरिक, मानसिक और सामाजिक नुकसान की जानकारी दी गई। शिविर का शुभारंभ पराविधिक स्वयंसेवक एवं योगाचार्य संजय कुमार ने किया। उन्होंने जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सरकार द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत नशे के खिलाफ जागरूकता, उपचार और पुनर्वास सेवाएं चलाई जा रही हैं।

मुख्य वक्ता मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेन्द्र देव पटेल ने नशे की लत से होने वाले गंभीर दुष्परिणामों को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि नशा व्यक्ति को न केवल मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर करता है, बल्कि सामाजिक रूप से भी उसे एकाकी बना देता है। डॉ. पटेल ने किशोरों से नशे से दूर रहने और स्वस्थ जीवन अपनाने के लिए नियमित योग व ध्यान करने की सलाह दी। इस अवसर पर सहायक अधीक्षक वीर सिंह, सहायक अध्यापक राजीव कुमार सिंह, मानसिक रोग विभाग से संजय सिंह, विनोद सिंह, अभिषेक त्रिपाठी सहित अनेक संबंधित अधिकारी, कर्मचारी एवं सभी संवासी उपस्थित रहे। शिविर के अंत में सभी को नशा मुक्ति का संकल्प दिलाया गया और भविष्य में इस प्रकार की और जागरूकता गतिविधियों को आयोजित करने की बात कही गई।

भाजपा सरकार में ब्राह्मणों का हो रहा उत्पीड़न- पूर्व मंत्री पवन पांडेय

मछलीशहर बॉर्डर पर समाजवादी नेताओं ने किया भव्य स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता और उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री पवन पांडेय के जौनपुर आगमन पर मछलीशहर बॉर्डर पर सपा नेता राहुल त्रिपाठी के नेतृत्व में भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे और जोरदार नारेबाजी करते हुए नेता का स्वागत किया। जनपद में एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे पूर्व मंत्री पवन पांडेय ने मीडिया से बातचीत के दौरान प्रदेश की भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में कानून व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो चुकी है। अपराधियों को खुला संरक्षण मिल रहा है और जो भी सरकार के खिलाफ बोलता है, उसे झूठे मुकदमों में फंसाकर जेल भेजा जा रहा है।

पूर्व मंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार में ब्राह्मण समाज सबसे ज्यादा ठगा गया है। जो भी ब्राह्मण सरकार के विरोध में आवाज उठाता है, उस पर फर्जी मुकदमे लाद दिए जाते हैं। उन्होंने हरिशंकर तिवारी का जिक्र करते हुए कहा कि उनके जीवनकाल में सरकार कुछ नहीं बिगाड़ सकी, अब उनके निधन के बाद उनके परिवार को प्रताड़ित किया जा रहा है। उनका मकान व बाउंड्री दीवार तोड़ना सरकार की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार में ब्राह्मण मंत्री केवल कठपुतली बनकर रह गए हैं, न तो वे अपनी बात रख पा रहे हैं और न ही अपने समाज का हित कर पा रहे हैं। ब्राह्मण और पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) समाज 2027 में भाजपा को सत्ता से बाहर करने के लिए संकल्पबद्ध है।

पूर्व मंत्री ने भगवान परशुराम जयंती की छुट्टी निरस्त किए जाने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर निशाना साधा और कहा कि सरकार ब्राह्मण समाज को नीचा दिखाने की लगातार कोशिश कर रही है, लेकिन ब्राह्मण समाज यह अन्याय नहीं भूलेगा। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में वह घर-घर जाकर ब्राह्मण समाज को जागरूक करेंगे और समाजवादी पार्टी से जोड़ने का काम करेंगे। इस अवसर पर जय हिंद यादव, अनिल यादव, श्याम नारायण बिंद, रोशन दुबे, सूर्यभान यादव, इजहार अहमद, वीरू यादव, निखिल यादव, प्रदीप यादव, विशाल पांडेय, रोहित शुक्ला, राजन तिवारी समेत कई नेता और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जफराबाद में बेलगाम अपराध, बेअसर पुलिस कार्रवाई

लगातार वारदातों से दहशत में जनता, पुलिस पर उठ रहे सवाल

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- जनपद के जफराबाद थाना क्षेत्र में अपराधियों के हौसले बुलंद हैं और पुलिस की सुस्ती अब चर्चा का विषय बन चुकी है। क्षेत्र में पिछले कुछ दिनों में हुई लगातार आपराधिक घटनाओं ने न केवल आम जनता को दहशत में डाल दिया है, बल्कि पुलिस की कार्यशैली पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं।

24 घंटे में दो बड़ी वारदातें, पुलिस खाली हाथ

जमैथा रेलवे क्रॉसिंग पर गेटमैन के साथ मारपीट कर बदमाश फरार हो गए। इस घटना को बीते अभी कुछ ही समय हुआ था कि जफराबाद-कबूलपुर बाईपास पर स्कॉर्पियो सवार बदमाशों ने एक व्यापारी से मोबाइल और पिकअप मैक्स लूट ली। दोनों ही घटनाओं में अब तक कोई ठोस गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। स्थानीय लोगों का कहना है कि जफराबाद थाना क्षेत्र में अपराधी बेखौफ हो चले हैं और पुलिस निष्क्रियता की स्थिति में है।

CCTV फुटेज खंगाल रही पुलिस, नंबर प्लेट नहीं साफ

विश्वस्त सूत्रों से जानकारी मिली है कि थाना अध्यक्ष जफराबाद द्वारा 70 से 80 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली गई है, लेकिन स्कॉर्पियो की रफ्तार इतनी तेज थी कि नंबर प्लेट स्पष्ट रूप से नजर नहीं आई। इसके चलते पुलिस अभी तक किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंच पाई है।

'छत्रछाया' में थाना अध्यक्ष, चर्चाओं का बाजार गर्म

क्षेत्र में यह चर्चा आम हो गई है कि थाना अध्यक्ष को मंत्री और उच्च अधिकारियों का संरक्षण प्राप्त है, जिससे कार्रवाई में ढिलाई देखी जा रही है। लोगों का कहना है कि पुलिस अब "हाफ एनकाउंटर" या एनकाउंटर जैसे स्टंट्स के जरिए अपनी छवि सुधारने की कोशिश कर सकती है।

लूटकांड के बाद हरकत में आई पुलिस, 10 टीमें तैनात

बृहस्पतिवार को पिकअप लूट की घटना के बाद जफराबाद पुलिस सक्रिय हुई है। जानकारी के अनुसार, ड्राइवर नखडू के शाहगंज से निकलने से लेकर वारदात स्थल और पंचहटिया तक के सभी संभावित छुट्टड़ू फुटेज को खंगाला जा चुका है। प्रभारी निरीक्षक जय प्रकाश यादव के नेतृत्व में कुल 10 पुलिस टीमें जांच में जुटी हैं। चौकी प्रभारी मनोज राय सहित महिला व पुरुष कांस्टेबल, और सर्विलांस टीम को भी लगाया गया है।

प्रभारी निरीक्षक का दावा - जल्द होगा खुलासा

प्रभारी निरीक्षक जय प्रकाश यादव का कहना है कि पुलिस टीम हर संभव प्रयास कर रही है और जल्द ही इस लूटकांड का खुलासा किया जाएगा। हालांकि, आमजन में अब भी विश्वास की कमी साफ देखी जा सकती है।यदि अपराध नियंत्रण को लेकर इसी तरह की निष्क्रियता बनी रही, तो जफराबाद में कानून व्यवस्था की स्थिति और भी खराब हो सकती है।

चित्रकूट की शेरनी बनीं इंस्पेक्टर रीता सिंह, मिला रेडियो सिटी स्पेशल 26 ब्रेवरी अवार्ड

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट। जिले की तेजतर्रार महिला पुलिस अधिकारी, प्रभारी निरीक्षक पहाड़ी रीता सिंह ने अपने साहस और कर्तव्यनिष्ठा का लोहा एक बार फिर मनवाया है। प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशान्त कुमार द्वारा उन्हें "रेडियो सिटी स्पेशल 26 ब्रेवरी अवार्ड्स"से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें लखनऊ में पुलिस कमिश्नर अमरेन्द्र कुमार सेंगर की गरिमामयी उपस्थिति में प्रदान किया गया। उत्तर प्रदेश शासन की ओर से अपर पुलिस महानिदेशक, कानून एवं व्यवस्था, द्वारा जारी पत्र के अनुसार इस पुरस्कार का उद्देश्य पुलिसिंग के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली महिला पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना है। बीते एक वर्ष में जिन महिला अधिकारियों ने अपराध नियंत्रण, विवेचना, कानून व्यवस्था अथवा नवाचार के क्षेत्र में साहसिक कार्य किए हैं, उन्हें यह सम्मान दिया गया। प्रभारी निरीक्षक रीता सिंह को यह पुरस्कार उनके पूर्व कार्यकाल के दौरान मानिकपुर थाने में किए गए दो विशेष अभियानों में सफलता के लिए प्रदान किया गया। पहली घटना में, उन्होंने गुटखा व्यापारियों के साथ हुई लूट का न केवल सफल अनावरण किया, बल्कि चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लूट का पूरा माल भी बरामद किया। दूसरी अहम कार्रवाई में, गौकशी की एक संगीन वारदात में उन्होंने त्वरित निर्णय लेते हुए पांच अभियुक्तों को गिरफ्तार कर कानून के शिकंजे में कस दिया। इस अवार्ड के माध्यम से यह स्पष्ट हो गया है कि रीता सिंह जैसी महिला अधिकारी न केवल नारी शक्ति का प्रतीक हैं, बल्कि उत्तर प्रदेश पुलिस की गरिमा और विश्वास का मजबूत स्तंभ भी हैं।

जनपद का 7,537.48 लाख रुपये से होगा पर्यटन विकास- डीएम

चित्रकूट- जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने बताया कि शासन द्वारा जनपद में पर्यटन विभाग के वित्तीय वर्ष 2024-25 अंतर्गत परियोजनाएं स्वीकृत की है। जिसमें तीर्थ विकास परिषद के अंतर्गत कामदगिरि परिक्रमा मार्ग का श्रद्धालुओं के सुविधार्थ सांस्कृतिक एवं शहरी कायाकल्प एवं अवस्थापना संबंधी पर्यटन विकास कार्य के लिए 2044.37 लाख रुपए, रामवन गमन मार्ग के मुख्य पड़ाव स्थलों पर पर्यटक सुविधा केंद्र, डारमेट्री निर्माण एवं पर्यटन विकास के लिए 1192.58 लाख रुपए, हवाई अड्डे के समीप देवांगना घाटी में बॉर्डर पर पर्यटन सुविधा केंद्र, डॉरमेट्री निर्माण के लिए 1755. 67 लाख रुपए, इको टूरिज्म पर आधारित थीम पार्क निर्माण के लिए 1176.97 लाख रुपए तथा रानीपुर टाइगर रिजर्व के सन्निकट पर्यटन भूमि का ईको पर्यटन विकास कार्य के लिए 1367. 89 लाख रुपए स्वीकृत किए गए है। बताया कि तीर्थ विकास परिषद एवं पर्यटन विभाग के अंतर्गत पर्यटन विभाग की वित्तीय वर्ष 2024-25 के अंतर्गत स्वीकृत परियोजनाओं में कुल स्वीकृत लागत 7,537.48 लाख रुपए है।

पश्चिम बंगाल हिंसा के विरोध में हिंदू संगठन के पदाधिकारियों ने किया प्रदर्शन

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट- वक्फकानून के विरोध की आड़ में संपूर्ण पश्चिम बंगाल में हिंदुओं के साथ हो रहीं हिंसा के विरोध में विभिन्न हिंदू संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किया। मांग की कि पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लागू करते हुए हिंसा के आरोपियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाए। विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल सहित अन्य हिंदू संगठनों ने शनिवार को विरोध करते हुए कहा कि पश्चिम बंगाल में हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा है। ममता बनर्जी की सरकार में राष्ट्र विरोधी और हिंदू विरोधी तत्वों को निर्बाध रूप से अपने षड्यंत्रों को क्रियान्वित करने की खुली छूट दी जा रही है, जो अत्यधिक चिंताजनक है। कहा कि केंद्र सरकार को प्रशासन का नियंत्रण व संचालन अपने हाथ में लेकर राष्ट्र विरोधी व हिंदू विरोधी तत्वों को उनके कुकर्मों के लिए कठोरतम सजा दिलवानी चाहिए। बताया कि दंगाईयों द्वारा बीती 11 अप्रैल को वक्फकानून के विरोध के नाम पर किया गया हिंसक प्रदर्शन हिंदुओं पर आक्रमण के रूप में था। इस भीड़ ने हिंदुओं के 200 से अधिक घरों और व्यावसायिक दुकानों को लूटकर आग के हवाले कर दिया। जिसमें सैकड़ों हिंदुओं बुरी तरह घायल हो गए। साथ ही तीन नागरिकों की निर्मम हत्या कर दी गई। जिसके परिणाम स्वरूप 500 से अधिक हिंदू परिवारों को मुर्शिदाबाद से पलायन करना पड़ा। कहा कि यह हिंसा मुर्शिदाबाद से निकलकर संपूर्ण बंगाल में फैलती जा रही है। इसलिए, बंगाल में अविलंब राष्ट्रपति शासन लगाया जाए। साथ ही बंगाल की हिंसा की जांच एनआईए के द्वारा करवाई जाए और दोषियों को अविलंब दंडित किया जाए। बंगाल की कानून व्यवस्था का संचालन केंद्रीय सुरक्षा बलों के हाथों में दिया जाए। साथ ही बांग्लादेशी व रोहिंग्या घुसपैठियों की पहचान कर उनको निष्कासित किया जाए। इस मौके पर विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष राजेंद्र त्रिवेदी, जिला मंत्री नीरज केशरवानी, बजरंग दल जिला संयोजक अंकित पटेल, छेदीलाल गौतम सहित अन्य संगठनों के पदाधिकारी मौजूद रहे।

तिरंगा यात्रा में शामिल विद्यार्थियों को कुलपति ने किया सम्मानित

● विद्यार्थियों ने की थी 150 किलोमीटर की तिरंगा साइकिल यात्रा

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- कुलाधिपति एवं राज्यपाल उत्तर प्रदेश श्रीमती आनंदी पटेल के निर्देश पर वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय की 24 मार्च से 26 मार्च 2025 तक आयोजित तीन दिवसीय तिरंगा साइकिल यात्रा में शामिल विद्यार्थियों और सहयोग करने वालों को कुलपति सभागार में शनिवार को कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने प्रशस्ति पत्र देकर उत्साहवर्धन किया कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने कहा कि विद्यार्थियों ने तिरंगा साइकिल यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा कर देश भक्ति, एकता और आत्मबल का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है. यह यात्रा आपके जीवन में राष्ट्र प्रेम की भावना को और प्रबल करेगी. उन्होंने कहा कि जीवन में देश के तिरंगे से ऊर्जा लेते रहें। परीक्षा नियंत्रक डॉ. विनोद कुमार सिंह एवं प्रो. मानस पांडे ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।सफलतापूर्वक 150 किलोमीटर की साइकिल यात्रा पूर्ण करने पर यात्रा के नोडल अधिकारी प्रो. राकेश कुमार यादव ने यात्रा के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला. सहायक नोडल अधिकारी डॉ. अनुराग मिश्र ने अतिथियों का स्वागत किया एवं साइकिल यात्रा दल में सम्मिलित छात्रों को बधाई दी.साइकिल यात्रा में 30 विद्यार्थियों ने भाग लिया था. इस दौरान जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों से होते हुए शहीद स्थलों पर पहुंचकर उन्हें नमन किया था. इसके साथ ही शहीदों के परिजनों से मिलकर उन्हें विश्वविद्यालय का मान-पत्र, अंगवस्त्र एवं प्रतीक चिन्ह भेंट किया था. इस यात्रा में शामिल विद्यार्थियों ने समाज को नशा मुक्ति और दहेज मुक्ति के लिए संदेश दिया. विद्यार्थियों ने यात्रा के दौरान अपने अनुभवों को भी साझा किया। इस अवसर पर प्रो. सुरेश कुमार पाठक, शिक्षक संघ के महामंत्री डॉ. शैलेन्द्र यादव, डॉ. मीताराम पाल, डॉ. पूनम यादव, अजय कुमार, डॉ. हेमंत यादव, डॉ. पुनीत सिंह, राजपाल यादव, सत्यलाल यादव, डॉ. अंजनी कुमार मिश्र, समेत यात्रा में शामिल विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

पुलिस उपायुक्त सेंट्रल ने थाना काकादेव का किया आकस्मिक निरीक्षण

कानपुर। पुलिस उपायुक्त सेंट्रल दिनेश त्रिपाठी द्वारा दिनांक 19 अप्रैल 2025 को थाना काकादेव का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यालय अभिलेख, मालखाना, महिला हेल्प डेस्क, हवालात, सीसीटीएनएस प्रणाली एवं आगंतुक रजिस्टर की गहनता से जाँच की। पुलिस उपायुक्त ने प्रभारी निरीक्षक काकादेव को निर्देशित किया कि थाना परिसर की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि थाना आने वाले आगंतुकों और पीड़ितों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाए, उनके बैठने की उचित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए तथा उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनते हुए त्वरित समाधान किया जाए। इस अवसर पर सहायक पुलिस आयुक्त स्वरूपनगर भी उपस्थित रहे।

क्रिकेट में जिले के उदीयमान खिलाड़ी कर रहे नए नए कीर्तिमान स्थापित

प्रतापगढ़। चिलबिला निवासी विष्णु सरोज पुत्र दिनेश कुमार सरोज का चयन उत्तर प्रदेश की अंडर 14 राज सिंह डुंगरपुर ट्रॉफी के लिए हुआ है। विष्णु सरोज स्पोर्ट स्टेडियम में आदित्य शुक्ला क्रिकेट प्रशिक्षक व पूर्व रणजी ट्रॉफी खिलाड़ी से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे थे। वर्तमान में विष्णु सरोज खेल छात्रावास ग्रीन पार्क कानपुर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उनके चयन पर खेल अधिकारी पूनम लता राज ने खुशी व्यक्त करते हुए विष्णु सरोज के उज्जवल भविष्य की कामना की है।इस साल प्रतापगढ़ के खिलाड़ियों ने क्रिकेट के क्षेत्र में रोशन विश्वकर्मा अंडर-19 विश्वकप में नेपाल की टीम में प्रतापगढ़ का नाम रोशन किया तथा विजय मर्चेंट ट्रॉफी अंडर 16 उत्तर प्रदेश के लिए मोहम्मद अर्शमान चौकड़ा तथा राजवीर सिंह बहुचरा और अभिनंदन सिंह ने इंडियन क्रिकेट लीग की प्रतिष्ठित फ्रेंचाइजी रॉयल चैलेंजर्स बंगलौर में जगह बनाकर प्रतापगढ़ का नाम रोशन किया है।

वीवीआईपी कार्यक्रम के दृष्टिगत पार्किंग का निरीक्षण

कानपुर। पुलिस उपायुक्त यातायात रवींद्र कुमार द्वारा प्रस्तावित वीवीआईपी आगमन के दृष्टिगत सभा स्थल एवं अन्य महत्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण किया गया। भ्रमण के दौरान सुरक्षा व्यवस्था, पार्किंग की सुविधा तथा अन्य व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। मौके पर उनके साथ सहायक पुलिस आयुक्त यातायात (मध्य व पश्चिम) आकांक्षा पाण्डेय, टीआई मध्य जोन व दक्षिण जोन उपस्थित रहे।

नवागत जिलाधिकारी संजय चौहान ने कार्यभार किया ग्रहण

अमेठी। नवागत जिलाधिकारी संजय चौहान ने जिला कोषागार पहुंचकर जिलाधिकारी अमेठी के पद का कार्यभार ग्रहण किया। तत्पश्चात उन्होंने अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। नवागत जिलाधिकारी 2014 बैच के आईएएस अधिकारी हैं, इससे पूर्व नगर आयुक्त सहारनपुर एवं स्मार्ट सिटी सहारनपुर के सीईओ के पद पर कार्यरत थे। नवागत जिलाधिकारी के कार्यभार ग्रहण करने के दौरान मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अर्पित गुप्ता, अपर जिलाधिकारी न्यायिक दिनेश कुमार मिश्रा, वरिष्ठ कोषाधिकारी रामेंद्र कुमार सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

विश्व लीवर डे पर विशेषज्ञ डॉक्टरों ने बताए लीवर स्वस्थ रखने के उपाय

● आईएमए का ने विश्व लीवर डे पर किया प्रेस वार्ता का आयोजन, शराब लीवर के लिए है घातक - डा. वी.के. मिश्रा

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन कानपुर शाखा द्वारा शनिवार को "सेवा का मंदिर, आई.एम.ए. कार्यालय, परेड में प्रेस वार्ता का आयोजन लिवर यानी यकृत से होने वाली बीमारियों की जानकारी देने के लिए किया गया है। लिवर शरीर का महत्वपूर्ण अंग है और 19 अप्रैल को "विश्व लीवर दिवस " के रूप में मनाया जाता है । इस प्रेस कॉन्फ्रेंस को डॉ. नंदिनी रस्तोगी, अध्यक्ष, आईएमए कानपुर, डॉ कुणाल सहाय उपाध्यक्ष, डॉ विकास मिश्रा, सचिव, आईएमए कानपुर, डॉ वी के मिश्रा, वरिष्ठ गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट विशेषज्ञ, डॉ मयंक मेहरोत्रा, वरिष्ठ गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट विशेषज्ञ, डॉ आशाक हुसैन डार, वरिष्ठ गेस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट और एंडोस्कोपिस्ट विशेषज्ञ ने संबोधित किया। ने बताया की विश्व लिवर दिवस 202 का थीम भोजन ही औषधि है।

आईएमए कानपुर के अध्यक्ष डॉक्टर नंदिनी रस्तोगी थीम लिवर के स्वास्थ्य को बनाए रखने और लिवर से संबंधित बीमारियों को रोकने में पोषण की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डालती है। संतुलित आहार और भोजन चुन कर, व्यक्ति अपने लिवर के कार्य को बेहतर बना सकते हैं और लिवर विकारों व जोखिम को कम कर सकते हैं। इस कार्यक्रम में शहर के जाने-माने गैस्ट्रोएंटरोलॉजी डॉक्टर वीके मिश्रा ने बताया की शराब लीवर की बीमारी का एक प्रमुख कारण है और इसके अत्यधिक सेवन से लीवर खराब और सिरोसिस नाम की बीमारी हो जाती है इसमें

लिवर अपना पाचन और अन्य काम नहीं कर पता है और पोर्टल हाइपरटेंशन की वजह से खून की उल्टी या लैट्रिन होने लगती है।

डॉक्टर कुणाल सहाय, उपाध्यक्ष आईएमए कानपुर ने बताया की आजकल NAFLD या MAFLD यानी वह बीमारियां जो शराब की वजह से नहीं बल्कि मेटाबॉलिक कारण जैसे कि शुगर और अत्यधिक चर्बी के जमा होने से लीवर में जो डैमेज होता है वह आज के जमाने में प्रमुख कारण है और यह बीमारी लाइफस्टाइल की बीमारी है जिसका की आसानी से उपचार शुगर के कंट्रोल और वजन के कंट्रोल से किया जा सकता है और पूरी तरह ठीक किया जा सकता है। डॉ विकास मिश्रा सचिव आईएमए कानपुर ने बताया की लीवर की बीमारी का अत्याधुनिक उपचार दवाइयां, एंडोस्कोपी द्वारा बीमारी की जानकारी और अंत स्थिति में लिवर ट्रांसप्लांट की सुविधा उपलब्ध है जो की एक अच्छे अस्पताल में अच्छे रिजल्ट के साथ कराया जा सकता है और आदमी एक स्वस्थ जीवन जी सकता है ।

एलेन हाउस स्कूल के वार्षिक समारोह में पुलिस उपायुक्त पूर्वी श्रवण कुमार सिंह ने दी शुभकामनाएं

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। पुलिस उपायुक्त पूर्वी श्रवण कुमार सिंह आज दिनांक 19 अप्रैल 2025 को एलन हाउस पब्लिक स्कूल, रूमा में आयोजित 'हॉल ऑफ ऑनर स्कॉलर बैज एवं वार्षिक पुरस्कार समारोह' में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने विद्यार्थियों को उनके उत्कृष्ट शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि किसी भी बच्चे की सफलता के पीछे उसके माता-पिता और शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। उन्होंने सभी अभिभावकों और शिक्षकों को उनके मार्गदर्शन और परिश्रम के लिए बधाई दी। पुलिस उपायुक्त पूर्वी श्रवण कुमार सिंह ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा, ÷आप सभी हमारे देश का भविष्य हैं। यदि आप शिक्षित, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे, तो एक सुरक्षित और सशक्त समाज का निर्माण संभव होगा। कार्यक्रम में विद्यालय प्रबंधन, शिक्षकगण, अभिभावक और छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

आयुष आपके द्वार निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर किया जा रहा है उपचार

प्रतापगढ़। जनपद में संचालित 54 आयुर्वेदिक, 06 यूनानी एवं 47 होम्योपैथिक चिकित्सालयों के प्रभारी द्वारा ग्रामों में सप्ताह में एक दिवस आयुष आपके द्वार निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कर क्षेत्रवासियों को आयुर्वेद,यूनानी एवं होम्योपैथिक चिकित्सा का लाभ दे रहे है। साथ ही साथ घरेलू रसोई एवं औषधीय पौधों के माध्यम से आयुर्वेदिक लाभ हेतु जागरूक किया जा रहा है। चिकित्सकों के द्वारा योग एवं प्राणायाम से जीवन चर्या एवं स्वास्थ्य को सही रखने की भी सलाह दी जा रही है। निःशुल्क चिकित्सा शिविर में डाक्टरों द्वारा मरीजों की जांच कर उन्हें उपयुक्त दवाईयों का वितरण भी किया जा रहा है। आयुष आपके द्वार के माध्यम से निःशुल्क चिकित्सा शिविर का लाभ लोगों को प्राप्त हो रहा है।

डीएम ने हैलीपेड और पनकी पावर प्लांट का किया निरीक्षण

●काल मुख्यमंत्री तो 24 को लोकार्पण करने आ रहे हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। कल यानि आज प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जनपद दौरे के दृष्टिगत जिलाधिकारी द्वारा आज अरमापुर स्टेट ग्राउंड में निर्माणाधीन हेलीपैड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सेफ हाउस स्विस कॉटेज व अन्य आवश्यक सुविधाएं मुहैया कराने के लिए संबंधित को निर्देश दिए। इसके बाद, जिलाधिकारी द्वारा 1M660 मेगावाट पनकी तापीय विस्तार परियोजना का निरीक्षण किया गया, जिसकी उत्पादन क्षमता - 660 मेगावाट तथा परियोजना की लागत- 8305.16 करोड़ है। इस दौरान जिलाधिकारी द्वारा कल माध्यमिक मुख्यमंत्री के दौरे को देखते हुए कंट्रोल रूम, एडमिन बिल्डिंग, सीआईएसएफ तैनाती सहित अन्य सुरक्षा व्यवस्थाओं के साथ - साथ साफ- सफाई व अन्य आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए । जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दौरे के समय चाक - चौबंद व्यवस्थाएं हो, जिससे प्रधानमंत्री के दौरे के लिए बनाई गई रूपरेखा के तहत काम करके कार्यक्रम को सफल बनाया जा सके।

सरकारी विद्यालयों में छात्रों की घटती संख्या पर डीएम चिंतित

41 से घटकर रह गए 26 छात्र उसमें भी उपस्थिति 16 छात्रों की

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। जिलाधिकारी जितेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा आज बिधनू ब्लॉक स्थित प्राथमिक विद्यालय हड़हा का औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के समय दोपहर 1:00 बजे विद्यालय में पंजीकृत 26 छात्रों के सापेक्ष केवल 15 छात्र ही उपस्थित पाए गए। ज्ञात हुआ कि विगत दो वर्षों में छात्र संख्या में निरंतर गिरावट आई है – अक्टूबर 2023 में भी यह संख्या 41 से घटकर और कम रह गई थी, जबकि शासन स्तर पर "स्कूल चलो अभियान"सहित कई प्रयास लगातार किए जा रहे हैं। विद्यालय की अध्यापिका सपना एवं अन्य शिक्षकों द्वारा समुदाय में बच्चों को विद्यालय में नामांकित कराने हेतु प्रयास किए

गए, परंतु अपेक्षित सफलता नहीं मिल सकी है। निरीक्षण के दौरान यह भी पाया गया कि मिड-डे मील का सेंपल सुरक्षित रखने का जो निर्देश है, उसका पालन नहीं किया गया था, जिससे भोजन की गुणवत्ता का मूल्यांकन नहीं किया जा सका। इसके अतिरिक्त, शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा विद्यालय का नियमित निरीक्षण किए जाने की अपेक्षा रहती है, परंतु अक्टूबर 2023 के बाद से किसी भी अधिकारी द्वारा विद्यालय निरीक्षण नहीं किया गया। उल्लेखनीय है कि पिछला निरीक्षण भी एक चिकित्सक (डॉक्टर) द्वारा किया गया था। आरबीएसके (राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम) टीम की उपस्थिति भी नहीं पाई गई, जबकि उनकी उपस्थिति आवश्यक होती है। विद्यालय में वर्तमान में 26 छात्र पंजीकृत हैं, जिनमें दो शिक्षा मित्र तथा एक अध्यापक कार्यरत हैं। ऐसे में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए संसाधनों का और बेहतर उपयोग संभव है। जिलाधिकारी ने बीएसए, खंड शिक्षा अधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु गंभीर प्रयास करें।

यातायात नियमों के तहत, वाहनों पर बड़ी कार्रवाई

कानपुर। शासन के आदेश के क्रम में व उच्चाधिकारियों के निर्देशन में दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु शहर के प्रमुख चौराहों पर विशेष रुप से ई-रिक्शा वाहनों के विरुद्ध अभियान चलाकर गलत दिशा में वाहन चलाने वालों, बिना ड्राइविंग लाइसेंस, गलत नंबर प्लेट एवं बिना फिटनेस के सम्बन्ध में चेकिंग की गयी और यातायात नियमों का पालन न करने वाले 249 ई-रिक्शा का चालान किया गया। वाहन चालकों को यातायात नियमों के पालन करने हेतु जागरुक किया गया। इस प्रकार की कार्रवाई के माध्यम से यातायात नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाता है। दुर्घटनाओं की रोकथाम में मदद मिलती है। वाहन चालकों को यह संदेश दिया जाता है कि यातायात के नियमों का उल्लंघन करने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उच्चाधिकारियों के आदेशानुसार कानपुर कमिश्नरेट पुलिस द्वारा दिनांक- 18.04.2025 को यातायात नियमों का पालन न करने वालो पर की गई कार्यवाही, रॉन्ग साइड149, ट्रिपल सवारी टू व्हीलर66, एचएसआरपी 13, अन्य 965, कुल 1190 वाहनों पर कार्रवाई की गई।

अभियुक्त के कब्जे से टाटा मैजिक व दो बोरी चोरी का चावल बरामद

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। थाना कोतवाली देहात पुलिस द्वारा सरकारी कोटे की दुकान से चावल की बोरी चोरी करने वाले एक अभियुक्त को ग्राम महकनी बाई पास से गिरफ्तार किया गया।अभियुक्त के कब्जे से 01 वाहन टाटा मैजिक व चोरी के 02 बोरी गेहूं बरामद किया गया है।थाना कोतवाली देहात क्षेत्रान्तर्गत ग्राम भदोही निवासी वादी की सरकारी कोटे की दुकान से गेहूँ व चावल की बोरी चोरी होने के प्रकरण में वादी की प्राप्त तहरीर के आधार पर 08 अप्रैल को अज्ञात अभियुक्त का अभियोग दर्ज किया गया था।थाना कोतवाली देहात प्रभारी निरीक्षक अभिषेक सिरोही के नेतृत्व में उप निरीक्षक अतुल तिवारी मय हमराह उ0नि0 अभिषेक वर्मा, का0 राहुल सिंह, का0 चन्द्रकेश, का0 किशन पाल द्वारा क्षेत्र देखभाल के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना कोतवाली देहात पर पंजीकृत मु0अ0सं0 78/2025 धारा 331(4),305,3 (5) बीएनएस से

संबंधित वांछित एक अभियुक्त अमित पटेल पुत्र पृथ्वीपाल पटेल निवासी रामचन्द्र का पुरवा भदोही थाना कोतवाली देहात जनपद प्रतापगढ़ को चोरी के एक वाहन टाटा मैजिक व चोरी के दो बोरी गेहूं के साथ थाना कोतवाली देहात क्षेत्रान्तर्गत ग्राम महकनी बाईपास से गिरफ्तार किया गया।उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 317(2),3 (5) बीएनएस की बढ़ोत्तरी की गई।

कानपुर में लुटेरी दुल्हन का शिकार हुआ रिटायर्ड सीओडी कर्मी

●लाखों की ज़ेवरात लेकर भागी लुटेरी दुल्हन की तलाश जारी, सुराग अब तक नहीं पहले भी तकरीबन आधा दर्जन लोग हो चुके लुटेरी दुल्हनों का शिकार

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। पत्नी सुख के चक्कर में एकांकी जीवन बिताने वाला सेवानिवृत्ति सी ओडी कर्मी लुटेरी दुल्हन का शिकार हो गया। वह लाखों के जेवरात लेकर भाग गई ,जिसके बाद पुलिस उसकी तलाश कर रही है, लेकिन उसका सुराग अब तक नहीं मिल पाया है। खास बात यह भी कि लुटेरी दुल्हन का शिकार होने वाला यह सीओडी कर्मी पहला नहीं है। इसके पहले भी तकरीबन आधा दर्जन लोग इसी तरह से शिकार बनाए जा चुके हैं। प्राप्त विवरणके मुताबिक मूलरूप से सीतापुर निवासी रिटायर्ड सीओडी कर्मी 62 साल के हरीश कुमार शुक्ला के परिवार में कोई न होने के चलते वह एकाकी जीवन जी रहे थे। साथ ही नौकरी के दौरान वे सनिगवां में एक किराये के मकान में रह रहे थे। तभी उनकी मुलाकात दूसरे मकान में किराये पर रहने वाली महिला (45) के साथ हुई। इसके बाद दोनों में बातचीत होती थी। हरीश कुमार ने बताया कि महिला ने उनके एकाकी जीवन को देखकर उनसे शादी कर देखभाल करने का झांसा दिया।

इसके बाद बीती 11 फरवरी 2025 को उन्होंने महिला से आर्य समाज मंदिर में शादी कर ली। हरीश कुमार ने बताया कि वह महिला को लेकर सनिगवां में ही किराये के मकान में रहने लगे। पीड़ित ने पुलिस को बताया कि आरोप है कि एक-दो दिन रुकने के बाद महिला देर रात तीन लाख रुपए नगद और दो लाख की कीमत के जेवर लेकर फरार हो गई।पुलिस की तलाश कर रही है लेकिन समाचार लिखे जाने तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है।

थाना अध्यक्ष बाजार शुक्ल दयाशंकर मिश्र ने व्यापारियों व पत्रकारों के साथ की बैठक

●साइबर अपराध से बचाव, सीसीटीवी कैमरा की उपयोगिता सहित अन्य प्रमुख बिंदुओं पर डाला विस्तृत प्रकाश

सैकड़ो की संख्या में व्यापारी व पत्रकार बंधु बैठक में हुए शामिल

स्वतंत्र प्रभात

शुकुल बाजार अमेठी। अपराध पर अंकुश लगाने वाले तेज दरार और ईमानदार थाना अध्यक्ष दयाशंकर मिश्र ने कानून व्यवस्था, शांति व्यवस्था एवं सुरक्षा के दृष्टिगत शुकुल बाजार कस्बे के व्यापारियों व पत्रकार बंधुओ के साथ बैठक करते हुए साइबर अपराध से बचाव के तरीके, सीसीटीवी कैमरा की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए व्यापारी बंधुओ की समस्याओं को बारी-बारी से सुना तथा समस्याओं के निस्तारण हेतु आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि व्यापारियों की रक्षा, व्यापारियों की हितों की रक्षा के लिए शुकुल बाजार पुलिस 24 घंटे तत्पर है, उन्होंने कहा कि थाना क्षेत्र के अंतर्गत कानून व्यवस्था चुस्त दुरुस्त रखना तथा लॉ एंड ऑर्डर मेंटेन रखना प्रमुख उद्देश्य है। उन्होंने व्यापारी बंधुओ से कहा कि सड़क की दोनों पटरियों को छोड़कर सामान रखें जिससे अतिक्रमण न हो, और राहगीरों को आने जाने में किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा जाम की समस्या से निजात मिल सके।

साथ ही साथ उन्होंने बताया कि थाने आने वाले फरियादियों के साथ मित्रवत व्यवहार करते हुए उन्हें त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण न्याय उपलब्ध कराया जा रहा है, इस दौरान उन्होंने सीसीटीवी कैमरे की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपराध प्रबंधन के साथ-साथ सीसीटीवी सुरक्षा कैमरे अत्यधिक प्रभावी निवारक के रूप में कार्य करते हैं। अपराधियों द्वारा बिना कैमरे वाले परिसरों की तुलना में दृश्यमान कैमरों वाले परिसरों को निशाना बनाने की संभावना बहुत कम होती है। सीसीटीवी निगरानी का उपयोग स्वास्थ्य और सुरक्षा उल्लंघनों की निगरानी के लिए भी किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आए दिन साइबर अपराध की घटनाएं सुनने को मिलती है ऐसे में कुछ बिंदुओं पर सतर्कता बरती जाए तो साइबर अपराध से छुटकारा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि साइबर अपराध से बचाव के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय हैं, जिनमें मजबूत पासवर्ड का उपयोग, अज्ञात लिंक पर क्लिक न करना, एंटीवायरस सॉफ्टवेयर का उपयोग करना, और अपनी निजी जानकारी को सुरक्षित रखना।इस दौरान उप निरीक्षक सत्य प्रकाश तिवारी, उप निरीक्षक रामपाल सिंह सहित थाना स्टाफ व शुकुल बाजार कस्बे के सैकड़ो व्यापारी तथा कई पत्रकार मौजूद रहे।

विधायक सुरेश पासी ने जौदिलमऊ में निर्माणाधीन गौशाला का किया निरक्षण

हमारे धर्म में वेदों और पुराणों में गाय को माता के रूप में सम्मान दिया गया है

●गौशाला की स्थापना का उद्देश्य गौवंश को आश्रय, सुरक्षा, चारा, चिकित्सा उपलब्ध कराना तथा कमजोर, बीमार, घायल, विकलांग और परित्यक्त गौवंश का पुनर्वास करना है - सुरेश पासी

स्वतंत्र प्रभात

शुकुल बाजार अमेठी। विधानसभा जगदीशपुर का सर्वांगीण विकास करने वाले विधायक सुरेश पासी ने जौदिल मऊ में निर्माणाधीन गौशाला का निरीक्षण किया। साथ ही साथ आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि मुख्यमंत्री के दिशा निर्देश के तहत पूरे उत्तर प्रदेश में गौवंश के संरक्षण के लिए जगह-जगह पर स्थाई व अस्थाई गौशालाओं के माध्यम से गौवंशों को बेहतर सुविधा मिल रही है, जिसमें गौवंशों को चारा, पानी का उत्तम प्रबंध कराया जाता है। तथा उन्होंने बताया कि गौवंशों की देख-रेख के लिए केयरटेकर नियुक्त किए जाते हैं जिससे गोवंशों को किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा जो लोग गोवंशों को छुट्टा छोड़ देते हैं उसे किसानों को किसी प्रकार की दिक्कत ना हो इसके लिए जगह-जगह पर स्थाई व अस्थाई गौशालाओं के माध्यम से हमारी सरकार गौवंश का संरक्षण कर रही है। उन्होंने कहा कि जौदिलमऊ में गौशाला बनने से आसपास के दर्जनों गांव के हजारों किसानों को लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा हमारे धर्म में सनातन धर्म में गाय को माता का स्थान दिया गया है और गौ माता अत्यंत ही पूजनीय हैं, उन्होंने कहा कि सनातन परंपरा में पूजनीय मानी जाने वाली गाय जिसे हम मां कहकर बुलाते हैं, उसकी पूजा का बहुत महत्व है। मान्यता है कि एक

गाय में कई देवी-देवता निवास करते हैं, यही कारण है कि जिस घर में गाय की सेवा होती है, उस घर से जुड़े सारे दोष दूर होते हैं। हिंदू धर्म ग्रंथों में गाय की महिमा का बहुत बखान करता है। उन्होंने कहा ये गौशालाएं गौमाताओं की सुरक्षा, आहार, और उचित देखभाल सुनिश्चित करती हैं। इसके साथ ही ये समाज को गौमाता की सेवा करने और गौसेवा के महत्व को समझाने का मंच भी होती हैं। गौशाला की स्थापना का उद्देश्य गौवंश को आश्रय, सुरक्षा, चारा, चिकित्सा उपलब्ध कराना तथा कमजोर, बीमार, घायल, विकलांग और परित्यक्त गौवंश का पुनर्वास करना है। उन्होंने जनमानस से अपील करते हुए कहा कि पशुधन पालन आम बात है और राज्य की कृषि का एक अभिन्न अंग है जो ग्रामीण आबादी के दो तिहाई से अधिक लोगों की आजीविका का समर्थन करता है। पशु पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य उत्पाद, भार वहन करने की शक्ति, जैविक खाद और घरेलू ईंधन के रूप में गोबर, खाल और चमड़ा प्रदान करते हैं, और ग्रामीण परिवारों के लिए नकद आय का एक नियमित स्रोत हैं। वे एक प्राकृतिक पूंजी हैं, जिसे आसानी से प्रजनन करके एक जीवित बैंक के रूप में कार्य किया जा सकता है, जिसमें संतान ब्याज के रूप में होती है, और फसल विफलता और प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाले आय झटकों के खिलाफ बीमा होता है।

सदगुरु प्रीमियर लीग सीजन-15 का हुआ शुभारम्भ

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट- सदगुरु शिक्षा समिति के तत्वावधान में संचालित सदगुरु पब्लिक स्कूल के खेल प्रांगण में सदगुरु प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता सीजन-15 का शुभारम्भ किया गया। जिसमें सद्गुरु ट्रस्ट के अंतर्गत संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं सेवा प्रकल्पों की कुल 14 टीमों ने प्रतिभागिता किया। सद्गुरु प्रीमियर लीग सीजन-15 का शुभारम्भ चित्रकूट पुलिस अधीक्षक

अरुण कुमार सिंह, एसडीएम एपी द्विवेदी, नायब तहसीलदार हिमांशु शुक्ला, ट्रस्टी डॉ बीके जैन, शिक्षा समिति अध्यक्षा उषा जैन, ट्रस्टी डॉ इलेश जैन ने दीप प्रज्वलन कर किया। ट्रस्टी डॉ बीके जैन ने सभी टीम मैनेजर, कोच, कप्तान एवं खिलाडियों को खेल भावना के साथ अनुशासनपूर्वक लीग मैच खेलने की शपथ दिलाई। लीग का प्रथम मैच एसएनसी लीजेंडस टीम और फेलोज इलेवन के मध्य खेला गया। यह लीग मैच टीमों को दो पूलों में बाँटकर एक माह तक खेला जायेगा तथा फाइनल जीतने वाली टीम को सीजन 15 विजेता का खिताब एवं मैच की रनिंग ट्राफी दी जाएगी। प्रतिभागी टीमों में ऑफ्थाल्मिक सुपर ज्वाइंट्स, सीसीओ डेयरडेविल्स, एसएनसी लीजेंड्स, गुरुकुल स्टार इलेवन, गंगा जमुना, सीसीओ किंग्स इलेवन, फेलोज इलेवन, विद्याधाम इलेवन, एसपीएस स्पार्टनस, एसआईसीएस सुपर किंग, जेकेसी स्टार इलेवन, एसएनसी स्टार इलेवन, कंस्ट्रक्शन सुपर किंग, अन्नपूर्णा स्पोर्ट्स क्लब की टीमों ने लीग मैच में शिरकत की है। इस मौके पर डॉ पूनम आडवाणी, डॉ राजपूत, डॉ बीके अग्रवाल, अनुभा अग्रवाल, प्राचार्य सुरेन्द्र तिवारी, राकेश तिवारी, शंकरदयाल पाण्डेय, दीपक वानी, मंजुला वानी, फिरोज खान, रेफरी तुषारकांत शास्त्री, धीरेन्द्र वर्मा, विनोद पाण्डेय, राजकुमार आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

एमवीडीए ने दो स्थानों पर की सीलिंग की कार्यवाही

मथुरा। एमवीडीए ने दो स्थानों पर सीलिंग की कार्यवाही की है। महानगर में बिना नक्शा स्वीकृत कराये निर्माण करने पर मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण की टीम ने दो स्थानों पर सीलिंग की कार्यवाही की है। उपाध्यक्ष श्याम बहादुर सिंह द्वारा खादर एवं परिक्रमा मार्ग क्षेत्र में निरीक्षण कर सभी प्रकार के अवैध निर्माणों के विरुद्ध चिन्हीकरण करके ध्वस्तीकरण की कार्यवाही करने के आदेश किये है। इसके अलावा उन्होंने अवैध निर्माण करने पर सील की कार्यवाही तेज करने को सभी अभियंताओं को कहा है। ध्रुव घाट जनरल गंज में बिना स्वीकृति प्रदीप चतुर्वेदी द्वारा बनाए गए आवासीय मकान भूतल तथा प्रथम स्थल पर किए गए निर्माण को सील किया गया। संत नगर कॉलोनी'कैमारवन वृन्दावन में दीपक बंसल मोहन बंसल शीतल छाया द्वारा मेप में स्वीकृत से अधिक किए गए बेसमेंट के निर्माण को सील कर दिया गया। सील की कार्यवाही में सहायक अभियंता अशोक चौधरी अवर अभियंता दिनेश कुमार अनिल सिंघल एवं प्राधिकारण का स्टाफ मौजूद रहा।

कार और टेम्पो में टक्कर, चालक सहित 6 घायल

सिद्धार्थनगर। जोगिया कोतवाली क्षेत्र के नौगढ़ बांसी मार्ग एन एच 28 पर करौंदा मसीना के पास आजाद महाविद्यालय के सामने नौगढ़ से बांसी जा रही टेम्पो से बांसी के तरफ से आ रही तेज रफ्तार कार ओवरटेक करते समय टकरा गई जिससे टेम्पो चालक सहित 6 लोग घायल हो गए।घायलों में आशा पत्नी बसंत गौतम निवासी खुटहना थाना शिवनगर,राजकुमारी पत्नी बसंत लाल जानियाजोत थाना बांसी,निधि पत्नी लौटान श्रीवास्तव जानियाजोत थाना बांसी,अब्दुल वदुद पुत्र नजीर अलीगढ़वा,मीना पत्नी योगेन्द्र जोगिय और टेम्पो चालक राकेश यादव पुत्र राजमन यादव कृष्ण नगर थान सिद्धार्थनगर को जोगिया कोतवाली पुलिस वीरेंद्र यादव और प्रदीप उपाध्याय ने मौके पर पहुंच कर घायलों को माधव प्रसाद त्रिपाठी मेडिकल कॉलेज भिजवाया और दोनों वाहनों को कब्जे में लेकर थाने पहुंचवाया। कार चालक आशुतोष पुत्र परमात्मा अग्रहरि को पुलिस थाने ले गई कर चालाक ग्राम थरौली थाना सिद्धार्थनगर का निवासी है। इस संबध में प्रभारी निरीक्षक अनूप कुमार मिश्रा का कहना है कि सभी घायलों को उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज भेजवा दिया गया है और वाहन को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

अघोषित विद्युत कटौती बनी मुसीबत

मथुरा। भीषण गर्मी में बलदेव नगर व देहात क्षेत्र में विद्युत विभाग द्वारा की जा रही अघोषित विद्युत कटौती से लोगों में आक्रोश व्याप्त है। विभाग की लापरवाही इन दिनों बहुत बड़ी मुसीबत बन गई है। लगातार कई कई घंटे बार बार विद्युत कटौती हो रही है। दिन भर में कई बार काफी समय तक बिजली सप्लाई बंद रहती है। बिजली की आंख मिचौली बराबर चलती रहती है, लोगों का उमस भरी भीषण गर्मी में हाल बेहाल हैं। इन्वर्टर फेल हो जाते हैं। मच्छरों के कारण लोग रात में जागने को मजबूर हैं। विगत दिनों से लोग अघोषित विद्युत कटौती से लोग परेशान हैं, भीषण गर्मी में लोग परेशान व आक्रोशित हैं। उमस भरी भीषण गर्मी में पंखे कूलर नहीं चलने से परेशानी हैं। स्थानीय लोगों बलदेव विकास समिति अध्यक्ष ज्ञानेंद्र पांडेय, भाकियू प्रदेश प्रवक्ता रामवीर तोमर, नरेंद्र उपाध्याय, सुरेश चन्द्र पांडेय, सूखी पांडेय अम्बेश पंडित, करन अग्रवाल उमेश पांडेय विजय अग्रवाल सोनू अग्रवाल आदि ने कहा सरकार का निर्बाध बिजली आपूर्ति का दावा फेल साबित हो रहा है। भीषण गर्मी में कभी बिजली कटौती हो जाती है, विभाग के खिलाफ लोगों में आक्रोश है। जनता का आक्रोश बढ़ सकता है। लोग पीने का पानी खरीदने को मजबूर हैं। इन्वर्टर फेल हो रहे हैं। विद्युत कटौती व अधिकारियों के लापरवाही पूर्वक रवैया पर आक्रोश व्यक्त कर विद्युत समस्या समाधान की मांग जिला प्रशासन व विद्युत विभाग से की है।

40 पव्वे देशी शराब के साथ पकडा

मथुरा। थाना सुरीर पुलिस ने 40 पव्वे देशी शराब सहित एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। औहावा पुल से 100 कदम नगला मौजी की तरफ अभियुक्त नारायण पुत्र गुड्डु उर्फ कृष्णचन्द निवासी परसौती गढी थाना सुरीर मथुरा 22 वर्ष को गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी। युवक के खिलाफ इससे पहले कोई आपराधिक रिकार्ड दर्ज नहीं था।

पीएम मोदी के सऊदी अरब दौरे में क्या हज कोटा, रणनीतिक साझेदार, होंगे मुख्य बिंदु

स्वतंत्र प्रभात

सऊदी अरब प्रधानमंत्री मोदी की सऊदी अरब यात्रा से पहले विदेश मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री और क्राउन प्रिंस के बीच बहुत करीबी व्यक्तिगत संबंध हैं। प्रधानमंत्री मोदी की सऊदी अरब यात्रा पर विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि यह यात्रा इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत के लिए सऊदी अरब एक रणनीतिक साझेदार के रूप में स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है...सऊदी अरब में बहुत बड़ा भारतीय प्रवासी समुदाय रहता है, जो संभवतः दुनिया में अपनी तरह का दूसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है। सऊदी अरब इस्लामी दुनिया में एक अग्रणी आवाज़ है और क्षेत्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

यह यात्रा इस रणनीतिक साझेदार के साथ पहले से ही मजबूत संबंधों को और मजबूत करने का अवसर प्रदान करती है। प्रधानमंत्री

और क्राउन प्रिंस के बीच बहुत करीबी व्यक्तिगत संबंध हैं, जिसमें एक-दूसरे के प्रति बहुत गर्मजोशी और सम्मान है, और द्विपक्षीय संबंधों को सर्वोच्च स्तर पर रणनीतिक मार्गदर्शन से बहुत लाभ हुआ है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि हज का स्वागत भारत और सऊदी अरब के बीच एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय मुद्दा है; यह क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री मोदी के बीच वार्ता का हिस्सा होगा। प्रधानमंत्री अगले सप्ताह 22-23 अप्रैल, 2025 को सऊदी अरब की यात्रा पर जाएँगे। यह यात्रा सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस और प्रधानमंत्री प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान के निमंत्रण पर हो रही है। यह यात्रा सितंबर 2023 में जी-20 शिखर सम्मेलन के अवसर पर महामहिम की भारत यात्रा के बाद हो रही है। यह वह अवसर था जब दोनों देशों के बीच नव-स्थापित रणनीतिक साझेदारी परिषद की पहली बैठक आयोजित की गई थी।

बडे दावों के बीच बदहाल हैं ब्रज के कुंड, सरोवर

● प्रसिद्ध कुंड और सरोवर अतिक्रमण की चपेट में, प्रदूषण भी बडा मुद्दा

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। ब्रज के कुंड सरोवरों को संवारने और सुरम्भ्य बनाने के बडे दावों के बीच सच्चाई यही है कि कुंड सरोवरों की स्थिति ठीक नहीं हैं। तमाम प्रसि; और धार्मिक महत्व के कुंड और सरोवर बदहाल स्थिति में हैं। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का केंद्र, अपने पवित्र कुंडों के लिए प्रसिद्ध है। राधा कुण्ड, गोविंद कुण्ड, श्याम कुण्ड, ललिता कुण्ड, और कुसुम सरोवर जैसे कुंड धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ब्रज वृन्दावन देवालय समिति के प्रतिनिधि मण्डल ने गोस्वामी कृष्णनन्द भट्ट के नेतृत्व में मल्हार कुण्ड और बलदेव कुण्ड का निरीक्षण किया। दोनों कुंडों की स्थिति दयनीय पाई गई। मल्हार कुण्ड गंदगी, कूड़े और अतिक्रमण से घिरा है। जबकि सीवर इसका जल दूषित कर रहा है। बलदेव कुण्ड की हालत भी बदतर है।इन कुंडों का पौराणिक महत्व श्रीकृष्ण की लीलाओं से जुड़ा है। उपेक्षा से धार्मिक भावनाएं आहत होती हैं और पर्यावरण को

ब्रज वृन्दावन देवालय समिति का प्रतिनिधि मण्डल कुंड का अवलोकन करते हुए।

क्षति पहुंचती है। प्रतिनिधि मण्डल, जिसमें पर्यावरणविद आकाश वशिष्ठ शामिल थे। संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने का संकल्प लिया। समिति ने सरकार से बृज के सभी कुंडों का सीमांकन करने और अतिक्रमण रोकने की मांग की। मल्हार और बलदेव कुण्ड की रक्षा के लिए न्यायालय का सहारा लिया जाएगा।।कुंडों का संरक्षण जल संरक्षण, जैव-विविधता और पर्यटन के लिए आवश्यक है। ये कुंड बृज की सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। समाज, सरकार और स्थानीय समुदाय को मिलकर इन्हें पुनर्जनन करना होगा। गोवर्धन के मानसी गंगा, बरसाना का प्रेम सरोवर और अन्य कुंडों की रक्षा से बृज की आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता बरकरार रहेगी। यह समय की मांग है कि इन पवित्र स्थलों को उनकी खोई गरिमा वापस लौटाई जाए। ब्रज के सभी कुंडों का सीमांकन हो प्रतिनिधि मण्डल में वरिष्ठ पर्यावरणविद अधिवक्ता आकाश वशिष्ठ भी शामिल थे। इससे पहले प्रतिनिधि मण्डल ने राल स्थित बलदेव कुण्ड का निरीक्षण भी किया स जिसकी हालत बद से बदतर पाया स दोनों कुंडों की हालत देखकर प्रतिनिधि मण्डल को अत्यंत दुःखी हुए स दोनों ही कुंडों का पौराणिक महत्व है, और ये कृष्ण लीला से संबंधित है स इन कुंडों की दशा से धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचती है स पर्यावरण संरक्षण के लिए भी इन कुंडों को पुनर्जीवित करना अति आवश्यक है स साथ में निर्णय लिया गया कि इन कुंडो संरक्षित करने के लिए हर तरह से प्रयास करेंगे।

नगर परिषद गोपालगंज कार्यालय मे समाजिक कार्यकर्ता स्वश टुन्ना गिरी के प्रतिमा का अनावरण मंत्री द्वारा किया गया

स्वतंत्र प्रभात

गोपालगंज (बिहार)- नगर परिषद कार्यालय परिषर मे समाजिक कार्यकर्ता स्वश चन्द्रवंश गिरी ऊर्फ टुन्ना गिरी के प्रतिमा का अनावरण मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुवे एवं विशिष्ट अतिथि मंत्री सुनील कुमार, जनक राम, सांसद डॉश आलोक कुमार सुमन, विधायक अमरेंद्र कुमार पांडेय ऊर्फ पप्पू पांडेय, नगर परिषद चेयरमैन हरेन्द्र कुमार चौधरी द्वारा संयुक्त रूप से प्रतिमा पर से पर्दा हटाकर किया गया द्य इस अवसर पर उनके नाम पर नगर परिषद द्वारा हजियापुर -मानिकपुर पथ का नामकरण एवं नगर परिषद सभागार का नामकरण भी किया गया सभी कार्यक्रमों मे स्वश टुन्ना गिरी जी के जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उनके ब्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वक्तओ ने चर्चा किया द्य सभी कार्यक्रमों की अध्यक्षता चेयरमैन हरेन्द्र कुमार चौधरी ने किया द्य स्वश चन्द्रवंश गिरी ऊर्फ टुन्ना गिरी जी की स्थापित प्रतिमा पर केंद्रीय राज्य मंत्री

सतीशचंद्र दुवे, बिहार सरकार के मंत्री सुनील कुमार, जनक राम, सांसद डॉश आलोक कुमार सुमन, विधायक अमरेंद्र कुमार पांडेय, कुसुम देवी, पूर्व एम एल सी आदित्य नाथ पांडेय, मुख्य पार्षद हरेन्द्र कुमार चौधरी कार्यपालक पदाधिकारी राहुल धर दुवे, वरिये अधिवक्ता यदुवंश गिरी, डॉश शशिशेखर सिन्हा, जद(यू0) प्रदेश महासचिव सह पूर्व जिला अध्यक्ष प्रमोद कुमार पटेल, वार्ड पार्षद विपुल अग्रवाल, समाजिक कार्यकर्ता संजीव कुमार पिंकी, परमात्मा सिंह, राजू चौबे, चन्द्रमोहन पांडेय, अतुल तिवारी, एजाज आलम, साहेब जाद अली सहित सैकड़ो लोगों ने प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर नमन किया

हाईवे पर हादसे में दो सगी बहनों की जान गई

मथुरा। राष्ट्रीय राजमार्ग 19 पर हादसे कार हादसे का शिकार हो गई। कार में सवार दो सगी बहनों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दंपति की हालत गंभीर है। दोनों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सीओ छाता आशीष शर्मा ने बताया कि दिल्ली से आगरा की ओर से जा रही कार को अज्ञात वाहन टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। ये लोग कार से शादी समारोह से हिस्सा लेकर लौट रहे थे। दिल्ली से आगरा की ओर जा रही कार को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसा मथुरा में राष्ट्रीय राजमार्ग 19 पर कोतवाली छाता के समीप हुई। हादसे में दो सगी बहनों की मौत हो गई। कार में जिला डीग के थाना जनुथर ग्राम नरौली निवासी अनु (14) और प्रिया (12) पुत्रीगण टेक चंद और पति उमेश (32) पुत्र अमर सिंह और पत्नी शिवानी कार में सवार होकर गाजियाबाद शादी में गए थे। वहां से लौटते समय ये हादसा हो गया। मौके पर ही अनु व प्रिया की मौत हो गई। उमेश व शिवारी गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए निजी हॉस्पिटल में भर्ती कराया।

समस्तीपुर में जमीनी विवाद में युवक की पीट-पीट कर हत्या, अक्रोशित ग्रामीणों ने एन एच -28 किया जाम

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर, समस्तीपुर में जमीन विवाद में दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई है. इस खूनी संघर्ष में एक युवक की पीट -पीट कर हत्याकर दी गई है। घटना दलसिंहसराय के पगड़ा गांव की है। मृतक की पहचान अरुण राय के 26 वर्षीय पुत्र मणिकांत राय के रूप में हुई है। घटना के बाद मृतक के परिजनों और ग्रामीणों ने पगड़ा चौक के पास NH-28 को जाम कर यातायात अवरुद्ध कर दिया है। सुचना पर पहुंची पुलिस जाम हटवाने के प्रयास में जुटी है। मिली जानकारी के अनुसार मृतक मणिकांत के पिता का श्रवण राय और अक्षय राय के परिवार से दो धुर जमीन को लेकर विवाद चल रहा था। इसी को लेकर शाम को जब मणिकांत घर पहुंचा, तब पहले से घात लगाए श्रवण राय, अक्षय कुमार और विकास राय ने उस पर हमला कर दिया। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया। वहीं परिजनों को आते देख सभी आरोपी परिवार फरार हो गए।

जिसके बाद परिजनों ने गंभीर रूप से घायल मणिकांत को अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां से उसे समस्तीपुर सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया. इसके बाद परिजन उसे एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां आज उसकी मौत हो गई। घटना के संबंध में मृतक के पिता का कहना है कि उन्होंने कई बार पुलिस को इस तरह की घटना होने की जानकारी दी थी। लेकिन पुलिस ने आरोपियों पर कोई कार्रवाई नहीं की। बताया गया है कि दो महीने पहले ही मणिकांत की शादी हुई थी। वह घर का एकमात्र कमाने वाला

व्यक्ति था। मौत की खबर सुनते ही मृतक के परिजनों और ग्रामीणों ने पगड़ा चौक के पास हा-28 को जाम कर दिया। दलसिंहसराय थाना प्रभारी पुष्पलता ने बताया कि इस घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस को मौके पर भेजा गया है। पुलिस पुरे मामले की जांच कर रही है और जाम हटवाने का प्रयास कर रही है।

धर्मेन्द्र के मौत के मामले में मृतक युवक की मां ने चार के खिलाफ दी तहरीर, कार्रवाई की मांग

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। त्रिलोकपुर थाना क्षेत्र के सेमरी गांव निवासी धर्मेंद्र (28) पुत्र ढ़ल्लू का शव गुरुवार की देर शाम करीब घर के कमरे के छत की कुंडे से संदिग्ध परिस्थितियों में लटकती मिली थी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्ट करा कर शुक्रवार को देर शाम परिजनों को अंतिम संस्कार के लिए सौंप दिया।शनिवार को आए पोस्टमार्टम रिपोर्ट में धर्मेंद्र के मौत का कारण हैंगिंग आया है,साथ ही शरीर पर कोई चोट आदि के निशान भी नही मिला।मृतक धर्मेंद्र की मां पार्वती ने त्रिलोकपुर पुलिस को तहरीर देकर गांव के चार लोगों पर धर्मेंद्र के साथ तू तू मैं मैं व गाली गलौज का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की है। पार्वती ने त्रिलोकपुर पुलिस को दिए अपने तहरीर में बताया है कि हमारे पड़ोसी से बात विवाद हो रहा था,इसी बीच गांव के अन्य लोग आकर घर पर गाली गलौज करते हुए जाति सूचक शब्दो का उपयोग करते हुए मार पीट पर आमादा हो गए,और जान से मारने की धमकी देने लगे।धमकी से डरा सहमा हमारा लड़का घर के कमरे में गया और छत के कुंडे में साड़ी का फंदा डाल फांसी लगा लिया, जिससे उसकी मौत हो गई। इस संबध में प्रभारी

निरीक्षक मृत्युंजय पाठक ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हैंगिग आया है, जांच की जा रही है,जांच के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सुरीर पुलिस ने तीन लोगों को जुआ खेलने के आरोप में पकडा

मथुरा। थाना सुरीर पुलिस ने तीन लोगों को जुआ खेलने के आरोप में गिरफ्तार किया है। इनके पास से 1030 पुलिस ने बरामद किये हैं। प्रताप भट्टे के सामने खाली पडी दुकान से पुलिस ने लालचन्द पुत्र अकाली निवासी परसौतीगढी थाना सुरीर, ज्ञान पुत्र मान सिह निवासी नंगला बरी थाना सुरीर तथा विकास पुत्र विजयपाल निवासी सुरीर कंला थाना सुरीर को पकडा।

भाकियू अराजनैतिक ने तीन बिजलीघर पर की तालाबंदी

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। भाकियू अराजनैतिक ने बलदेव, बरौली, मढ़ौरा बिजलीघर पर तालाबंदी कर रोष व्यक्त किया। बिजली कटौती से किसानों व ग्रामीणों में आक्रोश व्याप्त है। भाकियू अराजनैतिक मंडल अध्यक्ष राजकुमार तोमर के नेतृत्व में तीनों बिजलीघरों पर तालाबंदी की गई। जमकर बिजली कटौती को लेकर नारेबाजी हुई। बिजली विभाग के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया गया। इस दौरान तीनों बिजलीघरों पर तालाबंदी कर दी गई। बिजली विभाग के अधिकारियों ने वार्ता कर समस्या समाधान के लिए सोमवार तक का समय मांगा गया। इस पर धरना प्रदर्शन सोमवार तक स्थगित कर दिया गया। राजकुमार तोमर ने कहा बिजली कटौती से किसानों व ग्रामीणों को बहुत मुश्किल हो रहीं हैं। कहीं कोई सुनवाई नहीं हो

रहीं हैं। बिजली विभाग के अधिकारी मस्त है जनता त्रस्त है। बार बार बिजली कटौती होने से जनता परेशान हैं। इन्वर्टर मोबाइल फेल हो रहें हैं। पीने का पानी भी नहीं मिल रहा है। अधिकारी फोन तक नहीं उठाते हैं। सीधे मुंह बात नहीं करते हैं। इस दौरान उदयवीर सरपंच, मुकेश रावत, डा संदीप छौंकर, अवधेश रावत, तिलक उपाध्याय, धर्मवीर सिंह, सोबरन सिंह पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित आदि थे।

5- एस.ई.सी.एल. में नोटिस दी वसूली वास्ते गलत मुआवजा राषि का खुला पर्दा

● निशुल्क नेत्र एवं स्वास्थ्य जागरूकता शिविर सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

सोहागपुर एरिया के रामपुर मेघा प्रोजेक्ट में ली जमीन अधिग्रहण के साथ पेड़ पौधों का मुआवजा राषि कोल इंडिया कम्पनी एस.ई.सी.एल. ने दी है जिसमें रामपुर निवासी में जो पेड़ पौधों में यूकेलिप्टस के पौधों का मुआवजा लेने के लिए जिस जमीन खसरा नं. का उपयोग किया उसकी जॉच एस.ई.सी.एल. सोहागपुर एरिया के सर्वे विभाग की टीम में फारेस्ट विभाग का अमला एवं रामपुर मैनेजर उपक्षेत्रीय प्रबंधक के साथ राजस्व विभाग ने संघन जॉच कर 1.34 करोड़ रू. मुआवजा चतुर्वेदी परिवार को दिया गया था, जिसमें गांव के कई नागरिको ने विस्तार से मय दस्तावेज के साथ बताया था कि खसरा नं. रकवा में जो यूकेलिप्टस के पेड़ों का मुआवजा हुआ है, पूर्णतः गलत है, इस जानकारी पर जनता दल यू किसान सभा के प्रदेष अध्यक्ष, पूर्व भाजस अध्यक्ष विधायक दल नेता निजी सचिव बी.पी. तिवारी ने लिखित षिकायत एस.ईसी.एल. के सी.एम.डी. के साथ प्रधानमंत्री कोयला मंत्री एवं सी.बी.आई. को लिखित षिकायत की थी, जिसमें वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी में भौतिक सत्यापन के साथ हर खसरा रकवा में विन्दुवार जॉच होने पर पाया गया कि किसान संतोष कुमार रामनिवास विद्याबाई देवीदीन ग्रम रामपुर ने गलत दस्तावेज का सहारा लेकर गलत मुआवजा राषि ली है।

जॉच होने के बाद करोड़ों की राषि वापस लेने के लिए एस.ई.सी.एल. सोहागपुर ने नोटिस पत्र क्रमांक 3126 दिनांक 22.08.2023 को रामपुर निवासी संतोष कुमार रामनिवास पिता देवीदीन विद्या बाई रामपुर को मुआवजा राषि वापस करने के लिए लगातार दो पत्र दिए जिसका क्रमांक एस.ई.सी.एल. सोहागपुरध्बटुराध्23ध्2752 दिनांक 26.07.2023 रजिस्टर्ड पो. क्रमांक व्ही.आर.8273644061101 दिनांक 27.07.2023 एवं एस.ई.सी.एल. सोहागपुरध्बटुराध्23ध्2862 दिनांक 08.08.2023 रजिस्टर्ड पोस्ट क्रमांक व्ही.आर.ध्8277643866350 दिनांक 09.08.2023 मुआवजा राषि में खसरा क्रमांक 2490,12454, 2456, 2467,

2458, 2461, 2462, 2463, 2464, 2587, 24551, 2555, 2468, 2469, 2470, 24711, 2476, 2722 2, 2723 को मौके में जॉच दिनांक 02.08.2023 को दोपहर 12.30 बजे से राजस्व निरीक्षक रा.नि.मं. बुढ़ार तहसील द्वारा पूरे पेड़ों की गिनती की गई, जिस पर मौका पंचनामा दर्षाया गया, एक भी यूकेलिप्टस पेड़ नही पाए गए है।, जिससे 1,14,54000रू. को वापस एस.ई.सी.एल. सोहागपुर के खाते में पैसा शीघ्र वापस किया जाए, पर 4 माह गुजर गया अभी तक वापस पैसा नही होने पर क्षेत्र के वरिष्ठ श्रमिक नेता बी.पी. तिवारी ने पुनः सी.एम.डी. पी.एम.ओं. कोल मंत्रालय को पत्र लिखकर लिप्त एसईसीएल अधिकारियों से राषि वसूली जाए, एवं दोषी किसान के उपर पुलिस प्रकरण कायम कर शीघ्र कार्यवाही की मांग की गई है।

रजिस्टर फाड़ने का मामला बीईओ के लिए बना गले की फांस

● बीएसए के बाद सीडीओ ने इस प्रकरण को लिया गंभीरता से

अब हो सकती है बीईओ के विरूद्ध एफआईआर, दी बीएसए ने चेतावनी

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। कार्यालय खण्ड शिक्षा अधिकारी (बीईओ) नंदगांव में रक्षित उपस्थित पंजिका, जिस पर निलम्बित शिक्षक, शिक्षिकाओं की उपस्थिति दर्ज की जाती है, को किसी के द्वारा कार्यालय में आकर फाड़ दिया गया था। जिसकी उत्तरदाई तय नहीं करने व दोषियों के विरूद्ध एफआईआर दर्ज नहीं करना उक्त बीईओ को मंहगा पड़ गया है। इस प्रकरण को बीएसए के बाद अब मुख्य विकास अधिकारी मनीष मीना ने गंभीरता से लिया है। सीडीओ द्वारा खंड शिक्षा अधिकारी (बीईओ) नंदगांव कैलाश प्रसाद शुक्ल को प्रतिकूल प्रविष्टि प्रदान करने के साथ साथ बीएसए द्वारा उपरोक्त प्रकरण में रोके गए वेतन को तब तक बहाल न करने के निर्देश दिए हैं। जब तक खण्ड शिक्षा अधिकारी, नंदगांव द्वारा उक्त उपस्थिति पंजिका के रख-रखाव हेतु उत्तरदायी लिपिक, कार्यालय सहायक से पुछताछ कर उक्त उपस्थिति पंजिका फाड़ने वाले व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं करा दी जाती। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा बीएसए मथुरा को खंड शिक्षा अधिकारी नंदगांव कैलाश प्रसाद शुक्ल तथा उपस्थिति पंजिका के रख रखाव हेतु उत्तरदायी लिपिक, कार्यालय सहायक के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराए जाने के निर्देश दिए गए थे। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त ने बीईओ को प्रतिकूल प्रविष्टि प्रदान करते हुए निर्देशित किया है कि ब्लॉक संसाधन केन्द्र, नंदगांव में रक्षित उक्त उपस्थिति पंजिका, जिस पर निलम्बित शिक्षक

शिक्षिकाओं की उपस्थिति दर्ज की जाती है, के रख रखाव हेतु उत्तदायी लिपिक, कार्यालय कर्मचारी से पूछ ताछ कर उपस्थिति पंजिका फाड़ने वाले व्यक्ति के विरूद्ध तत्काल एफआईआर दर्ज करा कृत कार्यवाही से बीएसए को अवगत कराए एवं एफआईआर की छायाप्रति भी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। कृत कार्यवाही से अवगत न कराए जाने, एफआईआर की प्रति उपलब्ध न कराए जाने की स्थिति में अधोहस्ताक्षरी को विवश होकर आपके विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराए जाने की कार्यवाही अमल में लायी जाएगी।

जिला पदाधिकारी प्रशांत कुमार सी एच के निर्देश पर 24 घंटे में सड़क मरम्मती कार्य हुआ पूरा

● एनएच-531 पर सड़क धंसने की घटना पर जिला पदाधिकारी ने लिया त्वरित संज्ञान

स्वतंत्र प्रभात

गोपालगंज (बिहार)- एन एच 531 पर सड़क धंसने की घटना पर जिला पदाधिकारी ने लिया त्वरित संज्ञान प्रोजेक्ट डायरेक्टर ने सुचारू यातायात व्यवस्था पुनः बहाल होने की पुष्टि गोपालगंज-सीवान राष्ट्रीय राजमार्ग (NH-531) पर सदर प्रखंड अंतर्गत बंजारी से आगे तकिया याकूब के पास स्थित रेलवे ओवरब्रिज के समीप सड़क के एक हिस्से में धंसाव की सूचना प्राप्त होते ही जिला पदाधिकारी, गोपालगंज द्वारा 17 अप्रैल को

तत्काल संज्ञान लेते हुए मरम्मती कार्य हेतु निर्देशित किया गया।

जिला पदाधिकारी प्रशांत कुमार सी एच के निर्देश पर प्रोजेक्ट डायरेक्टर, PIU छपरा, राजू कुमार द्वारा सूचित किया गया कि 18 अप्रैल को क्षतिग्रस्त भाग की मरम्मती कार्य त्वरित रूप से मिशन मोड में पूर्ण कर दिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि उक्त धंसाव की घटना बारिश के कारण सड़क किनारे कटाव से हुई थी। राहगीरों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते

हुए प्रशासन द्वारा तत्क्षण बैरीकेडिंग कराई गई, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा अथवा दुर्घटना की आशंका नहीं रही। वर्तमान में NH-531 पर यातायात पूरी तरह सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। जिला प्रशासन द्वारा लिए गए त्वरित निर्णय, समन्वय एवं क्रियान्वयन की प्रतिबद्धता के फलस्वरूप यह सुनिश्चित किया गया कि आमजन को न्यूनतम असुविधा हो और सड़कों की गुणवत्ता बहाल रहे।

समस्तीपुर में आपसी रंजिश में एसिड से हमला! एक महिला समेत चार लोग जख्मी, पुलिस जांच में जुटी

समस्तीपुर के सरायरंजन में आपसी रंजिश को लेकर दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। इस दौरान एक पक्ष ने दूसरे पक्ष पर एसिड से हमला कर दिया। जिसमें एक महिला समेत चार लोग जख्मी हो गए। सभी जख्मी लोगों को गंभीर हालत में सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। मामला जिले के सरायरंजन थाना क्षेत्र के भगवतपुर पंचायत के वार्ड- 6 का है।घटना की सूचना मिलते ही सदर डीएसपी संजय कुमार पांडे नगर थाना अध्यक्ष शिव कुमार यादव के साथ सदर अस्पताल के आपातकालीन वार्ड पहुंचे और इस हमले में जख्मी लोगों से घटना के बारे में पूछताछ की। इस दौरान एएसपी संजय पांडे ने कहा कि एक महिला समेत अन्य लोगों पर एसिड से हमला और लाठी-डंडे से मारपीट भी की गई है। केस उठाने के लिए धमकी दी जा रही थी। पूरे मामले की जांच की जा रही है। इस मामले संलिप्त आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

घटना के संबंध में पीड़ित महिला ने बताया कि आज मैं घर के पीछे शौच के लिए गई थी, तभी आरोपियों ने मेरे साथ मारपीट की। जब मैंने विरोध किया तो उनलोगों ने मुझ पर एसिड फेंक दिया। जिसके बाद मेरे चिल्लाने की आवाज पर मेरे परिवार के लोग दौड़कर आए। इस दौरान बीच-बचाव में आए मेरे पति और परिवार के अन्य लोगों पर भी हमला किया। इस हमले में चलित्तर दास (70), बालेश्वर दास (60), सुरेश दास (40) एवं बबीता देवी (35) गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद जुटे स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को सरायरंजन सीएचसी में भर्ती कराया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद चलित्तर दास एवं उनके पुत्र सुरेश दास को बेहतर इलाज के लिए समस्तीपुर सदर

अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां सभी का इलाज चल रहा है। बताया गया है कि कुछ साल पहले मोतीलाल का बेटे चंदन, मुन्ना कुमार और धर्मेंद्र ने घर में घुसकर पीड़ित महिला के साथ मारपीट की थी। इस मामले में सरायरंजन थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई गयी थी। फिलहाल मामला कोर्ट में चल रहा है। इसी मामले में कंप्रोमाइज के लिए वे लोग दबाव बना रहे थे। एक सप्ताह पहले भी केस उठाने के लिए धमकी दी थी। इसी को लेकर आरोपियों ने इस घटना को अंजाम दिया है।